MSS No. 344 Subject Religion

Name of MSS सुदामा चिरत

Author हृदयराम

Period Folios 152

Script Devnagiri Source Prithipal Singh

Missing Folios 55, 114, 115, 116

Hindi Ms. 8 H I		
8343		सुदामा चरित असं० पत्रक ॥ ल० अ० १८ पं० ५० पृ०
344		
		ह० लि०

श्री लाल जी सहाइ ॥

। गं ऊ फु पा ठ ॥ आदु

। स्री स्या जा तस्री विचि
घत णा निकां गिलचाक
र घत णेपा घित नालि
मषि घत णें लिहि घोडेदी
लिखिआ जाने वेमरी बहि
बहि पूरण स्री स्या जादु है
ठि आदु अंते दिन है • पूरा रके

① A. no. 344

सर्वसंरषकविलोनी॥ [illegible]मांन
दकेप के [illegible]कमलश्रगजा [illegible]शिवि
चि कारीकमिकाक्षिकोसिमारी॥
त्राक्षीमुसक [illegible] निमंद कें [illegible]
केप्रलांनंदस्न ल्तासोम्र बिषेलो
गीश्रामघोसनंदकें ॥१॥ दू॥ राग
बसंत॥ [illegible]लतिहरि बनिठनिरि
तिबसंत संगसषासुलगबागेब
नंत [illegible]कमघनस्मारंगु [illegible]बजांत
चोत्राचंदनघसिसरिकेंल।
तंतीबितंतघनसुरीजंत्र। [illegible]
ननकुरषनसदननंजा॥२॥ [illegible]
निनिकसीबुजिकीकुमारि॥ पदिवे
अलरतिनवपतसी [illegible]ति॥ बनीप
केतंपकल्पनूपचारुबिरि [illegible] नोमानो
[illegible]कुमकीकारु॥२॥ [illegible]ति [illegible]

नागरी नवीनि । अति सुघर सागर गि
रधर प्रवीनि । लई लैंटि परसपर नि
रि गुलाल पिचिकारी लरगति छिरस
ति जो पाल ॥३॥ स्यामा घन स्याम
संग दे जाइ । मुरली पीतांबर लीयौ छि
नाइ । फगुआ दीनौं नरिकन कपोल
टरुकन ग्वाल रसिक श्री नंदलाल ॥४॥
॥ कल्यान राग ॥ निरखति आई होरी
खेल माई है लति फाग बरनी न जा ति
ति काई । अरगजे लीगे बागे कुंकुम कि
बिंदु लागे अंग अंग दे पीय ति चंदन
खोरि बनाई । गोपन पिचिकारी लरति
स्यामा जी के सीस ठरति [illegible] सुरंग
लाग अनुराग बधाई । टरुकन ग्वाल नं
द लाल दपति की छवि बिसाल ला
[illegible]

(२)

जागेनमोवेषाइ

तणीक्रान:जतस

रीरबिनसुपदेह

बी:जाकलकलाक्रन

तिस.तिकाकेसाषी॥

धणि वंघोगुको

नागरीनवीनि। रति प

रखरग्रवीनि। लई लै नपयसो न त॥मं

रिगुलाल पिचिका लजूपर॥कूदील

तिजापाल॥३॥म पर्य या॥ग्रहि.प नि

संगदेजाइ। मुर वजूपरि॥कूल सं

नाइ। कर अ न कुल गूंज त॥कइ

टल्कनग न बाजत नूपर॥पर

॥कल्यान मोलो म न चितवन॥

धेकन सी सुं हरि जावरनमूपर

नि॥१॥

राग कल्याण ॥ मोतिनि के सरि
ताग आगें निर्तति उगत्त किशो
र किशोरी। षेलत फागु ब जो झ
नु राग बजवति गावति बातें ब
नावति उघटति होरी होरी। उमति
गुलाल पिचकार निखरि छिरक
ति रसिक लाल तन गोरी। टहका नि
प्रत नंद लाल उजागर नट नाग
र छवि कहतिन बनि आवे क्रीडति
कुंजन षोरी ॥१५॥ राग नट ॥ रसि
फागु मच्यो नंद पौर सषी हरि षेल
ति सुध्रें नज्विरि। उमति गुलाल
अरगजा केसर छिरकति पिचका
रनि तरिनरि। बाजें चंग उपंग मृदं
ग बेनु दफ लतकति ले रि बांसु
बरि। गावति मन ना वति धमा

लिलि ग्रमुदितिमि...करतिगि...रि
लागिबे...मिमदनम...भटिमि...बिट्ठति
करिनासकतिग्राकीमनमरि...टेइक
नतनुमनुभ्रुवारतिमलनंदलाल...
कीयाछविपरि ॥ र ॥ रागबसंत ॥
स्यामसुलगतन ओ लितछीटेनीकी
लागीचंदनकी ॥ मंकिपसुरंग ओ बी
रकुंकुमा अरसदे मरजबंदनव
कुंतनदासमदनतनमनबालहारी
कीयोंनंदनंदनकी ॥ गिरधरलाल
रचीबिधिमानोजुवतीजनमनफंदन
की ॥ रागबसंत ॥ नवलबिहारीप्या
रीकेसंगबसंतषेलतबिंदाबनमैं
केसरिमोंअंगीगाकुमकुमसषीनी
गिरस्यालदेषीयततनमैं उरिगि
रीपीयकेसंगिलागिनि...लसत

कैसै[illegible]मिति[illegible]। व्यास स्वामि
नी[illegible]बिनी की प्रीति विं[illegible]त मोह
नेक्षान न भे ॥२२॥ राग बसंत ॥
अरुन उदै फुनि आवन की नोतित
लीजाह्न जहांउर जै नैना। अति आ
लसांति डुलांति उनी दे बोलत म
धुरे मधुरे बैना। सर्व अंग गगुनल प
न पूरी है का ऊ अंसी मूरत में नैना। प
द न धन प्रान गुन रस सागर सु बार
ष न ईलगन मुष चैना ॥२३॥ राग
कल्यान ॥ कैं या मोहि जाने पहिचा
ने नैनो लागे नीके। रूप रीझि रसनी
गे देषत पीय कें पागे नीकें। चित रति उ
ति डुडि छिपाइ यति जो लाइ प्यारी के
लाइ धजनी के। जगन नाथ क वि रा
इ के प्रल क हा क हा प चूप क गिरह
गुरठ र नी के ॥२४॥ राग कल्यान ॥

५

तलपर चित ज्यों लौं [illegible] मि
पलैं न गए। तौलौं स्याम जो कौन
लित ताले आई। जब पीया न हि
देषत बिस कुच तई आपं ते व क्र
तनैं न चौदि सिमि मिति उलटो होय
जाई तब जान्यो मन नमान्यो मुरली
जब पाई। जब पीय आवत देषि
कुंज ओट है दुरी नी अधर धरै मधुर
धुर तान निसाई। सूरदास मदन मो
हन मंत्र मोह चित वत हरि कौं है
औं सो जि नि मेरी मुरली बजाई॥२५॥
राग कल्यान॥ बरन बरन बादर मन
हि रत दिकर ना। काम धाम तें नि स
तली मोहि कै सी लागे। स्याम घन
म धित दै न धिदा मुनि नामु नी राज

तलाइ कै पुरि ज्ञात कबहूं प्रग
टहोत अरु नलप नैं नामा नौ नि
सि कें जागे। बीचि बीचि पीत बस
न रंड बनषमु कटजलक मंद मंद
गरजइ मन पीय संगि अनुरागे।
सूरदास मदन मोहन पीय की उ
पमा चाहत गावति कबि छबि बि
रनि ते ऊब रत्ता गे ॥२६॥ राग क
ल्यान॥ जलधर दुरि मद्धि मांझ आ
वत गगन के मांझ लकछनी
सुरंग दुति अनंग लाजे। बन माल
गुंज दाम अवतंक कमल छवि बिचित्र
मनमोहन सुर नर षग मृग मुरली मधु
बाजै। तन व्याकुल गोप बाल बीत
ति पल जुग समान निदेरि पारि हारी
सुधि बिसरत ब्रज राजे। ढहकन प्रगट

पाग्वार मुष उघटे तिन्ह तिन्ह भाग
उरपति रपि निर्शते हरि नटवर व
पाडे ॥१७॥ राग कल्यान ॥ दोउ
मूल त रंग हिंकोरे सोनास्पामतन
गोरे नील पीरे प्यारे पवन गवनं तें मं
वति सौं धे कीज कोरे ॥ मन मन्मरु तन
तोरें नैन निसं नैन जोरें बारि मारे
प्रान याछवि तन ज्यों तोरें । सूरदा
स मदन मोहन चित चोरें मुरलीकी
धुनि सुनि सुर बधू सी मटोरे ॥१८॥
राग पूरबी ॥ चलीपने कुंके तत कोदे
षनर च्यार सुमं मल साधें हूं । स्राई
स लैन । मृगमद घसि अंकित्ला
(मु कट का छिनी बनाइ मुरली पी
बराजत । याछबि सो पै कलीन
नाइ । नाल मृदंग बजा वत गावत

[illegible] ह्रि मैन। मरद
नमदन मोहन रूप सति बैलधति
पाउ धारियो जो सुषदीयो चाहे
नैन ॥१९॥ राग पूरबी ॥ देषो मा
ईनमनलीनं ज्ञात कहिन सकति
बात नाउ न जानौं वां को सांव
रो सुगात। मोरपंष सो सिदीपंस
बांसबंसीगिल्लीयां बैन बजावेगा
वे धेन च[illegible]ग हितग रस्या न
जाग संगि कैं चलीरी धाम सुरली
मैकहूकरि गयो अबिलौ आग
निआत। आन मों प्रान निला:
जै नन मों करति बात अमनायलि
कीना परदेष्यो जो लोजै तीदास ॥२०॥
राग पूरबी ॥ मेरे ता जीयमे बसत नव
[illegible]
कतीयअबमोन [illegible]

रसका गारंग उपजाति ॥ नृ[illegible]जीनिक
स्यालैं हारी ॥ तूं ही जीवन तें लोचन
तूं ही सकल गुनि निधान तेरी समानि
अवरु नाहि मेरें हित कारी ॥ व्यास
की स्वामिनि तेरी मया तें पायें है नाम
बिहारी ॥ ३१ ॥ राग पूरबी ॥ बेने बैके
आषी अनि सावरो ढाढा आति लोंना
अब हीतें मन मथ मन तो[illegible] आगे आ
जहूं लैं ना ॥ कहारी करें अंग[illegible]अंग कौ
नि कोई नष सिष मं[illegible]मठौं ना ॥ स्य
दास प्र न मदन मोहन की चितवनि
मैं कहूं हौं ना ॥ ३२ ॥ राग पूरबी ॥ कुंक
ल लोल कपोल निहारनि मकर के
लोल सुधा सर मलीया ॥ मुरली स्व
रकुं गांत मधुर तान नि गावै बजावै
रागरंग उपजावै त्रि तंजी हार निरतिति:
कदमकी छहीया ॥ बार हा तानि रिंद

[illegible]ति बेसरि नासिका
केयूर बलीया। कौस्तत कंठि रा
जे भृकुंघटि कीटि राजे टहकनि
फूलनंदलाल ऊन नना टजलीया:
॥३३॥ राग पूरबी॥ अरधराति जबि
आई कुंजे पेपुं जे रैन मो हि देषी मैं।
जान्यो न यो पुरुष है। मित्र करन नैं
नारी कें जनु री लागे मन मुष डो
प्रफुलति जो लई तेरो बदन कम
ल जो दरद है। जबि हरि सों तूं मि
ननुष आंनदत रिलरिली पंग हग
है। सूरदास प्रत मदन मोहन प्रफु
लति जो ऊंछतपं तेरो जोबन लता ला
लहै ॥३४॥ राग पूरबी॥ पाकें ललि
आवे कमाजें स्याम प्यारी तिहि क्रागें
पीक मनाग फूल बिछावत जात॥

कठनुकलीबीनि... ...निचकारी
रीप्यारीकेंचरनकूमलजोनिकेम
कुचतचितगमबेतेंमरात।दीर्घः
त्वताअपनेकरसोंनिरवारतकुन
पल्लवपातपाछेंकरमारतसीसिन
लावतिडमपल्लवपात।सूरदासमद
नमोहनपीपकीछबिअधीनतादे
षतनैंनसिरात ॥२५॥रागहरबी॥
रसरससरासनिरतेंतहरिसंगिसुकति
जेरि।मकलीकोपबीचिबीचिनेसु
धस्यातेई।बाजतघनतंत।बितंतसु
रलीसुरसेई।नाचितबजिनारिके
घटितनायेस्येरि।जेंकुकुत्नासिग
बिलासचतुरकाछिकछेई।चपित
नपचंदजनुनअननपगनेंपदई।थों
धीकेमननटिनागरनमुतिजातिकेदे

म्रुनसुनिउनुकहतिपवपवपरी
॥३८॥ राग किदारा ॥ चलीएकूंम्र
रकान्हासषीत्तेषुधारी॥ जैतंदुठतजे
प्रानप्यारीपसोइजितनुबिचारीने
हनसोइजितनुबिचारी॥ बातहूं
बनाइकही जे तीनतिमेरी॥ मकहूं
नमानेल्लाल्लाकेसीप्रिम्मातेरी॥ त
होछिनिमोहनप्यारेसषीत्तेषुकी
नें॥ लूषनबसनसाजिबीनाक
रिलीनें॥ दूरितेंम्रावतदेषीचक
तिनिहारी॥ कौंनगांउबासातेरो
रूपउजिम्मारी॥ करसोंकरजोरिवैं
निकरिबैठायो॥ ससम्चरबंधानः
सोलपुबःजायो॥ रीजिमोतिनरु
च्चारउरिपहिरायो॥ हमरोठोंलो
ल्लीकैसेनीबजायो॥ जोत्त्कु

दोइ तेरी मोर्‌ सौं गिली जे मगहे दौर सा
वरे मों माहु न कीजे ॥ इत नौ त्रस गि गये
मपी तिहि दीनी ॥ धारी बलि हारी मोइन नया
इसंग लीनी ॥ २७ ॥ राग किदारा ॥ पव
लि बांधी लपिटी मोहन मोर न छूटे पीत्र
के पान न छूटे ॥ अपने व्याद्दि विधि बर
नबै हौं करि के कनचारि । बिचारि । हसि
हसि के मिस कसि गंठि बनावति नव
लनि पुन भजि नारि । बहे हों त बिछो
डी या तुम सु नो गोप केरा ॥ केबल छूटे
अपुनि नाही जसमति माइ बुलाइ ॥
लः न हाइ गिरि को धरि बो तुम सुनो कु
अर गोपी नाथ । बरे कहा वति आप कों
काहे कं पन लगो हाथ ॥ कं तितन करी
ति मनहार सबीरी तुम जा नो अधिका सि
ना : छोरनु देहु कुअर कों कं कन के बा
लीहे इबरानी ॥ सुइति सिपलक प

सबहरिनीनीकोछोरिसंनारि॥कि
तकतिकहे सषीस्यामाकोंछोरै
मतिसोकुंआरि॥कवलकवल
करिबरनहेंपदपानपीयाकेल
लःअबिकविकुलमांचेलपलप
हठीलेलाल॥लीलालललितमुकं
दकोतुमरसिकरसिकंकरोपानः
जुगजुगराजुकरोहंदावनजोरीब
लिकल्यान॥२८॥रागकिदारा॥
चांदुलागोदुषदैनपीयाबिनुचांदु
लागोदुषदैन॥कहावहस्यामक
हावहबांसुरीकहावहमुषकारै
न॥घटिगईरैनपीयअजहूनआ
यकितलगादोऊनैन॥स्यामस
तबेगदरसुदीजेहंदाबनसुषदै
न॥रागकिदारा॥हरितेरोलजनुकी
॥२९॥

योनजार॥जादिनितेंदेषे

तैं कछू कछु मनु (?) रा (?) ... राग ...
गि मल्ल ताबकु तु गे ... नाहि ।
नदु यालौन कारनि बहु बिधि मा
ग दिषाइ ।। हि स्यापर ... नु लेषु धरि
रि कैं साध साध करहु ।। सूर के प्र
स बल मायालौ ती नहुर बहु ।। ४० ।।
राग किदारा ।। देषिदे षिजी वा सषी ।
लाल रंगीलौ देषिदे षिजी वा ।। चलु स
षी तेरे ... पाइ लगत हो नंद को नंदन
सषी छैल छबीलौ ।। नवल कुआर
नवरंग ... नई नई बातिन वल
नई लौ ।। ... जो वरधनधा
रीलाल नवल कुआर रिपद लन ...
लो ।। ४१ ।। राग किदारा ।। राधिका ...
आनंद ... राधिका आजु ...
लपट कनक रतना वलि आर सौकर
... गोविंद चं

के सा नी सी को किल्ला कुंज मै
[illegible] ले ।। बनित सौलाट बनी नवल
नागरी कह्न के सौल्न की गांठि कों
खोले ।।४१।। राग किदारा ।। कुंजन
वन मैं मंगल होरी ।। कुसुलादल कुस
मन की सज्या तापरि बिथुरी पीत पिछो
री ।। पहीम नोर्य मैं रंजी यमैं मृत कल्या
न पोले मुष जोरी ।। सबी सी ताट ठो थि
लोरसी यों क्रीड़ा करतैं कि शोर किशो
री ।। राग किदारा ।। दोऊ फूल बनावत
४२ री आज दोऊ फूल बनावें ।। कुंजन वन
मैं बैठी है जोरी राग किदारा गावें । ले
ती है मान न्यारे न्यारे रीझि परसपरसी भि
री जावें ।। हरिनारायन स्यामदासी के
धन कों पीय औ घटि तान मिलावें ।।४४
राग किदारा ।। मुरली बाजे बन मों हरि रा
सरको मार्गी [illegible] हरि राम रच्यो ।।

कुंजपुंजनद्रुमबेलिप्रफुल्लितकंचनम
दिरमनिनिषच्यो॥श्रीजमुनापुलि
नसुतजटूंदाबनआजुनीकेराग:
किदारोमच्यो॥हरिदासकेस्वामी
स्यामाकुंजबिहारी:आजुनीकेंश्री
गुपालुनच्यो॥५५॥रागकिदारा॥
आयेहैरघुनाथसषीपतिजोरुमारे
आगबिस्वामित्रपाछेंलछमननला
र॥आतईधनिकटिगअतिश्रीकु
आरे:मानोअतिसिंघछोनागाज
नीबिमारे॥जैजैबोलोजानुकीजी
तीमाललेआवे॥अंगअंगफूलीसी
ताउमगिनमावे॥रामसीताब्याहुल
योतीनलोकजान्यो॥तुलसीदासके
प्रनुसबहीमनुमान्यो॥५६॥रागनारू
रघुपतिकोआवैसोजानकी:कोर

पुंबरकोंचेरो।। बीरोदेरघुनाथप
ठायो सुधिकरनकौं तेरो।। दससिरअ
त्राठपपंगि बनचरचारुतहैग
ढ़ः घेरो।। सूरदास प्रभु तुमरे मिलन
कौं निकट दीयो है मेरो ।।रागमारू।।
कूद्यो हनुमान उदधि जानुकी सुधि
लैंन कौं।। देषनि दसमाथि अपुने ना
यकौं सुषु दैंन कौं।। जिहि गिरि पारि
चढ़ि कुल्लाचि दीनी उतिछैं तां।। सो गि
रि दसि जोजन धसि गयो धरनि में ता
धरनी धसि गई पयाल ला रुपरो जागेपो।।
सेषजी कौं सीस जारू कमठपीठि लागैं
अरुन बदन तेज मदन बरन पीति गा
ति है।। उत्तर तें दछन नाभो मेरु उपो जा
ति है।। श्रीरामचंद्र पद प्रताप जगमग
नीय जाकौं।। नंददास प्रभु तिनि कैं।

न के सूलि तां के ॥४८॥ रागु गउड़ी ॥ छि
मन मम ती मारी साधो अबि मन मन मा
री ॥ सहजि मुन्ता म्हवडि आ गगनंतरि आ
दि समाधि बिचारी ॥ अलख ना अलख
त्तदि वाना सहजि मुंन बैरागी ॥ सीत उ
स्न दुष सुष सम जाने लोग बेद गति त्या
गी ॥ सर्व गी सर्व ग आ त्या अनल य अच
लु पाया ॥ कान्हं र सिया हरि सबे ध्याक
हैं तें कहनु न आया ॥४९॥ रागु मारू ॥ अक
लक ला जिनि के गमु न भया ॥ पहिलै बलु सं
डिनि का ग या ॥ बुधि ते जु बिमल लई माया
मति सति आतम परचा पाया ॥ आतम परचे
लया बिस्वासी ॥ निज रस रूा न काया प्रका
सी ॥ निज रस ज्ञा न बुझि तें जानु ॥ हरि राती
मैं न या हिरानु ॥ अति हिरा नु [illegible] मैं कछु
या ॥ बिसमु भयो कछु कहनु न आयो ॥ बेपा
कहीं बल्दर बां वरी चाल ॥ कान्ह बूहा गी
लया निहाल ॥५०॥ रागु मारू ॥ बहु

हीज्या उवृंदाबनचंद। बिहारीलाल
ना॥ तूमेरीजीवननंदकेनंद। बिहारील
लादुल्है॥ कहाकरोंघरिजाइकैजोहम
रीजीयजाइ॥ आनपयांनोंछाकितनुच
लिरहेअधरपरिआइ॥ ऊधोजीएकुसंदे
सोजाहिकहीयोज्ञानअधार॥ ज्यौंज
लबिनमीनतरफतरहें: हउतुम्हिबिनु
नंदकुंआर॥ तैंबानजोमारतनमेंजि
कसिगएउरिजेरि॥ घाइलज्यंगगतिम
तिकरोमेरीसुधिबुधिरहीनठौरि॥ तम
चरकोछंगीवगातितछिलुटनमिलनकी
आस॥ माधोअविअलरिहकेआवति
जावतिसास॥५१॥ रागमारू॥ नैननी
कोनोतोआवैनैननीकोनोतो॥ आ
नः नैननजगमगातिलाकुलीरसमांतो
नोवैलागटरकीपागसोंथेरगमगांतो॥
[illegible]
[illegible]

12

तो ॥ छूटे बंद अंगन पर कैंधे अंग अंग गोस
रस्तां तो ॥ धारी राधा रवन रूप हे तिम
हिन कां तो ॥ पद ॥ राग मारू ॥ मो तो बै
रनैंन निसंक दीयो ॥ ता दिन तें उनि
स्याम मनोहर चितु बितु चोरि लीयो ॥
मानों कनक के चोरें अंग उतरत आरति बं
ति पीयो ॥ बिसरी देह गेह सुष संपति
परबसि प्रान कीयो ॥ तजि भुज बांसु च
ल्प मधुबन कों दरी बिनु हत पाजीयो ॥ मी
रां प्रत बिछुरें नहीं बिदरत बज्र समानि
लीयो ॥ पद ॥ राग तिलंग ॥ मुनी जु बिमु
रली या मुनी जु बिमुरली या ॥ मेरा मनु पां
परली आ मेरा मन न पापरली आ ॥ ते रे बे
रुक बलु जु बोदे रानी मादर सिह रिबां
न ॥ दिषरा बोला लागु पाल मरजा देम
ल तां न ॥ आहि रेप हि रेप हि रि बजा दे प हि
रला ला चीर ॥ रत न कुंकू बोदे बिके दिव

रो बो ब[illegible]ति ॥ जसोदा हमारी बीबै
सैलीं बाबा नंदु हमारा मीरु ॥ हमति
रो लैं मे हलीनो बिनु मोलि ॥ बेद
कितब गरीब दास बाति नाचल्ला वै
मेरो लाल नु मुजे संदु पु लाल्ला आति
ति ल्लावो ॥ पद ॥ राग तिलंग ॥ ले गयो
री आली मेरो चितु ले गयो ॥ आलीरी नं
द को ढोंनों मेरो चितु ले गयो ॥ सुरति
स बदय कितलई कैसें कहो आली ॥ स्या
नु ध्यानु निरखि अपुने गरि हि मोजयो ॥ आ
लीरी नुषन बने आपार लो च न बिसाल
लाल ॥ मधुर मधुर मुसकनी उपमा कोक
सो ॥ हकुंद कुजो ध्यानु धरें सो ता सि वि
कैसें करों होम रसो आरसपरसि दुष को द
खो ॥ आलीरी माथे मुकट मोरलि षिचति
निरष रूप लई चक्रति पीतां बर फर रू

रि स्रवति जो मद़ा॥ कै... मतारि
लाल चुं घरु गति हन्त चाला ... मति
कैमेकलो सिंघ जो नया॥ आली री मेरे
चाल ष्याल घेरी लई है दीनानाथ चेरी
रीत हरि आनि तेहि मोव रीन पर्यो॥ कु
लल जो नाहि केरी कैमे करि अजर जरो
जनलं ता आपी हरि मे गि अंत ग्रिह छ्यो॥ ॥
५५॥ राग टोडी ताल॥ बंसी फेरि बजाइ वे नं
द घा बंसी फेरि बजाई॥ गिरधर लाड़ले
लाड़ कुं बंसी फेरि बजाई॥ बंसी तेरी सरव
सुली तानं सुनि ब्रज दा साई॥ मृग मन चितु
चुराइ कं रूही तोम निअंद रिधरिया॥ कैंद
रिजा वां के दरि कूं के प्रेम न वेदा जरिया॥
आगा ष ब्रज बासी चरों के हो मे बसि लिये
न नु धरिया॥ बंसी तेरी धुन्न पाई या जाव
ग किं मेन दे दी॥ प्रेम जे वडी पाइ गल्ले बिचि
पडि बजाइ बिचेदी॥ जो तूं का आ केरि

अजापं मैं ललिलिसा हजरें दी। वंसी
कोलिषलोताकान्हासा बिनुकाई
नआवे मातपिताकुलल जात्यागीमैं
नुननावणनावे॥ जितिवलिकान्ह
तितेवलिजापीपाछें लगडी ध्यावे॥
कसिकान्हमोहिबिदादितीमोहिमु
रलीनबजाई॥ नाकाहूकाचितुच
रायं नाबजधुंमामाई॥ नाकेरिगुआर
नि रतनामाना मैं तेरी मदुषाई॥ गासि
मंकलनंदलालबनायोकाजगुआ
रिरिजाई॥ रूमरूमसुषआनंदउपजो
प्रेमजीवनगतिपाई॥ दासबूतात्नषड
हिअसीसाचिरुजीवेकूअरकन्हाई॥
॥पद॥ रागहिंडोल॥ ब्रंदाबनरासिब
नाईमोहनब्रंदाबनरासिबनाई। जमु
नातटिबटिकसमनप्रफूलतिकछुमिति
नाई॥ पिकचातिकअरुमोरक

बरनीन

हूकें सरदरैंन उजिआरी [illegible] तल संघ सु
गंधपवन परितहां बैठे गिरधारी।।सु लैं
धुनि करि अतिहि रि लीनी गृहिज हितें
व्रजिनारी।।तांति तांति आई ब्रिज बा
सनि हरि दरसन की प्यासी।।उनिउ लरि
कीपक्षषन अंगि अंगिपरि छाकि लोक
कुलफासी।।सततं निसंग स्तलग कान
नमें आर मिली अवनासी।।करति बि
हारि बजावति गावति तांति तांति धु
निधारी।।स्याम सुकठ मणि आगर नागर
सलेतं राधा प्यारी।।तत्राथेई तथाथेई तान
मान लै नूपर की जनकारी।।अंग अंग ध
रि भुज परसपर नैंन निउनि छीमारी।।षे
लत रास बिलास परसपर अति सुष उप
ज्यो तारी।।सुरिसुनी जैकारु कर तिदै
या सुषु कतहूं नारी।।इन्ह बेली सन्त निरष
सिपल लई सन नति तारी लागी।।कीट कि
रली जोरी की छबि मों गोपी जन अनुरागी

...दि राषै के वल जनु ब
...ला॥ ॥५॥ राग हिंडोल॥ अपुना
राम धिआवो साधो अपुना राम धिआ
वो बहुरि न आवना होतु मन अपुना राम
धिआवो॥ नाकरि निंदा जागु मसवे रे
फुरमाति नीहें सं देही॥ अंति मसमैं समाव
लि जासी करि घिनु कछु वरसादी॥ मा
त गलि तैं बचने जु कीने मैं तो मन दि बि
सारे॥ जिहि के रनि तुम अति दुष पावे
से पंग नाहि तितारे॥ ना जि परो मति गु
रु सरि नाई बिन महि ले दिउ बारे॥ जेउ
गि आप सेई चलि सि नि गरबु करे मतु को
ई॥ रावन जैसे छत पति राजे काल न छोड
तेई॥ जां कां देवे पवन बुहारी सुरजु करे रसो
ई॥ अरजन ली मम हां बल जो धे सी पुजी
लुगदे॥ ति नहूं प्रल का अंतु न पाया जे के सम
देदे॥ दास उगावंदा ते वदि लागी जे मनु वा
॥ सि करे दे॥

पद ॥ आसा[illegible]राग ॥ बहुत [illegible]के मैं
प्रीतम पायौ ॥ लाग ब मेघरि बैठें अब मैं
रे आयौ ॥ मंदिर माहि लै योउ जिआरौ ॥ लै
करि बैठी आपनौं प्रेम पिआरौ ॥ मंदिर मा
हि महा चित्रु राष्यौ रतन रामु नाम मुष
लाष्यौ मैं बद ताग निनव निधि पाई ॥
मोहि कहा राजा राम तौहि बताई ॥ कह
त कंबीर मैं कछू न कीनौं सहजि मुहाग मो
कौं राम राइ दीनौ ॥ पद ॥ राग आसा ॥
आपरी आपा आपरी आपा ॥ राघो जीवनि
जीवन अवध निआपा ॥ उमा सिच लीब निलो
सालिताजौं कुलपति कां निमह जि बिसरा
पे ॥ इकपरूपी वति मृतत जिधारि: इक नैन
निइक अंजनु नारी ॥ पहिर तिछा किआल
षल आई करि अत त न लैल पग हि बन ।
री ॥ इक जांषज रोष निस नप्रेम पागी ।
इक मन तंक मन नाथ सां ग रिलागी ॥

[illegible]जदेषिसचुपावै। इक
जन्म कर्म लीला गुन गावैं। इक क
हैं सदा कौसल्यापुर बिहरै। इक क
हैं सदा बैठे मोरी निहरै। जैं जीय जा
न्यों तहीं सचुपायो। तुमसि तुमसि तुल
सी जसु गायो ॥ ६० ॥ राग आसा ॥ रु
मन रहु मन अनत न जाइये। हरिरसु
कि बिषया कैं धाइये। सतु तमु चितव
न हरि बहाइये। साधसंगि लागि हरि
जसु गाइये। जिनि सौं प्रीति करैं बहु
तांती राम नाम बिनु कोंनु संगाती ॥
सुनहु श्रवन नैनें तुं हिरदे बीचारि। रा
म नाम बहु पतित उधारि। करहु बेन
ती सुनहु चंचल राज। जो तुम ठहरावै
ते सफल काज ॥ नैंन पसारि देषो प्रभु
सोई ॥ घट घट रह्या न कोई ॥ ६१
[illegible] राग बैलावली ॥ आजु तो उनी दे नैं

...मकहा जानेंहे ।। आलिक बिपरीत
हो मुषिकांति आहूलई सांचु कहा प्यो
लाल मेरे ही आगे ।। षेलत जमुना तट ति
हां हेम कुबेसी बट पकरि लेगे ग्वारि आये
मेरे तागे ।। एक तो अंचरु गह्यो रही यो हम
रे: सकिम गरो किरही छूत न मेरे ।। लीये
है कंठि लगाय फूली री अंक न माइ बारेलो
जगदीस दास देषे अनुराग ।। ६४ ।। राग
गौडी ।। माई मेरे नैन नलानें कहा करी प
माई मेरे नैंन नलाने ।। हरि मुष कमल नि
रषि रहे अलि ज्यों रसु जो पीवत अरु राउ
तानि रानें । सुनि सजनी कति जा सबु का
रो बसि जो परी हें अ वाने । कह्यो न ही
करौं धन्ने नही धीर्ज मगन लयपल त्रिपाति
नमाने । अति निलाजहो हा अटिकि रहे
है ज्यों चकोर ससि दितहू पच्याने ।। सो मदा
स प्रा गिरधारी मुषनी को जिनि पायो तो

रम जाने ।। ६५ ।।

॥ राग कान्हरा ॥ मता गिरि गिरे के
...लालके करते ॥ औरे लैया गुआर:
लकुटी आाबेटे को आपने अपने
जुजन बलबलते ॥१॥ सात दिन
नभ घरू लायो: एक बूंदि न परी
कजर जरधरते ॥२॥ सूरस
अंतर रही जर जेस मिषर परि: नंद
नंदन के आप कलते ॥३॥ सूरदा
प्र अलेपद दाता सुरन रपाइ परी म
रमरते ॥४॥ राग तुषारी ॥ सांवरा छोह
तुवारे फेरि डारे तेरे बहन पेरा। आ
होते रन इन रंगीले नेरे वा सांवरु से
छा अरु रंग गत रसै। रंग मस्द लोच
न अतिरस भीगे नीतर बचनस
रावे। कटि किंकन पग नूपर स
एक गुण गुरु रन चाल सुहावे

सोबिरखमंडितजु घकपोनपरि
सोभतिकरिनयनीत हरे॥ गोपीके
उरमडिकेहेनदसांनी॥ वारीतेरे
बदनपरे॥१॥ आहोदघमथन
नदेईमैरेवासोवुरे॥ सोमोहनु
मथनीगहे॥ सोआहो रहुआन
पिआरे मैरे वाछाबेपिआरे॥ सावु
रे॥ तोसोमईअाकहे॥ मईआकहे
सुन रहुआंन पिआरे छाडिकुरी
रमनीतरि दूजरी॥ तोजिउ ठि मैते
दूधनिकसगयो॥ मोहन मरमके
कौनी॥ जसुमति रासुकी आमु
निभिंनरि जो इकिसिबाघो तोहि
रहो॥ जोबिहउमडकेहनेहरानी
मोहनमथनी मथनुनदे॥२॥
आहोकाकिजोरिलपरमैरेवानाउ

मजेतीजे ... ब्रूओर ... ये ... जे
मोघेटीजेसुमन तेज्यातिश्रभु पाग
नगतहेत नगत नाहि निकार निर
। सिकरि आपब घा गो। ज मअलो
गरजनवृच्छ्यादनलकुंम
लेउघलेत हा गे। बिदउम
कहेनेइ रानी मोहन बाध्यो ब
इतनहीं।।३।। आहो ऊप्रगट
प्रकास्प मेरवांसावुद्धा पूतवु
मेरको आहा जिनिपायो जेमव
नराइ मेरवासावृद्ध श्रीहीनानां
धुहरो हीनानाथु जगतपति
स्वामी वत मंगा स्ताए जे च
नकिवला हेतु त्रेम नगत रोइ
हीटाव ३ हीगो ३ मनोहरना

...सुनेरखलागी ... मोहि
हरागे विधुउमढुकेनैहनैं
नीउघरहेपूतकुमेरको॥५॥

रागुआसाजोग॥ लेकुगुपाल: लेकुगुपा
ल: कहतिफिरतिब्रजकीबाल॥ दधि
कोनामुबिसरिगइ: प्रेममगनिगुआ
रिलई॥ तातेंआछो जप्या ता तेनंदकोज
प्योनंदलाल॥१॥ उफिनगोरसुसीस
धरो: उपजोतनिबिरहजको: हरन
राइनस्यामदामकेप्रभु: बिनदेखे
व्याकुलभईग्वारि॥२॥ ॥रागुमा
लीगोड॥ प्यारीनाजानाकोइमंत्रपडित
जिवस्त्रिकीताकाकृ॥ जिप्यावतिलागि
निमनेहदीतिप्यावतिकृष्ण गुमानुजीप्य
री॥१॥ काकृष्णमादाआदिका: आनुरा
गिदानिजमीनुजीप्यारी॥२॥ जलतेंनी
कानापवेतंहतनाकरिजानुरीप्यारी॥३

सोमयशामापुजुदेदापढूपूरनप्रनसुग
वानडीप्यारी॥४॥रसकल्लोलदाब
नतीजोडीजीवनप्रानडीप्यारी॥५॥

रागजौंनपुरीतोदी॥ ॥सिधि
बुधिदेहिलवानी॥मतिबुधिदेहिल
वानी॥अमरसिंघारनीत्रसूलधा
रनीःकामनेदबाकबांनी॥१॥
करिलीपषरपुःअरुषडगधारे:
चामुंडीसिवसिंघवाहनीःतानतरं
गकोंबेगदरसदीजेःमोरीनगरको
टकीरानी॥२॥ ॥रागतोदी
जोनिपुरी॥ लादिक्यावेतूमनमोहर
तजुबिलमुनकरिरे॥मकरानेमें
नदीकहावेतबतबैठेसिरिछनुम्र
लावे॥कतनकोदीकामिनआ
वेजाबिगठिचलपेसेनवतुरे॥१॥ जो

19

पाछुपस्नारिसकल्ननिमशोयाविष्णु
ग्नारेसंतरिमलनतनबोया: धर्म
करमदाबीजुनबोयाकयालेजा
वेगेचरिरे ॥२॥ निमबासरब्र
त्तनामन्नराख्योपांचेरंदीकामि
निसाध्यो: गुरकोमबदीपकघटि
राषेतातेंमिटेतेरोतिमरुरे ॥३॥
स्यतनुसिधिस्नादिकल्नेश्नापे: ष
टरसत्रांबृतनोगनुजाप: स्यजग
सुपनोपिरनरेहे गो: एकोश्नल
षमुनररे ॥४॥ जोकछुकरेंसोर
हावारो: ग्नापितकीत्परबाजी:
तेरीहाप्यिपम्नारिवल्योजुहरी
रामदायदिज प्रगटपुकारोको
मुमरेहारेहारिरे ॥५॥

गुरुमार॥ ॥ गुरमिलिसभ
मेरीमतिफेरवानुः गुरुमुंनसबद
मिलायमनिरबान॥ मंनसबद
मेंकीयगलतान: दोनोंदेयोस
सम्भाइलान: छुटिकेयबंधनसे
याषलायाबडुडनेहोयपरन
कीआस॥१॥ दक्षिनकाराइ
गुरुपश्चममेबताया उलटाप
वनसंगमनमेआया। सुषमनीकेघ
रिकीआबासाषुलिगेइ षिरकी
लयाउकास॥२॥ तीर्थकेतीत
रिइकुगुफाबताई:तामेजोतिइ
सकीदिषाई जोवहु:जोतिका
जोनेसेबुसोईआपेकरताआप
देव॥३॥ ऊचमहलमोजीनामेरा
जजमासरमेनयाबिसेरा:जो

[illegible]
...कीकालिग।धारि गु...:
भगो पाला गिरि कैसे करि धारो गे
तन ... कूं अलकर मे दिबतकों
परबत अत तारो ॥१॥ एक कहि भुर
ली: एक गुअर्धन ओटि राषि ब्रजलो
क उबारो धन धन जसमती पूत तातिला
हो जर गोलि लिको विछिनिन निवाको
॥२॥ हरि कोई बको दे उ देव न भेः भु
रपति अपने जी अबिचारो दमोदर
स्वामी नंद सुत जी आके सात दिवस
मेघ वे पचिसको ॥३॥ कहा मतागि
रि गिरि मेरे लालकै करते: रे लरिया गु
वाल कुटी आटे को अपनी अपनी
जन लन बलते ॥४॥ सात दिवसः
मेघन जनु लायो ब्रसत कियाल काब
रतेः गोप ... गोवर्धन ...

[illegible] तेभ [illegible] सारीच
: [illegible] परपार: श्रीनं [illegible] प
[illegible] केको पत्र्रान न्नतें: [illegible]
[illegible] लक्षनै पद दाता [illegible] रुपाइ परे
[illegible] रन रते ॥ २ ॥ ॥ राग बिह
ग३ ॥ जेनो तेरो न्नाउ तेमी सिधि
1 होई: हरि का मरम जानै जनकी
ई: ॥ निंदता करि कहि जगत [illegible]
लीना जइ सो जात रुपाया: का [illegible]
पषान जल मे जैसे [illegible] रघुराया
॥१॥ घरि बेठ्या तीरथ कों ध्यावे
तीरथ जाइ पाछै पछतावे: तिम
तीरथ कों ध्याउ रे मन [illegible]: पुनर पुन
[illegible] जनम न ही पावे ॥२॥ दान पुन्य
तीरथ ब्रत [illegible] जात [illegible] विग
ता: पीपा कहे [illegible] परमे सर [illegible]: ज
[illegible]

21

राम रसु कल्याण ॥ राम रसु ऐसो रेलाइ

जाके नाम ली आगम जात राम रस

ऐसो रेलाइ ॥ ऐसे मन हा गे मोल को त

न मन न अरपे कोटिः राम रस अन

सो पीवे जाके धड परि सीसु न हिरः

॥१॥ सूघत ही बवरो लया चाषत

ही मरि जाइ ॥ खेती एक घटि मो सं च

रे जल बुझे न अगनि जु लाइ ॥२॥

सो रसु पीवो नाम देउः अरु पीपे रव

दासः पीवत कंबीर न प्या को ॐ

अजहूं प्रेम पिआस ॥३॥ रागु कल्या

नु ॥ पायो राम रतन धन मोरेः राम ज

न जन जन को बहु ॐः लगिया गरत

लाई ॥१॥ गुर की कृपा साध की स

गति लाग बहु बनि आईः ॥२॥ चा

कम पाल ॐ रा कूसु मेरे नाम दे ना

मदु आई आर ॥

रामगुण गलाचतुः॥ नेरोजन्म
पकुणोधुरिकाहै॥ तेराजनुः
कामक्रोधलोलमोह विवरज
तिः इति पदु चौकेसारी॥ १॥
गुनसत्ती॥ निंदा दुरि विवरज
तिः तजेमानअगलमान ल
लाकं वनुसमकरिजाने तेभ्र
राति भगवान॥ २॥ तीरथ न
तनेमजपसंजम सदारैलि
हकामातिहमा गेनुनर मान
विवरजतिः चितवत मातन
राम॥ ३॥ रजगुणतमगुण
सतगुणकलीयेः पतेरीमर
मायाः चौथेपदकोजोनर
चीन्हैतिन्हीपरमपदुपाया॥ ४

20

122

जोमिन परदिपक कै संग कौ स्याम
ध का उंतदि नास्यात्: पाप पुन्य ते
रहति निरालंब करति कौ बीन
ता सा ।। ५ ।। जैती सिरी राग ।। म
रिसां ति बिना जे: जाके सां
ति भाति निरंतरि: ते कुगुपाल
कि याजे ।। १ ।। क्या जप क्या तप जो
गुत्र क्या सः क्या के उं बन फिरे:
कहा सः पं चो अंडी: जो वासि करे
मां ति बिना उनते क्या मरे ।। २
गंगा गया गुदावरी जाउ: मथुरा
अजुध्या नाउ: कमु मेध सो
जप करे: मां ति बिना उनि ते कु
मरे ।। ३ ।। मां तिमेर पूजी मां ति
मेरा मालु मां ति करेत उ जे नि त

अटल

मांतिनदरेरीनमा...

रिअकानामरत्यो यमाइः।

रागुजइतमेरी। माधोतेरीमगि

तिनेछाडो मुक्तिमांगो हरजमुनु

नोसुनावो। रांमाकेहन अबताम

नोहरजनमेनन भजसगावे...

गंगाजलाइहनानकेरावो। पीतंबर

पहिरावो। धूपदीपनैवेद आरती

हानितुहिव...बनावो॥२॥तुलसी

आनिगुपालमेटो चंदनतिलक

चढावो। नन तनामदे...जनोमि...

ननातुमेरोहरसके हवो॥३॥रागुप

रजि: प्रानसनेही आलालमोनें...

सानिबाढु॥ मंपकुमरमनोहरमूर

ति: सुंदर बदन दिखाउ॥१॥मद

तिर...मंदरमोरविहारे आस

23

मा

मैं तो बलाबलतूमेरा बन्मोहनमेटो स्यामि ॥२॥ जाके हिरदे तुम बसो ताकी तुमही सहाइ: श्री गिरवरधर पूरनानंद नंदनपर जनमीरा बलिजाइ: ॥३

रागुपरजि: मन अटक्यो देषि बदनकी क्रांति मन अटक्यो: जबते मोहनमूरत जो हीत बते कछु न सुहाति ॥१

आलीरी हम रंजी आ मोपै से आवत है पीकी लावे रजाति: गंगे को सुपनो मो हिपायो: सुमर सुमर पछताति ॥ २

अष्टजाम मेको मसे बीतत है: पल सेपल नलगात: मीरा प्रभ गिरधर दे षे बिन कठन बनी यह बाति मन अटक्यो

॥३॥ रागु मालीगोडा ॥ ॥मइ ताद्रुधु

नवेचानी: लागा मंगि मिचुकाइ: ॥ चलो नंदिदु आरे नी: दे वो का मो मनाइ ॥ चलो नंदि दुआरे नी ॥ ॥

चत्तो नंद कुन्ना रस्सा षीका क्रान्तू वे
षिक्स्र वाहि: मुषमुरत्ती सिरि बरन
बिराजे।। तेन मनु देह अबाहि:
ग्रनी हाजे देनै नम न्हे नेनी: मु
रत्ती फेरि बजाइ: तूं सुणि मुया
न पिस्रा रावे:।।१।। त्ता गामें गिमिचु
काइ नी मषी म: मट की फाडि दिसा
जे तूं उप्पा वान्नि कुके सी दर सा मुंलै निकि
नाही: क्रा नी मरताद धुन वेगानी।। रा।।
एक सभेद धुवे च णि चत्ती मोहनाए
किडि रहाइ।। मरजे पाइ मे जो गेम
त्ता: हाथे त्र चा। नें कि भोई: क्रा
री क्रा पिनि काइ:।।३।। हारी प्रेम दि
वा नी मषी म: नोहि नोह नमन त्ती ता
मधि बुधि सन्न विसारि गेई को जो का
मिए की ती:।।४।। तोद रघरी सहा जाणि
साई जा स्या ह मान न्ना वे ते दीपति पर

रे भीत कार: जै कू आपि निवाजे नी:

॥५॥ टोलडा आसावेरी दा: ॥

प्रीति लगी वेसावल प्रीति लगी मुल्ली

वाल्ले देनालि अंदी प्रीति लगी ॥ २४

वैनु ब जाइ ठगोरी लाई वास्ता लि के ठेठ

डी त्ता लि ॥१॥ अंखडी आइ के मेरा मनु

हिरि लीनु सु करि करि मिठडी गालि ॥२

अति अलबेले ते ऋजि आरे सुंदर नैन रसा

ल: ॥३॥ प्रीतम तन मन वारि दी यो है

प्र सिर सतिन डी वालि अपादी प्रीति लगी

॥४॥ रागु वटेशी ॥ तोरी हो हरि रंगु लाग ।

अरे मेरे जीय का संसा भागा ॥ जब हम

होती मानु गुमानी तब पीय मु षो न बो

ल्या । बपी हाइ बीषाक बराबर तब पीय

अं तर सु षोला ॥१॥ पीअ मु ष बोला अं

तर बोला सेज री अं सुषु पीआ ।

[illegible] मन के रंग रा ती प्रेम पीआ

लापछिआमर।। लोकलाजकुलकीमर
जादादूरगयो।जइसेतागा।हरज
नहरसौंहिआमिला।जइसेकंचनमनि
लतसुहागा।।३।।साचेसौंमिलि
साचुपजगा।झूठेसौंमनुमाना।कह
हतकबीरअइसोगुरुपाओकंमु
हमाराजागा।।४।। रागुकान्हड़ा। मोहन
प्यारेहोतुमेरेबनबनबनआउ।।तिहरेजीयकी
हउनीकेजानतबतीयनआनिमिलायो।।१।।
लटिपटीपागआरापाटपेचाअउरचतुराई
जनावहो।जगननायककवराईकेउमप्यारे।
रसमेरसमिलायो।।२।। रागुबिहागड़ा।। रोज
तुरंगनरीजोरी।बरषतसीतामारीरा। रोज
राग म्रमाधुरीबरषतसीतागोरी।।जेइउदा
आबरश्रमरभूहानमुकरटलाजेनरवषो
री।।१।।उतरासिंधुकीगउमाधुरीकर
तग्नलमनजोरीबाबरलतपलहनी
दू...

हासनिजनइननको सुखुलैतिमिकिसो
रकिसारी॥३॥ रागटोला: हरुवा
रीहरुवारीत्रा: हरुवारगुरपरि
वारित्रा: दाडीतेरीनूउजमके:
मध्याकवलावागटहके: मर्नी
तेरीजमजोहिनमचे: गजसो
हजेतषबहालिया: ॥१॥
पाप्सापापांदीपटी: बाह
दाक्रूडकपटदीहटी:
मतगुरपूरेमेरीहरमातिक
टीनरकोपकडिनिकारीत्रा
॥२॥ सटिपायासंमेदामंग
लु: कारदाफिरदासीवुदह लु:
धम्पासीपापादाजंगलु: गुउ
ग्पानत्रागनमंदिजारत्रा:
॥३॥ त्रंनीकोठीकुमसजेना
हीगोतेवाकेपामायामाही:

श्री मुहुरु लालास हुई श्री अमरलालस
जपुलिख्यासि वी विचि संबतुसतारासै३
चलीहा॥१२४॥ आदेसु आदेसु आदेसु
आद पुरसं को आदेसु आदेसु ओं ओं ॐ
करजाहिरजंघपीरु को आदेसु आदेसु
निरंजनसानंई कारु आपरपतिस्पहु कों
आदेसु आदेसु सचोउ देरी कों आदेसु आदे
सु वरपारी पुगरंदिआणी कों आदेसु
॥१॥ तोसी नि आर्मसपिसीतालु सदापवन
करेजलुवहे सो निरमलु नीरु विचि
नवतुषचतु मुणंगि करे उते वेठोज
धु जोपारू सुरहिदरसनुप्याणो स्वेतसजु
सुहणा वसना से चीरहीरे ललाप्रकाटल
लाटकजसुर णीसे ऊरुर्कानललाज
वहरहीरकुनुसुहरोसरि कु लेप्प
णु कनि णो तर्ण तनिजरीर ॥

अभरपनस्पाहपलाणहरजगताग
रअदजगर्दध्धि काथीरजतरस्प
तरघजप्पकसपह्मणीकरकिपादे
घीरलालउदेरोलादुलोसुतेनालिवजी
रुस्पालोलालुगजीरूनीलठकालालं
जीसुहणी॥२॥ तोसरह्नितकिठिजघ
पारजेलालघरसनुसुर्वनप्जणोसाग
लालुलठपटीपगजासिरिसुहेस्वने
कलगीपाबवरहीजउघरीआसु
रफाल फुनिआहेलालजऊगनबेसो
माघणीमायोचंदजठनजकुकमतिल
कुतेसुहणप्पनपोहइगालसुपालसुहण
नइणघाणपनिजाअरनिसदावरपासु
रसुकजिठनासकाप्प नीप्पुलकठवल
ठकसलाल [illegible] अघरलालाजउवपाला

गू रसीला लीलाल॥ संघरसेर्की भांद
पतिसंग ठपंलमजालाः कनेकुठल
आतिअनूपुसरसूठ जलमकरजउ
जालः लटकलालजी सुरण अलकघुं
घरवालः मनो अलकावलिपरिवें
गावलि गं घुनेवल हईलालः क
उसाकि मणिगलि सुरणी पुनि मोतनि
मलहः उरिअहेरिसालबालेः मंजल्म
स्चर्नेजूषि चतसेहारलालः फुनिहीरेल
लः केवलु तपिलालजो से रंगरंग जवे
हरलालः नबासिबसंघरसलो सुसो
सोलाम्बनीबिसालजा सोमा सकलस
रसार में सनार्हवरवरलालः ठेलो घो
लोहाण लटक जोदिसीयि उसुनं
हल जो तिसरूपत्रुभिमरसजासरस्प
लोकपतिपतपः अंतरिजामिलादुलो
मेरेहुयेरे लालः सेकुचर्नेकवलु र्ष

लालथिआः आसाने नलाः षसूरीजी घाणि
लालआवेसहवीपुरसकोषसारीजी घाणि
लाल उदेरो लादुजोपजा सुवनि जोपणा ॥३॥
तोसीनः अमरलालगारी घनवाजगोरी स्वेग्र
ग्रिहः मीअभीलालषेलोजः करना समरथ
पाणिजोरजूराईः त उपनूबिक्रोनाहिको
दूजोः करतो तूही आहेः आपैर तूपूनबि
मूत्रवनासीः सदाछ रूः अत म घटि घटिमा
हिनिभवासीः तूहेजोति वहेपरकासी सं
तोसनि अलपरुपत्र मरनिरवाणी
घटि घटि बोलेअनहद बाणीः सोहि
सुमरो उदेरो रतनाणीः पूरनब्रिम्ह सो
जकर्तेसणी सेब्यो सति गुरु अलषसुज
णीत रविघषणी जरपजो पाणीसो वैम
जागर्तिसुपनसाक्षोपति तुरी आतूरन
तेपरिअतीतवसेकपुरी आसर्तकरा
जि सतनाम सानि [illegible] रे नहीं ब्यापेतर

कारंनतेअमृतु बुंपोःपंजेवसिकिअं
रंका पु ... ओघुअंहंकारु माताजोदु
घुमपोउजलाअंनु नकउआ हरुपूरनं
अंमृतुनिराधार॥ सम्रचनोतोकीन्तु
हीपलण हरोसमनपितुवसेःरहेमलि
पनुःसकलतेन्पारोलालहिंतुलालमन
पुलालउदेरोःतूंविघासरूपुतोसनि॥
तुनिरीकारंमतिपूरनअमृतरतनघार
घसचेःतोकीअज्ञावतरुःनिपतिजगजे
वेओअमरपंथपुगगटाशःनउउदेरोल
लसजशंकदीकालिकालिघुजगनुदेष
शंकदीतहोसवनिकालोहोम्प्रांकेनेःह
लकाम्नाणोलालनुपाहिराशःकदीघीशं
तसवरुघोरोसीउदंउरुशंदशदिबल्प
ज्वालबेलालुःनपणुःलषशंःरातीजाचे
दुरसनुजप्पणीरोःदीहेलोचुलदाशं
[illegible] वेराः

दसवोआहे लील हंत ७ तो सन्नि तूनिर जनिर्स वदु
ब तंजन उ देरा मुस्पकाल कैरेआसणसदात
नेरास दाम हर सस हेइ जन्हा पुरसु संप्रा स्वो
वहार्रवाहि लो आइ: लब चौरासी अंठब्र स्पोठ:
लोपालि कुआपे करे बस मा नो लाल रत नजोवा
लि कु साहव बका पे बनु जणि हा र: न उ पर ती: तिपुज स्व
नज गति उ धारु: वि ऊ व रा व णा वा रो अहे उ दे रो
लाल स रु रो कू पा वं तु द जो वं तु सघ घो सहनः स दा
सतारु ना म जी पाला णि हा रो र्स न आ थ तेन्ठेउ म रो
ष प वं तु त्र म सम वि धि पूर्नसु प रु: तु क पी न
उ रं गु: लहर ख हर गा ज प ब स्प उ देरो: गंजे प्प
स्पे दातूं दी: सचोना मुर इते रो नेसर्र्ना सचा
उदे रातू अ म स्धवा नु: प्र रन पुरष नू पर्ह पानि
घो नु क रका सना: देवो न पु ज र स्सु प स्चो तर्र:
घर सन्पर्द गोबी रु ब ठ अरु प घुरव स्स तीन
प उ दे रो मि तो ॥ जर स्सु प स्चो न पु उ देरो तर
स त दु ब क टपो: जनम सफलं: स दा स बी
ज गा ति व सेरो: ग र दे उ सर्त: तू स्का मा उ देरा:
अं त र्र जा मा ५ स् म रो ज प पं त्र आ म र जो: व गो
सु ठो र्नि स्का नी: सो उ पु ज रो लाल: नो जा गर्त

प्रकृतिपरवलीसुमरे अमरलताषे तौ घुन
करो मन दघरे सूघो सचु गुरमत रहो:
घूघून करे: हेतु रषे गुर पाइ॥ निरमलु पंथु
संदपवत्रु इ: जतषर षो कस्यो कमर: आ
सण साधे सुमारे अमरनलषे: गगन घन
लगाइ॥ गुरपगरउदेरे अद्नालि आहे इक
सरूप: सेवो सतगुर पुगर षेप यो लल अनपु
१० तौ सनिसेवा पूजा चरना अमरलाल जी आ
है अपर अपराकउ ए सपरथ जो पाइ पारु
आपर अपर महिमा करनी न ही जाइ माके
तो करी विषाणपाजी प्रतिमा तू पाणे छाए स
हल लल सचाणा तुम्हे चुके: करे सतारी॥
पाणि पेतू पाणनात उदेरा व्बर पुहरइ: तहि
जो सदा सतारु: तोर हण अदजुगादि तू वद
उदेरा तू पूना: ब्रह्म निराबण जत्र टेकै जी
रव्यापकातण पईस्यो लालुप्याण संघर से
वाकु सर्निउदेरो जीव्र हसुके रबासि पाण
११ पराह पढ[illegible] जापु अमर जोर टेदिने
[illegible] से:
रातसाफा [illegible]

दीदोदातिजपुद्रगलेछ्या॥तोसर्तिश्रादिपुरु
षुऔंकासर्जिघपीरनिरंजननिरीकरुःश्रा
मीपर्तस्यहुसहिम्रुदरीश्रद्वःम्रतासर्वछ्वः
उदेरापूरनाःसदातूनेरास्वमीसर्तिरामर्नमलु
निरप्रोरिकनिरवैर्रवसंमरःश्रादोलश्रनीला
श्रनतंर्दश्राब्रमतउदेसीप्ररनासदाश्रवेन
सीश्रम्तिलुसकलेनमहरतेरैःतुरेश्रपु
रुश्रपरुःकौणसपरष्युपरुपुःप्राम्परनीन
तीजाइजतउग्रावेसमुलालुश्रहनेश्रपुनीः
तूकतेपाम्रपरत्नसहरु॥१॥तोसर्नीवंदनु
करोजदवीरःफुनिसोग्रउस्तर्तकरोसुप्रुर
नुकरीकरकरुनायहसुमरनुहोवेतूनि
रंजननिरीकारुकरसेजदपीरऔकारं॥ः
कापुतेकपुकिउोःपसरासत्तसिपतश्रारु
वदपुरनःकर्मःघरपुरुनतेकश्रव्बधीन
श्रापिश्रर्तिदिषरावोःश्रमुकतावोतू
श्रातिश्रगघविश्रातवत्रमर्मलतुउसर्ती

करो प्रसहित: अनंत सातिगरु: करहा ता करताय
नो: अर्पिलु उसत: [illegible] क हति मष नो सो
र्निकर से तेरे ता [illegible] र ष च त पुनिक र से ॥
लगे छजे: कर से तेरे तष [illegible] त मुकट छत्र पु
निकर से: [illegible] तेरे त षत्र मुकट छत्र पुनिक
र से कहीन: जर अजो अंदु [illegible] सठ सम पंघर
तेरे: तू अषही अपार्बि जो सकल प्रिथावी तषात
तु मू जा: प्प रकुं भि आदिल गहीर्जि पी रु आ
वे ना सी अब गति: इकबीस मुकट छत्र अ क:
ससी: स सिरराजो उ ती वि [illegible] अ मी रु पु निसो र
दसरु: नार गह राजो ठ ठी जगि मगाति तेरी:
[illegible] जोति की अरु जनि ही समझे: रतो सर्नि सकल
सम ऊ सजन धी अनीर आपर अपर जल सरुप
अर्पिल तार मारि राजो पंघिरा षचा ही रा
मणि लाल जवेहर छजे: सकल पूं मषि चतमणी
कार छाचि झलक झलक चउ पंघिर मणी का
रि फाल कजे तानि च ऊ आन मरक पंघिरु
[illegible] ति कारि [illegible] तेति

मांघिर मध्य मणीन मत पर्न्यजि व पीत बरगे
लालजवे हछन्नसी सर्सारराजे॥ अपितु सचु
जंणमणि लालजवे हाखिचन्नमन्योतरमुकु
डुसदाजे अरसी छवि उगीजगमगात अमलिन
दरसनको मानो प्रगटि: मएदो ऊरवससिसाजे
तो सर्निव छ सरुपउ देरा सो मति दिसी तलनु
कारुजे: लटिपटी पगलउसवण सतु: लटकनि लजो
स्वर्नि झलक सरिक लगी प्रानि तित्वक की रेषा:
लालसुनालमन्याने॥ अउ आसो नति नरन अं
त सु एरु: अलका कुटल कंनि कुंडला झलक म
कराजे॥ सुकाजिउना सा: अघर बिफल: गांढु
मंडलमल्येद रसपजो: छवि धनी मुलाकं एद:
पामृनिचिमकात: सो तपनि मालसाराजे मांदिमंद
मुस्यकि निमघमरसे: आंघि अंगी जोति छ बिकुजे
निरष्यो मुषर: बिधुउ देचंद होरूज त्यो: मानो
प्रनाचंद मनोउ दागन ससिजन की सोभा:
देषत मन मण्यलाजो: रहः फरसन ब्राने:
पाति कहीनजावे आजि मगाति: जोति जो:
सरुपछ्विराजो पतो सर्नि: के तेइए मृ देठ दे
वी प्र जो [illegible] नगनी

उदेः वातमनवसैराकातेअंउजपोरजसे
षणीकेतेसूजचंदुताराजेःकेतेसेसंव
र्नवकूपातलप्रिथवीपर्बतपवनपाणी
बसंतरगावहिकेतेघर्मगवरिअमर
दरवजेगंधर्वईसकिनरमोतलीफु
नपरीआजसुगावहिसूअमरघुनाजेः
केतेगणतनहीगणजेःअर्मतालसकते
गर्वनजेतउमर्वनषरेसोईपरवनपरु
अजेःतोसनिकेतेनवलषपीरनितन
वेअमरकोःकेतेसिघसाघनेउनघु
नेचजेःकेतेचउसागिजोगणसरवीर
बवंजाःकेतेछरीमारअदलेःबबरदे
रीअर्मकीबजेघाजेकेतेजसेवंप्रंठरेमणके
मोतीललःजवेहरउ रुपितनिारिपजाने
अतनतापरजेःकेतेजात्रिपुजाराआ
विनीसेविनिर्सूपुललकादिलोकप्रलो
कःकेतेअंढविसलटसकालेःनोघावार्
अवईसनिपावंछातेलपहीवंछजेः

जरजरकरहितजरलालु अर्मकी सपालु होवत
सनकाजे: अरसी घ बमनी अप रउदेरदेषत
कोर्तुसाजे: संदर सेवकु सर्नउदेरेदेउदानु
सब दुनामृप्रेमगातर्जरदूरकरोदुषु ता?
सुषुकरोअपुनतोसर्नन मकीलजे॥लघुअ
प्रघकरेजेसवकुनी म्हरू करेसतारीतज्ब
नुअवरु न्हीकोर दूजामरकरदाआश्रि तु:
घरीअपु ए नहिदवार्चि घपीर उदेरा: मरतेराना
पुचतारीसंघरसतगउनामकीलाजातुम्हिर
घकीलाजासपारीजापदोऊ सपूरनाकी ब्बेकं
घर विचित्रिमती बबैस: विसाषो ५ सोमसो
मवार: तोसर्नलष्पणपुरसदेलिष्पे घर्मि: उदेरो
रातनघरोमुरही माइसरही सूहे अचूनी: अ
नीचर्नचनिषि नउदेरोक्षा जो घरसतीर
मबू आउनाक्षणमृषेसोइसबरेसोलू सर
दोहे तरसंबतुबोल बंघसजपाणिकरे॥
बतुबंघरोबमारूपीषाधिकरेदीला? दोरि
मेलयेदीजा रोलिघाषेर्ताना मेबातिकु

उठीमर्ठनर्बराजापुत्रबेघीर्शदिन इमानि
करैगोरखुनपुत्रजगअगोचरः॥चेलो
सईबकंनोदणुलघइजोकोपंडविचरा
चाउराजाद्वेतापसपर्णद्वेहाजिकरेःन
छणत्रसुतोकीजागोअंतमाकंनीर्दिपा
रेसीजूअंठइचइजैःततेसेरतुदउरएः४
पुसपीइः निघर्चंघाःकमकरेःवाउदुन्पा
वोलजणमंगरवगेगुजारेःसऊसर्गपा
णीपूंचूसंकुरुबुलारीपएपंतुलबपण
मातहूजाघिनाषतुदर्सनितोअर्हनिवसु
तःषदूजतीतोचंजाछणःषडुसतीतोदु
आरकंनेउदेरातोसनीगर्तजोतूआहेबति
जतीःगारवसेअऊतेनारेःतोततर्हजोजन्ही
मथेसेतूविजेताउपरेक्तोपुतारजोन्हीमथे
सेघरतनूसमजश्अठषवेल्हेप्रगस्सोपुरु
सुरतंनघरेर्कअइजेत्रूजीसनर्सघरेर्दूभ
कारेपायामाःआपर्णदुजीसेवकीआर्दि

32

बिर्भीलक याग्रुसीर्दि न्प रक्तर्फ कारेः दुग्र र दुवं
घाषारे स मुंर्ड सेतृ विग्रे बेः ता उ परे घरिध रि
रातति घरि धरि से हाति वेन्पतृ घिउो गा रां दे उ
उ दे राः अं घरिब हरि आपो वे लूतबी ग्रे घणी
र्घजे तृ तो ताति स आपेः के पु षउो पारो केथि
रुपहरि घापेः सकोर ः कर्नीव षाण चउ रासी
लबर्जि घघा रापुजा स्च नि अघा रुः तरि जोः
त्राण कर्लिक कले भोरा मुंजे घो घुन्पा नीपठी
भवे ताहिजो बोलप्रारं घोतो वठिउ दे रो रतना
णी तोषे को मच वं घोः ताहि जा तोषे जात्रा घणी
अचनी माणाक टाल्ने ताहिजोः अचे सि रु नव
नीनिराकार सु अवत रुः उ पा रत न ना रच वं
नी चंजा घाणो तृ के ह रुजो मंघो विघनबि
नि सारी सुपति सार्ग घुवा हरं घरी आकंघो
जो तृ घरी आ अगे अहतो षे जगु निवंघोः
पगतरिजाः घचा ग्रसङिते: जो ग्राग्र त्राणे
त्रतहोसेः जोः सनु ओ ःसखावे आचे

कोटर्निते:सचकोटी:कृझाबिसचुदिर्ष:



33

॥श्रीगणेशाय नमः॥

॥राम कली रागु॥ अश्वपति ग
॥ज पति सके नर पति राजे च वर
॥ढालि सीर छत्रु धरे॥ अति कल
॥वंति राजे अभिमानी वि रु सरा
॥पुति ना अति फेर॥ अति बलि
॥वंत चतुर्भुरु पंडित कालु पे
॥बलु कछु न चले॥१॥ धिगु धि ग
॥जीवन अभिमानु के राजा राम
॥नुं जाके संगि फिरे॥ गले जे वरी
॥पर से पुनि ऊबांधा मेरी मेरी कर
॥त नल न मेर॥ ...॥

॥ तेखकपूरककुंभकृत्वाटिकानि
॥ उलीमयु॥ मकर्मकरे॥ नव
॥ निधिसाधि॥ अष्ट सिधि साधे
॥ अहिनिसजा॥ तपजोकरे
॥ अतिहरिनिग्रहहोइजोहरे
॥ कालु॥ सोबलाकिछनचाले
॥२॥ बंलअप्रतिबलवंतसभ
॥ हृतउतपतिप्रलेजोहिएकरे
॥ ब्रंसेकाबलुहिरविधाताकाल
॥ पाधिधारैकुधरे॥ सोढतीनके
॥ टिद्पदिबंभालोमसकीतव
॥ दसमेरे॥ घाकहनवंतीमित्रा

34

॥ अर्जुन कालु ग्रेसनलु कछुन
॥ चलो ॥ २ ॥ जस थावर जंगम
॥ जेते कते कालु पाड़ि ग्रासे रधरे
॥ जो फुनि जन म[?] सो फुनि मरसी
॥ इहि अरचर्जु मनि कोन करा ॥ लि
॥ धा किसा धअ वधूत दिगंवर अ
॥ लु रमुनीश्वर देवपरो ॥ ब्रह्मादि
॥ क सनकादिक जो घे कालु ग्र
॥ से बलु कछु न चलो ॥ ३ ॥ खली
॥ यभी म नि हल च अरु भारत मह
॥ देव विद्याधरे ॥

35



॥राम भक्ति ध्रजा होय पतके राव
॥सहिहि जिसु मा छिब पुनो धरे
॥बल कैता श्रामे र अरसागर
॥कालुरु सेबलु कअन बले॥५
॥आदि रे अवगति अंति रे अ
॥वगति मधि अवगति जो द्रि
॥रधरे॥कालुरे अवगति
॥पंचतत अवगति जे गति हे
॥तात समाझि परे॥ कन्हे अ
॥वगति आतमते अवगति
॥अं वगति पान कालु बिसरे

 ॥श्रीलालजी॥ रागु बिहागड़ा॥ पद॥

जहं सुंदर स्यांम बिहारी तहां ले च
लु रे ऊधो॥ जोबन के दिन बीतन
लागे॥ कौतकु हूं रि गोकल रे॥ जो
वधि मड़ी ठर अजहूं न आए॥ तिन
बिनु मोकों पर नांहि कल रे॥
सूरदास प्रभु तुमरे दरस बिनु॥
करक कलैं रे जे सल रे॥१५
कबितु बिहरनी॥ कहीयो कुबजां
सों जाइ पै ऊधो ऊचें सुनाइ॥ मे
तोहि रोय ह वचनु इक दिन चितारेगो॥
जब तोसों बहु मेलु करत हैं अ
नंद को ल॥ पारधी जिंग चारो
नार औं च बांन मारेगो॥ नंद
दास तरर प्रकार हे हैं अनेक
बार॥ सीं बनका जोने केते

सौ ऐसी कों फारेगो ॥ जाइ के
मालिनि जजां न प्रीत कहे रा
षी का के ॥ जैसे हम जारी तैंसे
कोहि जी उजारेगो ॥ २ ॥

॥ श्री गुर्वे नमः ॥

रहस्याः निरमणाः स्वातकाः जालेः कोडी
जागतजैगीः जैः स्यालगुरहेसेकारसे
सोहेः रस्काशोगीः रहविः लहरठी
गुरस्पानकोः॥ बरसेधुंनुधुंनुसात
भवरः ठुफासैः पठकेः॥ जोबोजग
मगजौतीः॥१॥ करभैः चररुः स्कभु
स्वाहकेः जैनमतः ठानपा पूरुः
घटः ठुजै यासः होईरहा॥ काजेसान
ठदतहसः॥ स्यवनगनैः जाकठु
कनेः सुनसौधांनुलगाकैः तीनो
दसबिसारकेः तबन्वप्पापदपावो
श्रीसहगरसः वेलेः जोकमारिः देल
दपदाःनहीसाकेः कहतः कंवीरुवो
साधाकोः तबसेराभनुसाकेः गा

गगन मगन कली
केन मन जादि काग तु की गु देस्मा: त बल गु
पवनु: तबल गउ देस्मा: रहदि
कोगतु ज्ञान केगु दस्मा कीनी:
गुदी आजोडि पवन मगदीनी ॥
गुदी ज्ञानव डी: नवनि चबोले: ॥
बाधी साधः षमन मके: दोरे: ॥२॥
रहगयो: पवनु: गुदस्मा: ठहरानी
मेरी मेरी: करते: चलिगयो पानी ॥
कहतु: कंबीर: आकवातु सन्वारी
षनमे: छाडु चलो: तोंका रीमा

॥श्री लाल जी सहाय ५

अथ गंधक मारण दी विधि लिखी

। गंधक आवलेसार पाउ ॥।-

। पालां मिटी दे ४ पके

। पाली चीनी दी १

। लिदि घोड़े दी सुका १२ · मरां

षदि षटणी पुलांण गजर ६ वी

षदि षटणी डूंणी गजर ३

मिती चेत्र दी संक्रांतो १६ बणी

के रंघिर दी १ कढणा

गंधक मषि घतणी घितु नालि

मिलटी प्रमांणु मासा हिकु लेवे

श्री [illegible]

कवलनहुतैः वाक्सदेवः वेश्मौः पं[illegible]

धंडैः अन्वैतैः संचन्चक्रैः पा[illegible]ः तमवै

मड़ी मरनः तव भुवनैः वैः १ ॥ ७८

39

श्रीलालजीसहाइ ॥ ॐ नमः
याजबराइलि बाल्के: याबा
सत ॥

८	१	६
३	५	७
४	९	२

२ ॐ गु [illegible] सिद्धि याबेग
[illegible] बालि
[illegible]

१ फुका १ फ बी १ म द्यू

किकुलषु पंजवी फजार ॥

लषण तषाजपु समानिकर
णअलावणनहि मूनाकरणी

॥ श्रीगणेशायनम
ॐनमः॥सिधं अआइईउऊ
ऋॠलॡएऐओऔअंअः कष

40 ਸ੍ਰੀ ਲਾਲਜੀ ਸਹਾਇ ੫
ਅਥ ਤੇਲ ਲਿਖਤੇ ਹੈ
। ਸੂਗਰ ਦਾ ਮੰਸੁ ਸੇਰ ਪੰਜਿ ੫
। ਨਰਤਾਲੁ ਪਾ ਬਰਗੀ =
ਨਰਤਾਲੁ ਕੁਟਿਨਿ ਕਾ ਕਰਿ
ਲੈਣਾ ਦਾ ਸੂਗਰ ਤਵੇ ਵਿਚਿ ਪ
ਤਣਾ ਘੜੇ ਵਿਚਿ ਵਸਾਊਂ ਦੇ
ਹੇਠ ਤਪਾ ਘੜੇ ਦਾ ਮੂੰਹ
ਜਿਮੀ ਕੇ ਨੇ ਬਾਹਿਰਿ ਰਖਣਾ
ਜਾਹਿ ਤਿਜਾ ਰੂਪ ਵੇ ਤੇ ਦੇ
ਸਪੀ ਸਪਾ ਤ ਸਪੀ ਵਿਚਿ ਘ
ਤਣਾ ਸਪੀ ਸਪਾ ਦੇ ਮੂੰਹ ਬੰ
ਧਣਾ ਗੋਟੇ ਮਾਹਿ ਦੇਨਾ ਲਿ
ਖਿ ਬਦੇਗਿ ਵਿਚਿ ਪੂਰਣਾ ਬਿ
ਚ ਡੀ ਸੇਰ ਪਕੇ ਰ॥ ਦੇਗ
ਵਿਚਿ ਰਹਦਾ ਸਾਗ

श्रीलालजीसहाइ ॥

१ पिपलाँ सिं स्याही १

१ पारा सिं स्याही १

पि पला पु सं बणपं पांली

सिंस्याही र जहास्यिस्याही हिं

गि कठण षरलिहि कसुत

र का सी हि होइ करणी ॥ १८

३११	३३
३१२	३४
३१३	३५
३१४	३६
३२१	३७
३२२	३८
३२३	३९
३२४	४०
३३१	४१
३३२	४२
३३३	४३
३३४	४४

३४१	४५
३४२	४६
३४३	४७
३४४	४८
४११	४९
४१२	५०
४१३	५१
४१४	५२
४२१	५३
४२२	५४
४२३	५५
४२४	५६

४३१	५७
४३२	५८
४३३	५९
४३४	६०
४४१	६१
४४२	६२
४४३	६३
४४४	६४

का [illegible] :आगदी जोति: दरी आउ जिदा
हि ल आ इन्यु कोई करि मधे: जाडि [illegible]
जोकरे ते री निंदा उतरा द णि एगा पूर म्या
पछना चारे वक नउ षंढ निवंदा: कोतक
व जगत मेलि ले हि मगन: एक लहे सो
मुनर लरंदा ॥१॥

१११	१	१४१	१३	२२४	२४
११२	२	१४२	१४	२३१	२५
११३	३	१४३	१५	२३२	२६
११४	४	१४४	१६	२३३	२७
१२१	५	२११	१७	२३४	२८
१२२	६	२१२	१८	२४१	२९
१२३	७	२१३	१९	२४२	३०
१२४	८	२१४	२०	२४३	३१
१३१	९	२२१	२१	२४४	३२
१३२	१०	२२२	२२		
१३३	११	२२३	२३		
१३४	१२				

श्री चरनलाल सहाइ ॥

कबित लिख्यते ॥ नाई सोई जाके नाउ रहै
। जाके नाउ नहीं सो तो काहू को नई आ
॥ जोगी सोई जाके रिधि अरु सिधि । जो
रिधि न सिधि तो लोकु ठगाऊ आ ॥ सिधु
सोई जाके रिधि फुरे । जाके रिधि नही
सो तो पेट न रहाऊआ ॥ रूपु सोई जाके सी
लु रहै मनि । जाके सीलु नही सो मेजारि
चिकताऊ आ ॥ जूगे जो बाई सो मी
गे के लालची । मीगे न होइ तो षा नम्य
लई आ ॥ १ ॥ इक रती कर्म की न चीन्ह
मना चातुरी ॥ पुस्तक पुरान पोथी पा
टरी बधा पर नारी । कागत के पात नी
घ पढे ते दिन राती री ॥ बाचत व्याक
र्न कोविद जन लमगीता । सिमृत पढ

काच कथा पढ़े न ली जाति री ॥ सा
समूह पढ़े आगम विद्या नै जानै
चुरा रखातुरी । परसराम सोई विसे
षि जो विधुना लिखो लेषुरी ॥ २ ॥
सूम ता घटी हद कवकी मति घट
हइ ढ्वेषी हि मति न हो तका हूअव
नीसकी ॥ यको रागु रंगका हूरीज
चे कोन अंगा । गुनी ढोलत नेजंग
जी उगावाई मन नै सीसकी ॥ पिरसपान
जो ईस्ते ईप्युज ता न ग्याति को ई रुज
कारी सोई जो ई कहे कूर ग्वीसकी ॥
घवक के मिटी चिष्वो ॥ कठ एकोकी
माने विद्या । सज नौ अति छा पढ्‌इ वा
जा दोसकी ॥ ३ ॥ चुपासि च ... नलीसी

घुसि [illegible] नों जाने ॥ चुपराजे कों [illegible]ली न
उ अन्याउ पछाने ॥ चुप चोर कों [illegible]ली
[illegible] परमंद्दिर सु जे ॥ चुप त्रिआ कों [illegible]ली
[illegible] तसों नलुजे ॥ इक पारधी च न ने
फिरे । इक चुपसों नी करे ॥ कहे गद [illegible]
नजनो ॥ मुनी चुप क इसे करे ॥ ५ ॥ नाद
श्रवन धावंत [illegible] जे । मृग प्राणत तब न
॥ [illegible] सम [illegible] ब्यास आलि मरे ॥ बि
न [illegible] ना । हि [illegible] स्वादृ विलंगि । मीन दि
से [illegible] ती ॥ लो इन लछ पतंग पड़े प
[illegible] पेषती ॥ [illegible] मीन न वर कुं
र पतंग । [illegible] बिन सेइ कारसी ॥ चि
[illegible] तोइनों ॥ [illegible] चेरा बो अ
[illegible] बसि ॥ [illegible] च हूं जु गइ क च [illegible] कडी

नाहिन उकडी बहुतरि॥ तबिमनं
तरु होइ टरे जब पंचम मंतर॥ त
ब करें इंद्र ठकुराजु राजदस धकें
ज भात तब लेइ विलासा को दिवस॥
[illegible] सइआ ॥ ऊवंम्हस त्नामरें वि
स्त्रों मरों न सिधिसे॥ रसक बितपि
ल त्नने। तिन्हका तं चेत नहीं गिरह
कीयो॥ न रोक्या गम्यो। मूंढ मन॥ २१॥
समें मेघ बरखंता। समे सिर हूता त्सनेफ
ला॥ विणपा नी समे। समें हो तसे ब
ला॥ समें सिध त्नी मिलै। समें सा रू
ी सुके॥ समें जीत त्नी घटै॥ समें
पंडित त्नी चूकें भा को ईर [illegible] नि जो स्रा
इसमें तें। समें पाइ [illegible] [illegible] जांग गिरि॥

नंदन्नटल इव जानि कहु । औ कि जे
सो सम मे सिरि ॥७॥ चीरी न ही चौषर
चपल पंषी सु कचाति कच कोर न ही
। न ही तू तो षरे ॥ मीन न ही मेढ
क मराल न ही । मा [illegible] ग ज न ही । सिं
घ न ही न यो सार दूल तू तो न रूरे ।
कहे [illegible] वि गंग पूते चे त क अचेत पि
ढ [illegible] रे क छूतर चेता री तू तो त रु
रे ॥ मरन जीवन की विचार सार
ह [illegible] देषु [illegible] स्थान करि से के व च
तो क रूरे ॥८॥ मानि च ड्यो [illegible] यो के
बे [illegible] यो ह रूप व न विछे । फलु न लगा
पछु पायो हु ह [illegible] त भ ड ॥ जप त प

मधसुकीरत अलप अति। अति तघ
न ऊतजत जोगान जु गत मइ ॥ साध
की बलीज की अउ चका जगा ङगाई।
रांम नाम निपट उपायो हइ उकत म
इ ॥ ध्यान न रयो अंतरिख बानको
वीलं चु कहा। राक ह्योधरा विडेम
लइ गयो मुकत मइ ॥ ५॥ ल... हीले
हु मिलो हरि प्यारि जू। अ तु हो सो तो यु
हइ ॥ अब हइ उजा उघरे तुम्ह षेलहसे।
हमिल छ लछ हइ ॥ साति की बा तिअ
जाति कहोंगी। अनंत मनाव त दष
पुइहु ॥ मेरो न लोक हु मानो मै ह
नानन तेरी सहं तइ मोहिली जो हइ ॥ १०
सा रिस्यारी सवै अंगमिली पूछत हइ। ते

इलाकों। मजने की मुहब्बत सों क्या द्वाल
छुपायों है॥ यह तो काला जदु सा कि छू
चूत की दृषा ईद्वे ता है॥ कंचन जइ
सा अंग कि उमलंग सों लगाया है॥
तू तो खेल चंपेल की कली। अंमृत का
रसु ले प्यास कों पिलाया है॥ राम
राइ है उन कूं सुनाउ ती म्यों सम्चार। मु
रामानों जिस की हम तालिख्यी। से
ई ढूंढ पाया है॥१॥ यह तो लोकु
अं घला। अजहुं न ही जानता है॥
मजनू मजनू नै मुकामु। मेरे अब
न मों की आ है॥ जानि कुरस्या नु
रो। सूफी की सूरति पारी। साहिब्बे स

ना न मो कों द्वेष न कों दीज्ञा हइ ॥१ २॥
कित आसू चल इसी गकी ठोर ॥ हर्न च
त्त परवरदा संधि ॥ ना चत कूद मकर्त
निसु जोर ॥ पूरम्च लेष मिटते हरनहि
ना ॥ तहा क्लिसा तपरी गलि दोर ॥ म्च नम
रुपकरि षाटि परि ढास्वे ॥ उलटि राखे
पीठकी ठेर ॥ वइ तू दारि संजा तिन इ
न जरि रोव त ॥ अङ्गसे आसू चलत सी
गकी ठोर ॥१॥ अंग ॥ त अग ॥ घ जो घ ।
मारि ॥ म्या सुलु स्यो ॥ तुल्पो ॥ गाजुल
का मुंच कायी उच बानी अतु हइ ॥ दे
षु मोरो महालु षुत्ये म्यालनी द्विजा तता
लसु त ॥ तजेन गृहा रज मप अङ्गसे गुने
यतु हइ ॥ सेवक केके प्र मु रघुनाथ के

46

प्रताप। आगेतोमैपुरषतुरह्योनाहि
नीत्रै तुहङ्॥ ष्चिनारांमसूनेघामतूतो
ल्पाचौचोरचांम। ओरेमोरेनहनारित्रै
कुसेआनीयतुहङु॥१४॥ जगतिजगाव
तकेसीसकोईसमहिमाकरे॥ सेसकेसी
सपरिघ्यानुच्यारे॥ कंवलकोंबेधिकेबिं
म्हकोंनेहदिके।कामदलुजीतिकेतोघु
कोंमारे॥ पद्मत्र्यासनुकीद्रापवनुपर
चाहीज॥ गगनकेमंडलमोंकोईमदन
जारे॥ मुकितिकीपीठपरिकालुहसव
रहङ्॥ कहतकंबीरकोईसंतजनुजग
वरी। कर्मकीरेषपरमेषमारे॥१५॥

कवितु॥ मित्रसांचु दुर्जनप्रता
पलो जीवितु दीनो साधसेव
गुरुदेवप्रीति द्विजआदर की
नो बंधवसमिपपीप्रजुवति
अतिप्रेमवढंदे। विद्याबलि
बुधिवान मूढदुरकथासुनाइ
रसरसिक उग्रउसतातिकीदे
सीलसकलजगहेतवसि।
वसिकरनरीतिटहकाा सु
कविकहतचारपटअष्टदस
॥२॥

47

अथ सुदामाचरित्र कवित्त बिहारिदेरामलिष्यते

॥कवित्त॥ माधौजी के गुन गाय सुषपाय पाय अ-
नुरागे रनि मुनाय लेष नाग हूं से हारे हैं ॥ महि-
मान जानै सुक नारद औ रु वालमीकि ताके
कहिवे कौं सौ मान सु विचारे हैं। जैसी मति मे-
री कथा सुनी है पुरानन के रीझि हितं ती सुदामा
जू चरित्र का सिधारे हैं ॥ तंदुल लै चलै केसं ह-
रि जू सें मिलै पुनि कैसें फिरि आपनि जु दारदु
विडारे हैं ॥१॥ अथ कविरुवाच वर्ननं ॥ कवि-
त्त ॥ छाह को छानो छानो ना ताके षाटो न बि-
छौं ना छेला आसन विटे ना सुषासादानु दषि-
ये । तो जन को दोना दुबी देषान सुनैया ना अं-
ग अंग नि कि टैं ना मा सुमा स कहूं कहूं पाविये
द्वै डेरे नांघर ना जिनको कभी नांद हबीं महादा-
रिद को छौं ना विमाविये देव कौ दिवे ना पदुपी

लछुतिमोंनायाकोमीलुहैसत्लोंनास्यांमुतोंतें
दुषखेकियै ॥५॥ अथ कवित्त वाच वर्नन ॥
कवित्त ॥ रहैर विदारिदमैदमकोनदामस्वि
नुद्रबैरादिनहीदिनदीनव्रतलीनोहै ॥ दी
नवंधुकरुनानिधानकाकनामआमप्रान
हैवमतमानोबापपनतीनोंहै प्राननाथपुं
दुरीकनैनमोंविचारप्रीतिकाईपुरिनारिहि
योप्रेमरसलीनोहै आपदिननीकेअवजैहैं
दृषजीकेतववैनीढिगपीकेबोलिवेकोंमन
कीओहै ॥२॥ कवित्त ॥ लोचननवारेंपु
जोरिनाइमाथमनिआननाथव्रजनाथ
सोंतिहारीप्रीतिहै मातजगकोलोकानि
[illegible]तताकेत्रातनुमनषनिषरात प्रानवड़ी
विपतीविदै [illegible] मानकरमांगतनापिवै
[illegible] वातरेमपांतुमारिप्यारैदृषजीति

रै अगारष्प्रलाकरकेपुंडरीक पोछौजा इ[illegible]
सथामघांगनरीकौंननीतिहै ॥४॥ अथडा
सलाभिवाचवर्ननं ॥ कवित्त ॥ नेकु वात
नां मैतैं तौ मां निहौ अनेकमुष कांनदेमु
नैतें कांनरूप रूपलारहैहो ॥ वारिकानि
हारें कचु वारिकां रहै मुष नेकु मीमना
ऐसौ मुछ्छानितना रहौ दीठदे षड़ी ठि
नपरै जो ठीठ वारि दहि डौर सीलजौ मीपा
वै दषननपाइहै तडलनवाधे मुषपंचमु
मनीतहैहो तीन लोकमाफनि नवाधें
घर आरहैहौ ॥५॥ देहिदेहि कांहेकै को कर
तुपियवेही काज मां मको मनेही बाधि
दैरां दुष्ट मकहुहै यों ही षौवौ जनमु[illegible]
नौ जगु नाथ जैसे आपदा हरनु जैनेजगत
कहतहै मेरो कहे मां नियातं जातें जानि

सुनिन उमहतु है ।। जैसै उठि दारिद्र सानुं
ष पाउ ज्यों कौं न काज अंग विपदा सहतु है ।
।६।। कवित्त ।। अथ सुदामा उ वर्ननं ।। तंजे म
हिले जति है बवरीग वारि मारि धारि काम
दार जू पै मांगने के काजे जू रतन ज्ञटि लज्जा
मुकट मरीचिका मों चरनक मलतत्त पादपी
ठ राजे जू मों मं दीन दुखित मलीन की ह लाव
मान्दारि दीह मारतन को अमेरिया न्ना जे जू
लटी मीतिपटी फटी गजी की पिछौरि आम
हो मन जानो बाप ही सिवाई किधौं आजे जू
।।७।। अथ बुसनली ६ वाच वर्ननं ।। कवित्त
क्रव दिब ताऊ कि बिजी चंदो सुनांऊ ता
हि राजा जन पर्यंक तसु प्रेम की ललकी मैं बैंडकी
मितार बजी मंकर मैं सुषदाई पंडु पुत्र पांचऊ
तो विदुर [illegible] कौ मैं [illegible] कता रिद [illegible]

नकी आल वाल मुकुता प्रवाल लाल न
रहैं छलकनैं न करि बिचारु जारु दारिद
हि दावा नल आर मेकि छांडे हूं जे पारसप
लकमें ॥८॥ अथ सुदामा उवाच ॥ कवित्त
बोलै सुमन कांइ नारि बावरी तेरे धौं आइ
भीत निपैं मो मैं सुकपूत निकौ रांउ है गिरि
हूं ते लारे जे सेदारिदी ला हमारे लागद द्वि
ट को रेक हि तिनैं कहां वां जैहै बैठे कौन राटी
मात पेगारी कोटी जाके आपदी है भीटा
सुदामा मेरा नाउं है जो लौं गई है स्याम घर
मांगे परि टोसी बकन तौ लौं मां गिली जैसा पे
कजानि की छांउं है ॥९॥ अथ बुद्ध णीउ वा
च वर्नन ॥ कवित्त ॥ कौन मे लाक लंकु चढि
जै है जाचे जदुनाथ जा हि जगु जावे ता हि
जावें ला जु आई है सु मैंरो ता गवा लौं सुतो

नैन निमिलाइयो आजु भोजन करत नाह
लाजु मानी बाही है जा दिनां तें ब्याहि आ
नी पिय सीन कटोरा पानी छांनी की मखांह
मीत कालिनतु लाइ है आ दिकु लनारी:
अरु पारी है कुमारी जू सौं सौने की कटारी
काहूं पेट मैं धसाई है ॥१०॥ अथ मुग्धाया
वा च वर्ननं ॥ आवति है लाजु नारी जात बु
ज राज जु ऐब सन समाजु देखि षेरमर जाई सैं
पके है पिछोरि आपु रानी फाटी है रेठार ओढि
औ निसा कों प्रात वासौं उठि न्हाई है लैटी पै
सी नांही जु लै हे है लगवंत जू कों अंत कुल
रहै नारि कौ लैंों मनु गाई औदे रूप रमा सु
जो लैं नाम निमै श्याम तौ लौं बडो उपहासु मं
जिमीत निसता खि ॥११॥ अथ प्रासलौढ्या

च वर्ननं ॥ कवित्त ॥ बात कै कहे ते भुरासानत

हे आनननाथ गोविंद सेती तहां न वडो दुष पाइ।
औ घर मैं कलपतरु कामधेनु पारस सुमेरु से।
विसारि आन नृपन सताई धाम मैं तौ राज को।
कनुका नाहीं सांची कहो जाइ कैयो जहां तेव
षु पाइ औ ग्राजुही को तीषेतट लैकुल तरैया
स्याम जू को लोठि ग्रालैं कंत एक दंत को मन ना
रै दै ॥१२॥ ग्रथ सुदामा उवाच वर्ननं ॥ कवि
त्त ॥ स्याम सों मिताई मैं तौ जब तें जनाई या
सों तब ही तें काढिवे कों मेरु पोछ परी है वै
पा के कहि मि बालि हो न जानत हो ओर इ वक
लन कानि कार तां मय हो औ धतरी है सवा
घा डिदेइ गा गैलौ रि ग्रालै गाठी लई हरि
है वलाइ वे की कष्या कंठ करी है वे ठलतठत
लात पात सों पंच अभ्रात तप सो साउ धांन औ पां
च ना वरि की घरी दै ॥१३॥ कवित्त ॥ का नरे

तिहारो अनुग्रह सो स्नान जात तट गंगा जू के च
ले जात पानी के संपी जिये जा अघ टिपात कै सं
बूझिए धन को एक भाम बाम्ह देह राग हीमें दी
जिये ।। बूझिए तमो अधारत हों है कारन थाकनी
उमर तप ताकों न लाज की जिये दारिद्र उरग
नामीड मो हे हमारो स्वामी पगरूड गामी ना
थ तुम हो ते जीजिये ।। १४।। अथ कवित्त वाच
कवित्त वलो देस दामा काहि बात घर रामजू
सीमा जिहोन दामा तो मांमाची अ कहतु है
जो ऐसो हि आपुन तें बूझि हैं वैकुंठ नाथ त
ऊ हौं कहां गो हरि सुषी और हतु है अज हूं वि
चारि देषी सबी जिनि टारि जिनि पठवे मुरारि
जू पे आप दाम हतु है विन दाम धाम किहि
औ हो । लेटि स्याम जू को तेरि कहे राम को लो
ठि आग हतु है ।। १५।। कवित्त ।। लैहै टि कि

घूटली नीलौ ठि ग्रासचातिनि मुमानुदसु
दामा मुष रूखो सौ मनमा योहै ॥ कांपि उठीक
मलाकौ बेरु कुमिलाइ गयो बासुकि कल
मलाइ मेरो लोक पायो है ॥ सिंधु सकुच्यो मो
मेरु मघवा लजानों हरि मनमुष हेरि हर
हीयो हरायो है ॥ चौंकि परयो नारद चपरि व
ल्यो ब्रह्मलोक चावक के चूंगी चतुरानन हू
मायो है ॥ १६ ॥ कवित्त ॥ रामरोम हरषत नैन
नु जफर कत चल्यो जब कंत मकंद तकै मन
रकै ॥ मगुन सुदामा जूको औ सोई व नाम विधि
जाते कबू पतीनि षित्यो पारे हेल वारके गयो ती
नि जो जनक कीनो मांगि सो जन नन्द प्रभु मों
पराज नुदे पारसु मापार कै रे नि व मिरदे सोर
न पंगेल गोहे दिजु पमी वि धिता रुपो जार ना
रिनौं रिपार के ॥ १७ ॥ कवित्त ॥ काटौं हिये ह

रसु हित्लग हरि हेरिबेकी तातें दिजु धारिका द
रबरीनु भावै है ॥ लपनु कुचीलु कुलदारिद्री
क नौडो कांमी कौं न पुंज जातें दरसनु पावै
है बांलनी बिचारी वडा काम कीनो मेरें गा
गु वाको पकु मांगिबो न मेरे जियलावै है
पांछें धांम रांम रांमा जपमाली लै के साम
धामनि के काज कुलदेव नाम नावै है ॥
१८ ॥ अथ कवि उवाच वर्ननं ॥ कवित्त ॥ ना
थनि के नाथ महाराजनि के महाराज जिय
नैमु दामा जू कौं आगमु बिचारि कै रामा
रुकमिनि निमत लता माल छम नाको आलि क
पाकौ कहन लागे नैन जल ढारि कै षवैकौ
नरोटी पानी पीबे कौ न लोटी हायौ ... दमा
वाटी नारि नि ज्यौ माये मारि कै मंग कौ परै
या माहि [illegible] का

52

लिकुजमे टिहैपमा दिकै ॥१८॥ अथक
बितवाचवर्ननं ॥ कबित्त ॥ सोनेजपमा
लीधांनुकीनेबनमालीपटछीनेफेटषा
लीदिज्ञद्वारावतीआयोहैमनमैंविचारै
कामोंकहैरांमरांमजामोंमपनेमैंसुष
करतादिषरायोहैकंचनकेधामनसुषा
मनसिंघासनसुमधामआयेतपजमानो
स्वामजूतेंपायोहैबेरिनिजघरीआंबि
चहूंघांहोंनांकिदमोदषिकापुनीबहु
तपछुतायोहै ॥२०॥ अथसुदामावाच
बर्ननं ॥ कबित्त ॥ पाइकआपारनरिहैपुर
द्वारहयहाथीअमवारनिकोंसिंधुज्यों
उर्मिकहैद्वारद्वारदुंदभीनगारेतारे जांज
ताललरीकरनाईमुरनाईनकोंमोरहै
द्वारिकाकेदेवेदषुदारिदुदरबारअताजि

चल्यो जैसें कैसें सोरु सपचो रहे है कौ है दि
ज राइ मैं रोगो चिंडु धरम लाई ताहा काज ला
र विकुराई स्यो तो ज्यो रहै है ॥ २१ ॥ अपघारि
का बरननं ॥ बार द्वार खल सीत माल ताल प
त्र तोरी आल बाल कंचन सवाल ताल तैसैं
जोर सि हथ्यो रिनाबी ता हथ्यो रि आनरो किस
के त्यौं त्यौं दिजु अंगि कोम माजु देखि कै डरै सु
दामा की उरबकनि सिंहासनु सहस किरणि
तेसहसगुन ता तें उ गि हरिसिरि नैन निजलु
टैरे ॥ सुदामा की रबकनि दारिद की दवकनि
गो बिंदी की बबकि मिलिनि कारि न कहो
पैरे ॥ २२ ॥ कवित्त ॥ सेटे अक बारी पट पीत
सौं लै रज झारीन सिंझारी पाइं धाइ आसन बै
ठाके दै हाथ सौं परसि वा के गात बात हू
जि ता के चरनोदक सों धाम छिरकाए हैं ॥

लागे हैं हमारे लई यासुदामा के चरन निसुजा
ते घर बैठे मेरे माथ धूर पर आवै है ॥ २३ ॥ कबि
त्त ॥ छाती मेरी रहे लगाइ मांनो राकु धनु पामत्रि
लु आनु राइस सब पटरानी घरी है राम्रा बूझै सु
क मिति है कैसे सी दूबरे मैं नाथु करांजी तिक
री है जैसी लटादसा पाइ करी है बिबाई जामैं
पसा तरि नाजु माश्नि को पलनु घटी है सत निसु
दामा सकुच नि गडे ज्ञास तत जडु नाथ नेन कि
धौं सावन की झरी है ॥ २४ ॥ कबित्त ॥ आसन
बैं गयो सबकुछु बिसरायो जब की बार बार क
यो गुरगरह बास कों तानी देपवायो माहि का
है कों कपायो कां बिकै है दि जुदि जु थाडे हरि
बातै त्रपत्रा मन की थोरी राषत हु लनु कां ध्यो क
रै संगुतवै मं गल निधांन सेट मांनि स्नी ली
दास की सतर मांदे रि गंध्यो लायु ब्रजराजजु

कौउ तद्विदो रिद्धी सैल्न दारिद्र अकामको ॥

२५ ॥ कबित्त ॥ व्याधुन आचारी धर्म्म सो धनला

सरी बेद बिधी कैंनु बारए बिचारी हाज न

मते कैंनु मोहा रूप औ न कूबरी को नामु

नुप सेई नरा जि है तिहारे धाम धनतें कंसके

पिता के कैंनु पो रिषु विदुर बंस षा पंफ लस्वा

दु मौंजु पा को हेमु जनतें को हे कैं मुं लजा

तु है सुदामा मुनि मां ची के हा पायो है लगति

ते न पायो गुन गनतें ॥ २६ ॥ कबित्त ॥ पाये

लैंष वाचे मो हित व कछू पायो दिजु करुण

निधांन यदु वात जि य गढी है लानदा कृत्त

त्यो तांतें सुदामा हर बरा स्साठिये गरी

कीगां विकां षमै तें कढी है तंदुल निसरी लाग

मराजे ही घरी दिज स्स्थ गिरि आरी मुष वढी

है ॥ पाई निधि मांव न सीदा रिद बहां वकौ बा

तनकी छांवनकै रांवन ज्यों बट है ॥२७॥
भरम करम करिकों तन रूप धरि वनज रू बलु
करि लराण छैंपैं ते ष्यानी है देषेन ऽज्ञादि दे
वदानवके वृंद घुऽमयत ममुऽतबपीठपरल्लीं
नी है जो ऽधिराधर्मु केछडाऽ बल्लि छिन कैमेरमात
त्नपैठो मतिल्लात्लचकी कीनी है ॥ देषो दिज
दसा सो ऽरमाती निपगपमा हमाहमी:
बार्हरि सुदामाकों दीनी है ॥२८॥ कबित
तो जनकरतेचलै मंगलै सुदामाजकें कोंव
लै हरिसुषहै मोचिरहैको हाल्यो। बुरे
कों मुकी नगप रुष्पा डिम्यो वो बांलनी कैं
दरसनुपावती ऽपायजाती मोहाल्यो ॥ वि
स्वकरमांमा विस्वनाथ्यां कहै हो बो ल्लिसु निरचि
हान गरु वारि कामो दिन है हल्यो। पाघी वू
जी कु मत्तसमु चीहोमवतां तिहां जतुमपे न क्यो

यौ जो त्यौं दुखी रहै तौ ह्वीत्यै ॥२९॥ कवित्त
आपु जैसें प्रान रू वाम संग। बिंजन षवाय पुनि
पाचन ज्यों नेक प्याय सुष धाम ध्याय हैं सी
त्रैसो सुदामा बहु स्रम कीनैं सोजन वत्तैवै
ठिजा म्हरि कोटि सुष पाय हैं रतन जटि
त प पपी ठौ म्हदा चौकी पर जंकन्यारे न्या
रे कै रंगार नि। वि छाय हैं पयफेन लच्छ कि
श्रौं हं सनि के प छ स्च छ ऐसे पट पर दि जा
राज जुसु आय हैं ॥३०॥ राम्मा करूप करै ग
है याही तें सुदामा कहै कहां कूरतं दुल
कहां जगत मांई है यौं न जानै दीन छंदु
तौ निप सादे के सुषं तौ नौ हैं लोक संपदानि
त्ति क करि पाई है। हरि सकुचां दि कछु दि
ज कौ भेद यौ नां दि ता ते यासौं कहै मेरी ब
डी हीनताई है दानै होजु दांनु ताकौ बांत नी

बिनांनु जानै जाकि धन जोबन पुत्नो मजा
ल जाई है ॥ ३१ ॥ मोहनी मन रूप करि उद
भिमान कालदेवनि कौ लाघनि पिऋष
रम प्यो है गोपी गोप गाइ ग्वाल गो सुतकै
काज इनि हाथनि ले वाइ गिरि मै हते ब
चाए हैं । कौ हैं ब्रजराज पर का छि था मै वा
रे और कहा लौं बिचास्यो स्वेद लाग बत
गाए हैं । सुदामा के चरन कंवल चाप घ
री चारि जां नतुं है मेरे हाथ मेरे काम आए
हैं ॥ ३२ ॥ कबि ॥ पोढी हौं पंथाइ नि पुरांनी
सीमडे इस्या तरलो रुतयो देषे घरु है कै गयो मु
निहु सौं दीनबंधु करुणानिधान बिनु कौं
नदानि दे षिज द्रवरनि करुन कुवेर सौं ॥ रत
ननि रे जडाउ छलो जन का पार ईद मृ पीदे षे
मनी ज उमन दे ह सौं ग्वार णपद न ता व्यारा

उतंगरूपक्रावैघरबांत्तनुतोनयो दिनेक
रुसों॥३३॥चातकोज्योंस्वातकैांचंकोरी
हनेंांरातकोंमधुपजलजातको ज्योंबिष
रैनडारकैां मेघंकोकलापाजैंसेंसेनजा
पितकीकैांनिसाकीजागीचक्रवाकीक
स्यपकुमारकैांजोगीतापसीसंन्यासीका
सीकेनिवासीजैसेंनिसिदिनहोंचाहेंध्या
नुधरिकरतारको ऊरापरगाढेनैनजलधा
राबाढेतैसेंदेषोचाहेंमानतापसुदापा
लरतारकैां॥३४॥कबित्त॥ ग्राटनजोंनैपै
नपाएंअतिरुचिमानेबांतकोदानजुदि न
वायोघनस्यांमहे॥ हरिनजनायोयातें
घायोदिजलायकनम्वायोंमुषनाइकंति
हारेंसेंसेकांमहेरतनजटितचोकीचोतरा
काटाह्वायाचिममतरपगनपरत्ने

मेधांमहैं दारिदकह्यौपुकारिअबहैंसि
धारनुहैंसुराजराजाजदुमारीरांमरांम
हे ॥३४॥ विदाकरिदीनैंदिजुप्रगटनकी
नाकछुलेटनुजचल्यौजियमेंबिषादुअ ।
यौहै ॥ याहीतेंउदासअनुपासनरहनपावै
याहीतेंसुषीहैंनादिककछुअैन[illegible]है
पहिलेंउबतारीमेरीबांननीषुनमहारीता
हूंकोंतौऊतरुमैंसरसबनायौहै मैजुनि
धिपाईहीसुगेलमैंचराईकाहूमैंबिना
हमारोहरिकुटंबबुलायौ ॥३५॥ कबि
त्त ॥ हरिसगगनचलतसुधिपरीनांहिं
आइगयौनगरुनिकटनिजुबासकौ ।
चेटकुसौलागैपारांसुद्वारिकाबहुरिआ
यौगोमतीकहौंहैंमिंधुसकिगयौपासकैं ।
बूझिदेषौकाहूकौतौकैयौनगरुजांहिबू

जैकहूत सुदामा देख्यो पुन्य पुंज राम कौ त्यों त्यों।
सकुचाइ पछिताइ हाइ हाय हरि तत्नीनि
धिपाइ पुरिबाद्रु नजबा मकौ ॥२७॥ कबित्त
याहीतेन गयोहो जनमत रिस्यां मजूपै मेरे
कहेसो वचनु पंधाइ नमानेहो जाइ जाइ ल्ले
रहीहीपानीन जानाजुबाजपंडी विछौरी
तिहै तौ गोबिंदुकी जानै है ॥ जैपदा कौ
चीहदेगापिनुकेछीनलैस्याहतेंछडाम
गजुरंगनूमि लानेहै नामिनीममतषेत
तेंत्रपारिजास्यों घरुयातें हाब्बवाठौर वाकौ।
कह्यौ हांनमांनेहैं॥२८॥ कबित्त॥ चौतरा
उदारकाइं चामीकरधांमकौ नेछा नितेतहु
बाइडमी ब्राई चित्रसारी जुजेंम्ब हैघर
लीतौघरकाहूकौ त्रठनदेतौहानहार जैसी
बाटीदमारिहमारी जू कुतोहेनकाहूलुह

ल्लाहल्ल दिबाइ कर जाह ल्लउ वाइ दैउ हाई
मुषगारीजू ल्लालकीम वारीउष ल्लीबकी
दल नहारी लख्याबन वारी काह्न माकमा
रिडारीजू ॥३ल्ली॥ कवित्त ॥ जा चिजा चिजा
ज मांन ग्रांन निम मांन का क्रूपरु दीबवाई बा
डि निकाबकैपां छबाऊजू ॥ हारिका भैजाइ
मुजू पैमां दबापपाइ ताकाफल्ल ल्लागेपादा
षुकै सं मुर जां ऊजू किभौम ल्लिख्या हिरु रिप
मुपल्लग्रानजाइ होनषल्लु मांन मञ्जमल्लउ
मुगाकंजू ॥ ४० ॥ कहाकरौं जाउं कहां वैठौ
कहां क्रा उंरांम रांमदेव किभौंतु मै भै मीख
र्मिछहारि का मैं जां मुष तंडल्लन वाइ
रिपारूपरि मैं नकछू मां ग्पो हारि जाइजू हार
जीरै आइधारल्ली षके कन्हका मां गिहं कांमैं
नांगतचूमुच कांजा नजाइजू न्याउं दरि

कामिघपरैपरैमूकाहूकाछानीकेतिन्ह
कासौंउड़ारैताउड़ारहिक॥४१॥कवित्त॥
आयोदिनराजलटिदीनवंधुकहांजोउ
वासरूगवायोरैंनिकैसेकैविहाइगीसो
रवैकौंधामदैननगाठीकछुदामुदैरिक
रमुघरनारिसौंनिकेतेफारिषाइगीमो
सोकोअनारीतवकछुनसनारीतवुदेते
कमुरारीमादिराजधनराइगीस्यामतेंविदा
कैआयोदछनटकानपायोकेसीसौंजग्य
रड्डुंसोइजाइगी॥४२॥कवित्तहूटीसीपी
साटपकसूटमेदमांटजगटाटकौंविकौं
नातौटकाकेमांटलयोतोटोकरीटटाव
कलीकपराबटारतुवापरीदांतीकोतो
वेंटामुतिलयोतोटोटीविनकाटकोकमंसु
लुकवोक्रोसोपलनाक्षपातजोरैसेजोडंमु

ल्लनगयोतो वाकरीकरा द्वार मामलहू
पचारिघरुचंदाकरि वोकरीनुतोछवा
रदयोंतो ॥४३॥ जरीहीजराउमनमप्यारी
हीमुग्रानननितेंप्यारीषुद्रपीतरिकीमोंं
ऊमंपुरटकी। कों बरकीकोंप्यरीतोका
टीऊतीगोरखोरतऊमीतल्लोल्लपतिरा
घतलौघटकी। ल्लाईहीपराकहीपरातपां
चपैचनिकेंमाटैवैकहीमुंगामतीकेत
टकी। डोडनिकीमाल्लहीमुगोडनिल्पै
ग्गावतिहींनारिहींनिगोडनिमुकाहूं
नारिपटकी ॥४४॥ कवित्त ॥ ल्लकिग
योमदनमदनुपरतुमडीविदांतपीमैवे
विजात्रमुयोसिरमूल्लतेंनीकेदिनका
टतुदैलीषकेकनकामांगिकेंांनद्रषु
पांऊघरनारिजतिकूल्लतेंग्रबहैनजा

नैई हां कौं नेम महल्ल कीनै कासौं कहौं
जैसी कागिरु वीतन तल्लतें ।। नैसौ तुम
नारी कहां जांउ गिरिधारी स्यां मदुईया
लीलनारी मुउ पारी काहूं मल्लतें ।। ५५ ।।
कबहूं कै मांचै मो चै कवहूं कै नैन जल
कबहूं निहारै छिति तारी मुतयो है
बार बार पौरि आइ बारदी मनु है मारुमा
रु करै जारु वारि कातनयो है हरि जारवा
टौ है जार रहै लोइ सब लोग बूझै कहु
दसु स्यां तो बाइ गटो है त्यों त्यों पछितात
मकुचाइ कछू न बनाइ नाजि जाइ त्यों त्यां
नि अधिक उघुदयो है ।। ५६ ।। कबित्त ।। जै
सी तां ति विबलाइ आंखपात चल्यो जाइ
कोऊ न सहाई ऊं वे स्वास लैलै बोलै हेउ
ऊ [illegible] बाउं सो तिन के टारि करि वांत

नीमिल्यौ पति हीनपति डोलै है आलिनु
के जूथ बनमाली जू नया कैं दीने षाली
कर कों ऊनों दिचाली पौरि बोलै है आर
ती बनाई साजत षंड तें उतरि आई आजु की
घरी सुहाई पाई निरमोलै है ॥४७॥ सची
सी बिराजै रारि चारौं ईरवैं रढार बारिका
रि श्रांन तिय सन मुष धाई है । आपुन अंके
ली संग कों ऊन संहेली मांनो फूली है चं
बेली सांझ औं गन पवाई है । किधौं साजि
नाइ मति लीरते इराइ तातें आपुन बुलाव
ति है सुदामा जू गुसाई है ॥४८॥ कबित्त
आलिनि के जूथ ज्यौं ज्यौं आदर सौं बोलै
आरत्यौं त्यौं डर पाइ आजै कौन पगु देतु है ।
बारिका के राजा के मिलै ते लूटि लीनौ घर
रां नी कहा लूटैगी कत्यौ न मेरो षेतु है सांस्कौ

कहानातोतुम जाइकहै बातोम्हानि म्हानि
गई मातोंम्हि हिमैमे मंघरहलेवुहै ॥ ४९ ॥
परिपरिपाइनुउपाइनुजनेकवसधामसा
मिमाषतेनुहाथनिछुवायोहै चांइनुबं
धायिनुपडायेनिविमास्यो बपुचांइनु
मैंनांइनुउवटिकाढवायोहै वंदीजन
गांइनुकोसेवामांनिहायो धनुमेवाईयौं
कृपाइनुनेदेवाघटिपायोहै दोषिपेममाजुदि
जराजुकहैनारिमांचीम्यांमकोमनेकुरा
मुतलैकामुकायोहै ॥ ५० ॥ कवित्त ॥ १
पाइहीनपानहींजोवैहै पाइक्रा नहींके
दानहीकोद्वारवारमानहीनडोलते ली
बचहूघानहीतनज़मांवुबानहीजुक्रा
पदादफानहीविनांहीजीनबोलते । म्रा

पनेक्रापानहींजोवचननमानहींइमारे

कहाभा निहोजं जा मुष बोलते जाचैं
हरि कान हीं मुदामा जू वषा न हीं जे दीन
पीर जांनहीं व चा वेडु षटोलते ॥५१॥ द्वा
रका हूं दुतीन गोरे तोरे बाजत हैं न्यारे न्या
रे चौक चूनी सों चमकि जरे हैं। चामीकर
गारे चित्र सारी चौषडी चौ बारे वारें दीप
ज्यों कनक कुंतन नेरे है। टारे दुष दरिद ति
हारे मु निप्पारे कंत देव रहे मारे हरि दीन
नि कौं ढेरे है। पाई निधि स्यौं परी न प्रीति ह
रि स्यौं करी तिहारी बाहीं जो परी ते स्यौं पुरी
से करे है ॥५२॥ कबित्त ॥ कंचन की प्यारी
जारी परग परग न्यारी पत्नि का सु धाम न
मैं आरु कंचन षरा जै है। हाथिनु के हलका
हजार वार दीसतु है घोरनि की दौरी दौरा
गिरि तचमा जै है। स्याम हम जाली नेरी कौ

सींदसाषाली जाके आगे गिरि छोली
हूंकी संपदा चलीजाऊ है। सोतो सिभुपा
रकी किसो कुजगचारि की किंडूवेहेप
तारकी तो संपदा रहाऊ है॥५३॥ जाके
दरबार कबि ब्रह्म व्यास बाल्मीकु ला
हा हूहू गायनु सुके मेंकेरि गाइवो। रु
द्र सें महा सिंगारो नारद सें बीनधारीं
सासी। निरतकारी सुकसों पठाइवो वै
कुंवनिवासी आजाइ सुरतरु धामधां
मरेकों ननीति है॥ ५४॥ अथ कुलणी
उवाचवर्ननं॥ कवित्त॥ नेकु बात मांने
तें तो मां नि है अनेक सुषकों नंदे रतयों
ब्रजवासी स्यां मराधिकारंवनराम। बिसाई
जुगाइवो। सुदामा चरित्र चिंतामणि मन
साधारूवधांनकं वकेषलीतारा बिसाधानि

॥५५॥ इति सुदामा चरित्र [illegible]

गुरदेउ नाम सत्यि: श्रीमहादेउ पारबतीग्रा
न नाथ: श्रीमहादेउ की प्रीछा: पासार कु
चंदन का स्थे. हि कु तैं कूचउ रासिकर
णा चउ रासिक रिंहत दापासे उते चउ
तरफे चारि अखर तिनि घेप्र घरे चउ दिनाल
आबदज: पस्चार अखर रक तचंदन देप
सेठते तिनि घंणे दि चारि अखर चार तरफा
पासे देउ तलिंभे हि कुहि कु अखरु: तरकं ने
अपरं तिमं त्रुपड णापासे उते वा के ७ पउणा
मंत्रु लिखा महादेउ पारबती ग्रान नाथ:
मंत्रु पडिआ न्नाउ न्नणा वारे ३ श्री वारे ड
ले ते ढाले दे अखर चित तरष ते अखर उत
वाचिन णा ढाले दा: तहकं नेउ परं तिडी छा
दे घिपुछि देव ता: जेई अखर ढाले दे चित
थि थिते विनि जेई अखर प्रीछा विचि देष
[illegible] उपाडि कारि पुछि देवे ॥१॥

अथ अर्थ मुनि हे गृहस्थ कः जो तुम चितवत हो

सो कारज सफल होवेगा बहुत सुख संतोष सो

कारज सिद्धि होवेगा धीरज की पतेर सर्व का

रज सिद्धि होवेगे इछा पूरन होवेगी ॥१॥

अथ अर्थ ॥ मुनि हे शिष्य कतेरे कारज सं

मानिकी वेरे अपराधुत्न गनही कारज समा

निकी वेरे ॥२॥ अथ अर्थ ॥ मुनि हे शिष्य वं

जो तुम चितवत हो तकारज छोडि अवर का

रज करो: तुमरे वंधिव बुरे हैं: अवर का

रज करणा: इहे नाही करणा ॥३॥ अथ अ

र्थ ॥ मुनि हे शिष्य क जो तुम चितवत हो तो तन

छ [illegible] पुत होवेगा तुमारे तार्इ बंद तुम दो

[illegible] सर्व सत्रु समसे दरेगे ॥४॥

अथ अर्थ ॥ मुनि हे शिष्य क जो तुम चितव

त हो: सो कारज करणे दे जिन सो तुम प्री ति

की [illegible] चाहत हो सो तेरे मित्र हैं तिन का हि

सा [illegible] नाही करणा: आपनी चितवने मेरा

हणा: तुम पुन्य करते रहो: तुम [illegible]

॥ अथ अर्थ ॥ मुनि हे शिष्य

होवेगा

कजो तुम चित वते हो सो कारजु कीये ते उपद्र
द्रु होवेगा: सो म्रनुष मन मे कांम्र धु नहीं तु
म पकेनाराहणा: पिछले दिन पीड होवेगी
अब दिन नले आये है ते रास होवेगा ॥
ह ॥ अदअ ॥ सुनि हो त्रिछक जो तुम
चित वते हो सो कारज सफल होवेगा चि
ता मति करो: तेरे उदम की विलम है: वे
ग उदिमु करो कारजु सफल होवेगा ॥ ७ ॥
अअब ॥ सुनि हो त्रिछक जो तुम चित वत
हो सो कारज की विलम बहुतु है: पतीका
रजा [illegible] सरीषा है: तुम अपनी इछ्या कर
ती: टिसा सु किसी पुरष पतिना हो [illegible] णा:
चेत नरा हणा ॥ ८ ॥ अपद ॥ सुनि [illegible] त्रि
छक जो तुम चित वते हो: [illegible] चित की बहु
तु [illegible] है: तेरा मन बहुतु उ डो डो डता
[illegible] कारजु सला [illegible] पती कारजु [illegible] डि
अव [illegible] कारज करणा: अब गंडव देव की
[illegible] कारणा ता ते कारजु सिथिल होवेगा ॥ ९ ॥
॥ अदज ॥ सुनि हो त्रिछक: तेरा चितु जो

आगेया सो अब नाही तेरा जीउ न मनो
है सो लगु दूरि कंरि: तुम आपने जी अ
कों दिड़ु करणा एक मन गापी रहणा कार
जु तुरतु सावेगा ॥१०॥ अजउ ॥ सुनि
हो सिषक जो तुमचित वत हो: सही तेरा का
रजु सफलु होवेगा परि किसी बंधव का द
रु करणा: सुमति कों पकड़णा तिसि सु
मति के प्रसादि कारजु सफलु होवेगा
पहिले दिन तेरे चिती तु होए है: अब दिन
नी के आवै है उतला करेगा ॥११॥
आबब ॥ सुनि हो सिषक: तेरे ... राज
सि थि होंवेंगे ते ... सम उतम कोंब
रावंछता हुइ तिनका विसास ना
करणा ... उनका बुरा होवेगा तु
म आपणी पारी लतुः करणा तेरा
मे सर तला करेगा चिंत मति करे ॥
१२ ॥ अअजा ॥ सुनि हो सिषक तेरा
यह काम करु ने हइ: जेर से ससा हु
ता ने हु ... ता ते मन ... मन ...

63

कछुकारजुहोइहेंगा ॥१३॥ अजअः

सतिहोप्रिछकजोरेका जहोवेगेदि

नोपैःकारजुसिध्रिहोवेगाः धककं

धगावेगे तेरेजोबंधिवस्तुः तिन

ते तेराकारजुसफलहोवेगा ॥१४॥

अबअ ॥ सुनिहोप्रिछकजोतुमचि

तवतहोसोतेरीआसागोविंदुसंपू

नकरेगाः तेरेमनकासरुसतमिटै

गाः तेरेगतिसफलहोयगेः तेरेमनका

मनाकेकारजसफलहोवहिगे ॥

१५॥ अदब ॥ सुनिहोप्रिछकजोतुम

चितवतहोः तोलछमीजुजासम

सपूनहोवेगाः सर्वमनोलीबसिहो

वहिगे ॥१६॥ बबबअ ॥ सुनिहोप्रि

छकतेरेकारजबेगिसफलहोवेगेः

तुमरदेनकीसुजाकरतेरेहोति

देउ ते के त्रिभ्यादि सर्व कारजसि
धि हो वहि गे ॥१७॥ बबआ॥ मुनि
होत्रि छका तन को ... हो वे गो ...
सीका विसासु नाही करणा: जोति
के आगे आर ल... कहते है: ते तेरे
सनूर: तिन का बिस्वासु ...
रणा: ऊला विसास दूजि ...: का
...: उ बिसासु चिति राखी ति ... ते
कारजु सिधि हो वेगा ॥१८॥ बब
मुनि होत्रि छक तुम ज बन की आ
...ह ते हो: तब ... गठि च लो ऊ लागे त
...ष लो सु हो वेगा: सर्व कारज ...
धि हो वेगी ॥१९॥ बदब॥ मुनि हो
त्रिछ का तुम आ पु...: मन का की आ
... हते हो ति सि निमित ऊपरि ...
चाहते हो ति सि निमित ऊपरि ...
...: सो कार जु मन जे अनंद सों हो ...
... नी सि कों ... ता: गोविंद का ... ते

को अपराधु नहीं ... ति ... ना

रउसिधिहोवहिजे ॥२०॥ बजब ॥ मुनि
हे श्रिष्ठ कजो तुम चि[illegible]दे: तुमनम
[illegible] र्च [illegible]ना[illegible] छोडि देवे पकमनहोइ
रहो. रकाचिंता तेरम नमो [illegible] : [illegible] चि
[illegible] जनतेहो: मनुम कों [illegible] जमना
[illegible] तमन [illegible] कोंदूरि करो काराजु मफ
ल होवेगा ॥२१॥ बबद ॥ म[illegible] हे
श्रिष्ठ कजो तुम चितवत हो मो [illegible]
चिंता [illegible] तुम थी [illegible] जु को [illegible]: कारज
सिध होवे [illegible] ॥२२॥ बदद ॥ [illegible] ति हे
[illegible] तेरे संधिव [illegible] को बुरा [illegible]
तेहर ति [illegible] ववैनो कीज [illegible] ती तिमाते
कोरा [illegible] पिडिड रा [illegible]: लगावान
[illegible] रण करणा तेरा परमेसर [illegible] लावो
वरि ॥२३॥ बजद ॥ [illegible] हे [illegible] कि
[illegible] नकोरा [illegible] चि [illegible] ते हो मो [illegible]
तुमा [illegible] पुत्र होवेगा: [illegible] को [illegible] पकह

ऐसो जे: परसर बकल्या नु होवे मु
नलातु मती मफल होवेगी ॥२४॥
बदजा ॥ सुनतूं जिस कजे तु मनि
सचै सो कारजु कछ नु हस: जु सि
कारज कोउ दि मु मति के सो मि
कारज को राजमु नाही आडा तु
तु सोचेगा तुम नसीका भेखो डि ग्गा
वरकर्म करो मा कारज देखि सिक
रेगा ॥२५॥ बजग्गा ॥ मु जिसे प्रिय
कजे तुम चितवत हो तिसि कारज
को फल लां प्राप्ति होवेगा बरातु प
होवेगा: तु बेतेरे दिन सभि आये है:
तिसते सर्व सिधि होवेगी नु जु
सो ॥२६॥ बजग्गा बग ॥ की न्यारी: फे
सफल होवेगा ॥
तुम चितवत हो जिसे प्रिय कजे तु
मेगा सिकारज कारज जत मो बिना
सु सवे कतारे: प

65

पत्नी चिंता मेपडे गा तार्इ बंधव [illegible]ति
छुटे गा तृष्णा सिधि होवेगी ॥२७॥
बदक्र ॥ सुनि हो प्रश्न कतेरे कारज
के मन्त्र बहुत तुम्हे [illegible]ति सि मन्त्र का विस्ता
सुनाली करण ताि सि मन्त्र ते कारज ना
ली होता: एक कबुध्दि श्रापुत्र होवेगी
जैसे जल का नाउ किसे जाय स्फटिक र
हे सउ जतन की पछुटे: तैसे तुम्हारा
कारज है ॥ [illegible] ॥२८॥ बक्रज ॥
सुनि हो प्रिश्न के बेली कारज कठ नरूर
कष्ट बहुत है: लाभ के छू न आवेगा
[illegible] केसी नाव का समुद्र मे जात हो
वे ॥२९॥ बीकारज नरू ॥२९॥
[illegible]न कारा[illegible] प्रिश्न कमली [illegible] का
तुम्हा: पुत्र होवेगा विस्तार बड़ी बिष
[illegible]नाव जल बिनु

तुम्हारा हीपा वे तौमेते रा कारज जैसे क
हु पुन करोगे ता सुष पावोगे ॥ ३० ॥
बजर द ॥ सुन हो प्रिछक जो तुम चि
तवते हो: सो कारज तु तुरंत ना हो हो
ता: तुम चित अपने को धीरज देव
णा: अब उदिम मति करो: पली का
रज छो डि अवर कारज करो ॥ ३१ ॥
बजज ॥ सुन हो प्रिछक जो तुम चि
तवते हो: सो कारज की त्यागि दे
वेगा: सल सुष अ पल वगा तु मा रा
सर्व फल प्रापत होवे ... ति हे को
ति हो ... आ ... व ... ... कारज की
म की चि ... म ... ति क ... कद ... ...
सति दे प्रिछक पर ... की ... ... फो
... सफल होवेगा ॥
... ली का ... ... नि हो प्रिछक जो तु
बंध मित्र ति नि ... ... कार ... ... त ... ना
चित ... ति ... ...

मुनिलोप्रिछ कै जो [illegible] मन की याचा
[illegible] होगा ताते उठि चलो अरघ त्याग होवे
वेगा: सर्वकारज सिधि होवहिजे ॥
॥३४॥ दद ॥ मुनिलोप्रिछ के सोक
रज [illegible] है: तेरो चित बनालो वेगी
बहुत [illegible] प्र [illegible] होधुताते पेकारज
छो [illegible] वर कारज करो ॥३५॥ दद
मुनिलोप्रिछ के जो [illegible] चितवते हो सो
कारज सफल होवेगा जद सेगो [illegible]
मुनिलोप्रिछ [illegible] है: तेरे पती [illegible] कारज
कछु बहुत है [illegible] दो [illegible] निरसंसे ॥३६
[illegible] है की [illegible] होड [illegible] के तेरे कारज
[illegible] रण करे [illegible] पती [illegible] कारज बहु
वा ॥३७॥ [illegible] ति [illegible] परि को पुत्र
[illegible] कारज [illegible] पा [illegible] सत्ताकारण
[illegible] प्रत्र होवे [illegible] फल होवेगा ॥
[illegible] निलोप्रिछके [illegible]

तेरा कारज बहुत लागै हैगा॥ इसीतै
...ज कों दुष प्रापत होवैगा॥ जो मनसा
नी ताई बाधा मिटे ... पर्व ... त्या कां
तौ तेरे कारज सफल होवैगा॥ ४३८॥
द आ द॥ मुनि हो प्रिछक जो तुम मः म
न कामना के कारज वंछत हो ... तौ तु
म तें भगवान ऊपर ... तौ कारज
सिध होवैगे सर्व सिधि सुष ... तें हो
वैगा॥ ४३९॥ द द ब॥ हे निहो प्रिछ
क जो तुम चिंतवत हो। सो कारज की
पसु बको आवेगी दुष हो वैगा। तुम ... ...
सत्रु तुम कों बुरा वंछत हैं। तिसि कों
नि:संदेत मति करे। ... कारज की
... [illegible] ... होवैगा कछु जल ...
... [illegible] ... दीपक की न्याई ...
कारज अवर की ... सफल होवैगा॥
४४०॥ द ज ब॥ मुनि हो प्रिछक जो तु
म चिंतवत हो सो कारज जतन सों बना

नाहीहोवेगा: पहीकारजकोऽऽअवर
कारजंकरणातुमतेदमीपुरषसेोअवर
छदमुकेरासिधिहोवेगी ॥ ५ ॥ ४१
दअजौ मुनिहोप्रिछकजोतुमचि
तवतहोसोकारजपरछ्येहू: सोम
नेषुमनमाकामुधनाहीसोयकोरज
कामफिलफलहोवेगा ॥ ४२ ॥
दबज ॥ मुनिहोप्रिछिकतुमआरंभ
कालोलचितवतेहोतिसिकारजका
उदिमतुतुकेराफानलाभमीसर्व
का... सफलहोवेगी ॥ ४३ ॥
दबअ ॥ मुनिहोप्रिछककोसैकारज
केदेलागमपदे: उदि... तेरेउप
नकाविनमुई: तेरेमनकामनाकेका
रजसर्वसिधिहोवेगी ॥ ४४ ॥ दअब
मुनिहोप्रिछकतेरेतांईहिकिवस्त
प्रापतहोवेगीतुमधीरजाकरणातेरे

गुरु देव [illegible] तवि: श्री [illegible] सारे वा की
[illegible] श्री [illegible] ज
तेरे धीरज के प्रसाद सर्वे सिधि होवेगी
गी ॥ ४५ ॥ दबब ॥ सुनि हो प्रिछक तुमको
खेत्रपाल की आंट किहै ताते तेरे कारज मांय
थापी जहै: खेत्रपाल की पूजा करे: सर्वे
उपद्रव दूरि होवेगा तातें सर्व सिधि हो
वेगी: जो कुछ करेगे सो तु सुफल होवेगो
॥ ४६ ॥ दजज ॥ सुनि हो प्रिछक जो तुम चि
तवते हो: सो सत ।नाही: सो कर्म नाही कर
णा: पहिली काम छाडि अवर काम करणा: प
रिकषु पुन्य करो: धीरज सों कारज सिधि
होवेगा ॥ ४७ ॥ दमअ ॥ सुनि हो प्रिछक
जो [illegible] चितवत हो सो कारज सिधि होवेगा
[illegible] ती पूरन होवेगी। चिंता मति करो
॥ ४८ ॥ जजज ॥ सुनि हो प्रिछक तेरे कार
ज सिधि होवहिगे: जन्म से उते के चाल [illegible]
दिन दिन कल्याण अधिक है: तेमे हीन कला:
सधि कल होवेगी ॥ ४९ ॥ जदद ॥ सुनि

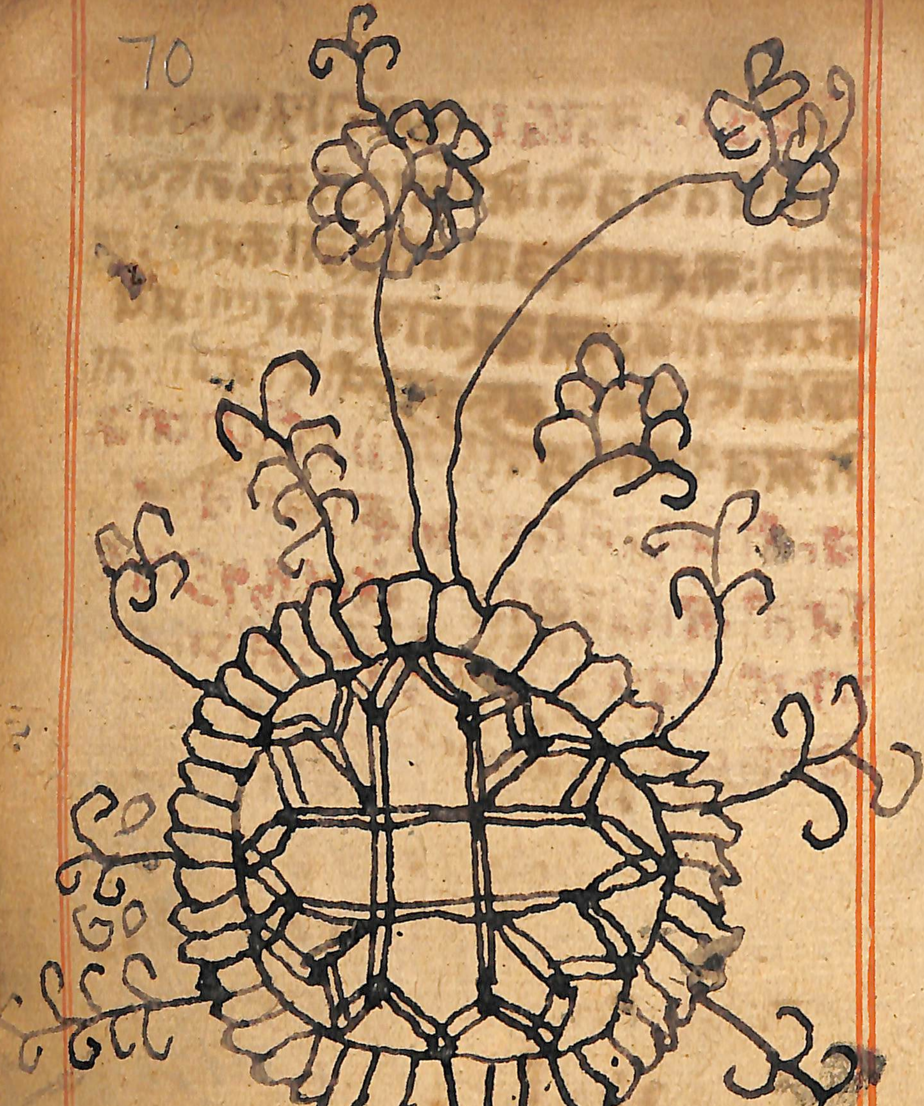
हे प्रिछक तेरे का मनोकामना बहुत दुहस्य सवा
सुमति करेगा परि अतेरे का रजमो फूल होते बहु
लहै कितने दिनो के पीछे का उ सिधि होि
वेगा दिनो पषः चिंता मति करे ग्य लिय कारि
॥५०॥ जबद॥ सुनि हे प्रिछक तेरे का
रज कठन हरः तेरे सत्रु बहुत हैं षिमा कीपतेः
मित्र हों वहि गेः दरदे सपक सत्रु हैं उन का
कछ मति करेः ता ते तेरा का सिद्ध हो सफल हो
वेगा ॥५१॥ जदब॥ सुनि हे प्रिछक तेरे को
रज मरहः सो हो वेग तुम्हरे हे उ को हजा
करो ति सि दे उ ते के प्रकादि सर्व सुष प्राप
तु हो दे गा पुत्र सम्पति सतदू रि वि हो वदि गे ॥५२
जबब॥ सुनि हे प्रिछक जो तुम चिंतवत
हो सो कार ज सिधि होवेगा तेरे लाभ होवेगा
… ते नाप हे … व दिन … लि … पैः उत्तम
… ते ला करे गा चिंता मति करो ॥५३॥
जदन॥ सुनि हे प्रिछक दुस्मन का कोई
ष्त्रि वेगोः तुम पर कोपम करेगाः उपकार गा
… म वीच तेरे सर्व सिधि होवेगी ॥५४॥

ज अ ब ॥ मुनि तेरे प्रश्न को तुम अबकी
[illegible] करते हो मन आस पूरि करो आयि
परमेस्वर की बाधो : अवर उदिम करो ता
छिपेगी ॥ ५५ ॥ ज ब ज ॥ मुनि तेरे
प्रश्न क तेरे कारज बेग सफल होवेगा परि
तुम धीरज पकडो : तेरे धीरज की पे बहुतु सु
ष प्रापति होवेगा ॥ ५६ ॥ ज अ ब ॥ सुनि
[illegible] प्रश्न क [illegible] ॥ बिहतु नमु है जो तुम
दिमुक [illegible] तु उपडगु होवेगा
परिकछु प [illegible] होवे
गा : [illegible] करेगा ॥ ५७ ॥
[illegible] तुम अर्थ का
ज ज अ [illegible] सफल दे उपावो जे परि लो तुम
ला [illegible] त न की ये यु : ता कारज न होता था
[illegible] दिन त ले आये है तेरा कारजु
[illegible] होवेगा ॥ ५८ ॥ ज द अ ॥ मुनि तेरे
[illegible] तुम चित वतहो सो कारजु विषम
है : अवर न कहै : तुम बेगम की आ चतते हो :
[illegible] नाचित वते हो : तुम आ [illegible]

तुम [illegible]

रहिदेउ कोप्रजाकोरः जोसफल्न हो वेगा ॥५७॥ जबा॥ सुनि हो त्रिष के जो तुम चित व हो सो कारज दीपक समानि है जो लगि तेलु है तो जलतो है जब तेलु घुटि जा वेगा तो बुझि रहेगा: एसी कारज की पपरभे मस लोक रोगता हो वेगा ॥६८॥ जअगा॥ सुनि हो त्रिषक एसी कारज करन है कष्ट बिना न होवेगा: एह तेरा जो मन्त्र... वेगा॥ ...तिन के वचनो पारि वेंग... वर का घु म लप फः ...कादि सर्व सुष ...गा सुनि हो त्रिष क ...सतप... रिन बहि... ॥जबस॥ रजु डि देष त हो सो डिडुनालन चि... सो का सुकि चित हो रहो है: सर्व जतन कीये... न होवेगा: ...वध्य तेरे काघु जाइ गे... र मे वेगा: बहुत दल गोत्र... वण॥ फल पावेगे ॥६९॥ जअगा॥ सु गो... प्र ष के तेरे कारज कठ न होवहिगे: तो ते परमे ...र लाकेगा ...बलि ...

॥ ६२ ॥ अजाद ॥ मुनेरो प्रिछक जो
तुम चित वते हो सो कारज कउ नहे: सो
नासी: करणदेउता की पूजा करणी: प
करमछाडि: अवर कारज करण: सव
सिधि होवेगी: बहुत सुख पावेगी: ता
ते अवर कारज करणा ॥ इति पासा के
वली संपूरन लिष्यतं का शेषा विचि:
मिती मंघिर वदि १ संमत् १७४१
वाची सरूपदास: ठकुर हरजी मतन मु:
लिषी मुनि वीर कल्याण ॥ १ ॥



आर्थ ञेव दुल्प बाः ने सरस्त गोल्पक रत्ना: कासीरा
तोलिन ठाबिपु अक्षी: पर्ठ जु सगु: मठ रादिणा
लोहे दीकरारी विचि:सि मवंडु गले: त्रोरदिसावे:
जो सरणे व गे: वंजि, नुठेन्न तेसु फे तीर्थ दे दासं रे
मरे: ला लु पीवे: अले: तर: क नो [illegible] को दा: दुल्पा
स[illegible]रि: वत्ति रिस्प ही, सरि स्पाही १ मरे चा[illegible]
त्रेशी वसतू: न गा मत ले: पणी जई सागु त्रिया
जा ठ सागु रदिणा: घ ला: न पारि: करि: जे शी
वसतू लगा मली बे विचि घर ते ए: जा दा: मा
ष पु थावे: त दा: मोटु दे: एए जे प दी गोली
करए णी: गो ली: ष वे स ब हो. नि रं न्ये: जे क्र
त पु न त्र र पाहो वे स्पर्ष मी ज रे धा ग त्र
होर्न सः जी त्रवा रे पा त पु त्र र ए दे हो वि सि
सो शी वत्र ता पु: प्याटी: ज्या पी: होर्न सः
सो त्री दूरि थावे सि: मली वस्तु न ब वे:
लोगी को शी गली षवे ब लु बे छे जदु र
थावे: लोगा गोली वा[illegible]ति वि चि पे रे रस
होली [illegible]

दोहरेके। जोपतनके॥ बातेसुनसबैआसोनीकुं
इरिदुषु बढ्यो अहंकारी। नृपतसुताहांसी
जबकीनी जल्लकी। बातिचितारी। करे उपा
उ बनेनहीं कोई। द्रुतकरमगतधारी। घ
स्तनुपनृप पांडवसुतग्राइतहां बिहारी
॥१॥ दुष्टसभादुरबुद्धि सकलजनसाधु
नकोई। बिषयोंनासबसुजीतनकोमनतुउ
पजाराजा महानजोने। इकुनइकरिबर
ठसठचोर जुठ बचनठठाने। कपटरीत
मेहिरचाबिहारीघरसदीतनहीजोने॥२॥
पलातमुक जग्यानृपतसों कपटकी
येमनमाही। घोटयासो जनजुठनाबा
तोनमुलषकेनाही। ग्राटेचीमकप्यादूरजो
धनलषींडाकरनतदाही। कंगाजलकी
बातिबिहारीपठ जोसुनि बांरी॥३॥ते
गिनजीनग्रनबलघारन। नृपतबातिचि
तारी। लज्जा वोगेगाजलुतमहीगचनं
ग्रतसुघदाई। लोकनंडला वेलमनकीज

भुग जातप्रगधारी। पवनसुत तबहिंच
लैके बिहारी। आगपानि बहत्ताशी। पाकी
नानही बिलंब पवनसुत नारिकमंडल
लेआयो। हेमत दुरजोध नापैरिकमं
यह अवसर कछू नपायो। दिजगातिमद
सकल दुष्टनकी। दिज आसिंचआसिर्वि
गहछायो। अपुनें नाइ केतनी रे बिहारी। फि
रि कुरुपद बैनायो॥५॥ कौननहि नि
नारपमन के बेगजी। मापैकि रिआयो। दु
बुबिचारि निहारि रिदे माहिं तबहि कुबच
नु सुनायो। नीरकमंडल की हिंबो धसर
स्तु तीनि तुम्ह चरे लिआयो। पवनपूत मुख
कहलो बिहारी कछु बिलंब जुन लायो। हा
पवनबेग सुनि दुरजोध नमांधि सरमु
री जलु लीना। पूरन कीनो कमंडल को मु
हि फुनि मारि गुपचुप दीनो। आगपांवनौर
हि बिहारी। नाह तजे गारुड कृष्ण धीनो। पव

72

नपूतगुरकिछूनेकपातेगुनतोबाधाबल
मुनकीना।७।यहजलतुहमरेकामिलनोव
[illegible]सिरस्तुरीयाहिजावो।क्रोधराषुके
इतनकोतुमऊचजलुप्रगटावो।सोउन
मेपरवासोकिनका।तेनिकिनकनसो
रितगावो।करिनावितलतुविलतुबिह
रीबेगतनीममगधावो॥८॥चलेतीर
मगमिलेपृताद्विजपूछतिबातिचला
री।कहहातुमकहातेआऐकहाकहा
पनारी।दुरजोधनकेमादिरैरह्यातक
पटरीतिजगटाइ।दिहिबाधाबितसु
विचारीकीनोइसुधिकछुनपाइ॥९॥
पीरहाजुनमंघनगजहनपतासकल
हरायौ॥सोनजगुवासिकीनोदुरजोध
नेनबराजापछुरनायो।विसमरहाइरह
पाडवसुतपकबगतेमापिकरिगायो
।कामन्दासुमिलिदेवाबिहारीबहुनगव
कलपायो॥१०॥इसनदुसासनदुप

त

सुतकों मैं होइ विकारी। नाग पतीं कु पती नरक करि पावै जाइ गंधारी। दुरजोधन कौ आइ कै खोलो नेंगा धीकी अहंकारी। मैरी जननी सहि तिल अवि पूछ्या कु पा विहारी ॥११॥ द्रुपद तनया पती मन नाहि विचारयो। इन के तिलाजिो निवारो। हम तुम्हरे संग चलों दुसासन का हथ्यार निहारो। गारि करि गोविं नि माधि वि स्याके बोल तन लागे अहंकारो। जान त सभा वि रत तू विहारी पती ब चनु उचारयो ॥१२॥ दुष्ट सभा दुर बुधि सकल जन सांचु मका हीबि षाने। सुनो दुसासन काते पीछे कंप्य जल होत मत पानो। पर व सुजी री ले मीराजे प इन्द्र पत के अनुग्यानो। अवलाक तस नयौ र बिहारी। कौ दीन धरा मु पघाने ॥१३॥ अरजनु भीम जु धिष्टि र राजा नकुल सहदेव कुल नायकों। कहै

आरतसहेदुखबिचारा।कहुंकसूरजाम
यो।सासनेहतडुसासनजुपतीतबहि
कुबचनुसुनायो।बाजिबिहारीसुनेहि
जमीहिनमरमुसजनकापायो॥१४॥
गजनुकुलविकोहलराजामतस
हदगनिहारासजकीयारिननलोक
डुपतीननिजनाथुपुकारो।तुमहेष
तोमुहिगनुकरतुहिकोइगपुनाबतु
सनारो॥समनुषनोचकीइबिहारीक
रीनवाकुतारो॥१५॥आतिदुषनरीजर
दुषनेतनीमगारजनमुषजपे।कुन
लानीदुषपटरानी।जजबिनषकली
चंपे।सीतलस्वासनसासनिक
लेसकरहेहाउहंपे॥दुषमनकी
याकोपाबिहारीननयवनीहाकंपे
पे॥१६॥हाबिडुपतीसबकोकागति
डुपुनीमकोचमैननिधारचे।लल
कुलकपाहितैस्वासबटोहा

आ॥ तो॥ मोघगर ... मंनोकं ...
कोनिकसात संघा नेनकोस्यो॥
१७॥ अंघिआरी नइ तासीकी बिह
रीन हीसंकुत हाथु पसांस्यो॥ १७॥
उठिनीनमञ्जनु जठापी कटप
ट बस्तरलपेट्ये॥ देहसकलतें चलो
प घारा॥ कंपत अतिन्नाहिनेटे॥ कानु
रूपदुरजोध नकों मानोष्टे पीलगीमि
रेटा॥ होवणहार सोहा इबिह रीकोर
अपुनो धरमुनमेटा॥ १८॥ जरसाहर
नाकसकअवरजोधु नरीसिंघबठायो
तइसबत्री नासकर नकोदिजाहिकु
ठरुउठाये॥ रांमचंद्र हससीसकट
नकोलआपजारी सिधायो॥ साहु को
घु नयाचितनो मबिहारी कीरराज
समजाये॥ १९॥ इहि अवसर तें आइ
नकोगोनिस ... करयो॥ जोइने

कीती प्रीति भुसारदी उनमेंहि आपु परेराम
॥ अपु नाथ रघुन कोडा नाडी हासाने
के करेगा॥ अपुना अगिनि से आप
बिहारी दूर जोध न आपपरेगा॥ २०॥
घर सुरहे फिरि धनु गिहि आव । होवे
सु जसुसु मानी । करम गह फिरि आविने
आपस जसु पहरावहिं मानी । धनु जसत
जेकन वसच मेहि गजहू पछानी । इसप
एकाल महाप्रभु बिहारी नि मसि सनसनु मानी ।
२१॥ मारी बड हमारा पवनसुत जाइ तं के
जाहि जराई॥ इसल कजोधा दाइनि तमम
जांम पुरि धीरप हाइ॥ नरवर भकन इस
नेरा उपाय नबरावन साधि पाई । सोहि
दुर जोध न आजु बिहारी केरा रमनाहि
जाही॥ २२॥ सोइ गंभु आजु काहि विसोक
रिपाहि पहुत तासी । जेस तत्मही लनुबको
बोइ अबसर हाथि न आ भसी॥ इतनान्ते
कुनजु रकदाचित मति जगत हसे मुख हासी ।

कत्तेकौ घुं [illegible] बिहारी जो [illegible] कीन्ह
उपासी॥२३॥ जौं जिकै हौवा कौं छमू सेहु
रीतिन्हकौ जी हरुकारी॥ मारिन सौ घौ
घातिसकौ नाग मिलातें हलासी॥ हट
किननाकौ कहीहौ ताकौ हौवा [illegible] सरसौ हरी
राधा मन जन रूपर बिहारी जो सिसन जगत
बिषुबासी॥२४॥ जोसी बिषु कौय हं बेती
बासी धावा हौं फुनि सरी॥ हम राकहने
नु मैं मननाह हुँ म्ह जानो आप घेरी॥
राबल घ मुंकहनु जग मांहि जो लहु बाति
रिजे ही॥ घ मुंकरा प्रत पानबिहारी कि
कौरा पृक्रिवेही॥२५॥ रां नक चोन्ह छन
सो कहनु मही बाति सुनी जो। जद सौ कौरी
बसुकौ बाबू फलु नीतर सापी जो। बोव
गरलु तत्र आइत वा छात नहसो हवो वे ऊक
जे॥ करत पौनक री बिहारी नरकौ पितर पठी जे
२६॥ जिसकौ नाकु रसौ हाई दहौ पारिन
केंजी सौरी॥ करत सौनक चौं मिस रहनु

75

केतंपहुचेयोगीपरमधतिवतांवांतांकोअतह
हलमकोकारी॥दसधभिकधस्देबिहारीतारे
पितरसमोरी॥२७॥सुनिराजाकहुकेहानेपो
कोग्रबदुषसकन्नानिकारो।करानिकटके
राजुजगतकासन्तसंकोचानिवारो।जोग्र
बहाइसोहाइनिपोहुनसकन्नानदुषके
मारो।कंचनन्नकावोग्युबिहारीसम्बके
ध्रवकासारो॥२८॥चाहुधीरजुधरोरि
देमाइध्यावोकेिसनगुपाले॥जिसकेसु
नस्देसकद्रमासेसन्तसंकोचुनिको
लो॥मुषतनामनराइनजापाक्याकइ
रवबुहाइसमाल्ने॥जुगजुगभगतसहाइ
बिहारीसोअबमाहित्रनपाल्ने॥२९॥घ
नतेरापलीइब्रजकेजनजिनकेतुमहि
तकारी।आधिकेदुषनतेगजगीघउ
बारेअपुनीपइजसवारी।जोजोजो
सर्नपरेसंकटमइतिनकीविपतानिवारी
अतिसमगुपतोगारीसीबिहारीकीतेउ

नहि छांया बिसारी ॥ [illegible] कारी
बेद उधारयो के कछरूप नीकी सो ॥
[illegible] बत गार के राष तीयो हरि कुनि
मैं करवपु कीनो ॥ धरि ध्वजहा वसुधा
लै आयो हिरनकस्य बत पुनी नृ ॥ ध
न नरहर के रूप बिहारी मारयो हरनाक
स्य मत हीनो ॥ २१ ॥ बांवन रूप छल्यो ब
लि को तुम्ह सन सुर सुष उपजायो ॥ परस
राम सवी को हित को कर इकु ठार उठायो ॥
धरि रघुबर को रूप बिहारी रावन को फुन
घायो ॥ क्रिश्न रूप गा कंस के सम सुष
अब हम राम रमिटायो ॥ २२ ॥ जो बुद्ध लि
हो अहे कूर बरन मद सम को सो ॥ तु
लहसी ॥ द्रुष्टु सुपु सजन सभां निज गत वि
चै सा बुधि के जनु सहसी ॥ माइंग्रब
नो बल्लु तराउल जी राघु कुआर का वासी
तिन को नाथ अनाथ बिहारी जग विचै के
न वहसी ॥ २३ ॥ सतन तक के न नक सो

76

मोहनकपटमोरीदृइसारी॥मृपतेनिकोम
न्तपपीतबरजनतागिरधारी॥कृहत
रानीकहाबिहारिक्याबाधितोहिनीह
री॥दूष्टसत्नाभरिघुपतसुतकोबे
टनोग्रातिदुषनारी॥३४॥पृरवुदे
पटानिहारागुतिनगीहिंजोनु
चालीइकतान्ती॥मेराकवनवुडे
गामेराकवनतऐगा॥मइगिरीबजुनाहा
मइनिसकीनुजुनाहा॥माईकाशेकाब
सीमारिघुनाथभपासी॥माग्रोधरि
षडीरनाकाजरमनेकरेगा॥मेराकीनुके
टगा॥निगुरामेषमेरगा॥बंधामगाकरे
गा॥१॥राजानानेपरजाजोनेजानेतिके
बीरजुनाहा॥अवरदेवमीसारेनितानि
रामेजजनसीनाहा॥३॥वृहतेएकबऐ
इजाप्रिथुकाघ्यासाहसिकंदरपासी॥
मातालसीअनिजुकाअनराषलीन्ना
अवनासी॥३॥ऊच्चजनाईपाइकर
तोघासाचडि[illegible]हलीबगिनहि

दोहे कंबीर दे॥ कंबीर माया चलनी हइ
कुरा अगन गीजीत ॥ जिस की हइ तिस
नी करै । तौ तुरत मिलावै पीत॥१॥ कंब
माया मारणी साहि लहइ । पारि मानि
न मारी जाइ॥ मानि मदे मुनी अरगहे
मानि सभन को षाइ॥२॥ कछु करन
कछु करम गति । कछु पूरब जनम को
लेषु॥ जता सुरन रपाठ न धारही ।
तहा कंबीरा देषु॥३॥ कंबीर कर्म न
जन के अग्रे हइ । पाई चाहे गौर ॥
परमेस्वर नि हकर्म हइ । समझे की
गति और ॥४॥ गुरु लोचनी सिष लाल
चनी । मिलि कै करि नि उपात ॥ दो
नो बूढे बहु पुडे । चढि पथरा की नौ॥

कंबीरहीरापस्योसमुंद्रमइ॥किसि
बिधिचासिकेलैइ॥केहीरालेबाहुडे॥
केसीसुअपुनादेइ॥६॥कंबीरषरी
कसोटीरामकी।जूगटिकेनकोइ॥
रांमकसोटीसोकसे।जीवतमिरतकु
होइ॥७॥कंबीरजीवतमिरतकुहोइ
रहेतजेबिषाकीआस॥पाछेलाग
हरिफिरेमतिदषुपावेदास॥८॥
कंबीरसाधसतीअरुसूरमा।अगम
पंथकोजइ॥जेफिरिचितवेनवन
कोबाणाबिरदुलजाइ॥९॥कंबी
रसाधसिंघकोइकमतु।जीवतही
कोषाइ॥भावहीनमिरतकदसा।
ताकेनिकटिनआइ॥१०॥कबीर

तहा जाणहु। जहां सरहर की सुता। तहां पाउन टिके पपीलन को लो केला ठे मचडुल ॥११॥ लीके तो गाही चले। लीके चले कपूतु॥ यह तीनो न्यारे चले। हस्ती सिंघु सपूतु ॥१२॥ कंबीर हीरे की री गंमडी। बोजी बिन न षोलि ॥ जब आवे गो पारषू। तो लेहि महागे मोलि ॥१३॥ कंबीर हीरे ही राम नु जहवरी। तन की माटी हट॥ जब आवि गो पारषू। तब हीरे की साट ॥१४॥ कंबीर जपुनी मोसो लडु पडी। कहा फिरावो मोहि॥ मन हजो पेरे आपुना तो राम मिलावो तोहि॥ कंबीर मण के फिर त्येजु गा गार। दिसा न मन का फेरु॥ कर का मनका छाड़

78

रिकरि। मन का मणका फेरि ॥१६॥
कबीर कर जपो न मुखि जपो। हिरदै ज
पो न रामु ॥ हरि मेरा सुमरनु करै। तो मै
हि पाया बिस्रामु ॥१७॥ कबीर माला
तौ सारखी। को फेरै निजु दासु ॥ चउ
रासी जम मे नही। काटी मोह की फास ॥
॥१८॥ कबीर माला तौ कर मो फिरै जी
भ्या फिरै मुख माहि ॥ मनूआ तौ चउ
दिसि भ्रमै। इसि बिधि सुमरनु नाहि
॥१९॥ कबीर षाडु जो खिरि गुरी रेत मै
। हस्ती चुगो न जाइ ॥ कबीरा चींटी
होइ रहु। चुणि चुणि षाडु जो षाइ ॥२०॥
कबीर जन गाते न गावनु थकेउ ।
सिरला चीन्हे को ग्यानी तारि कातीक
पटकी। ता ते दीसे दोइ ॥२१॥ कबीर

मनुजानेसमन्चातं।जानिबूजिअबगा
नकरे॥काहेकीकुसलातीहाथदी
पकुषूहेपडे॥२२॥कबीरमनुगया
तौजाणदोद्रिढकरिराषुसरीरमि
नुचढीकामानते।कद्दूसेलागेती
र॥२३॥कबीरमनकेमतेनचाली
ये।नचलीजेमनकीबाणि।कातन
तारीकेसूतजेंग।फेरिअपूणआणि
॥२४॥कबीरगुरूजिनकाअंधला।
चेलाअंधनिरंध॥अंधीअंधेमेलीयो
दोनोबदपडंता॥२५॥कबीरगुरू
बिचाराक्याकरे।चेलेमाहेचूक।
कहांसबदुनमानही।जिउबंजफूंक
मोफूक॥२६॥कबीरगुरगोविंद
दोनोषडे।मंइलागोकिसकेपां

79

बालि हारी गुर आपणे। जिसि गोविंद दीयो बताइ॥२७॥ कंबरि कामी कबहुन हरि भजे। मिटे न संसा सोग्य॥ हरि तेही रागि पडा। कामी द्वार न मोषु॥२८॥ कंबीर कामी थे कूता भला। जो रुति सिरि मागे लारि॥ कूते से कोचीचु रा जो गुर हिदि वाइ मारि॥२५॥ षे कुवस्था उपा बसूत रां। सफल विगाडी कुड॥ न गति विगाडी कामीआं। केसरि हो भाइ चूड॥३०॥ कंबीर जेती दीसे आतमा। तेती सालगिराम॥ पूजण हारा नी तरे। न सिमर वर सो काम॥३१॥ कंबीर हि कुनिंद कुनामिनि। पापी मिलि नि हजार॥ लिक निविकके मुषिबसो। केंइल बपापो

केन्नार ॥३२॥ कंबीर हिकु निंदिक कु
नामरै। जी वेश्रादि जुगादि॥ कंबीर
सतिगुरु पाई आ निंदिक कके पिरि
सादि॥३३॥ कंबीर निंदा हमरी जे
करे। मीतु हमारा सोइ॥ हम सू ते घरि
आ पुने। ओ पाप हमारे धोइ॥३४॥
कंबीर षाटे मीगे चरचरे। जी ज्या हरि
रस लेति॥ कु तौ चोरों रलि गई। तेलप
हरी का को देति ॥३५॥ कंबीर जिसि
मंदिरि अंध चले बसै। तहा दीपक को के
छु नाहि॥ जिसि नारी निरधन ब
सै। तहा कि उला बिकाहि॥३६॥ कं
बीर मोती बिघुले बाट मो अध
ला निकसे आइ॥ जोति बिना जग
दीस की। जगतु उला घि जाइ॥३

मंगा आसारी घरकी ताल पीवहिं निरम
लनीर ॥ बिनु गुरमुखि किति न पावही
। उत कहि रहो कबीर ॥३८॥ कंबीर के
घरि आइ आनी । कहो कबीर करे हु ॥
कंबीर के घरि गोबिंद सा । गहणे की छ
रे हु ॥ कंबीर जिसि रामु न सुमरीउ ॥
पंगल गिरामु जपाउ ॥ तूं आ पिन्नी
राम कहु । अउ रां रामु कहाउ ॥३९॥
॥ कंबीर सतिगुर सुपारसु जया सेन
धातु कंचनु होइ ॥ उलटि धातु पार
सु करे । तो सतिगुर कही पुसोइ ॥
॥४०॥ कंबीर सतिगुर हम सो रीझि क
रि है कु कह्यो परसंगु ॥ ध्यादस्य
रिषिपो प्रेम को । नी भि रह्यो सचु अंगु
॥४१॥ कंबीर सुपने उठि बरडा तो मु

समोबोलेरांमु॥उनकेपामकुपा
न्हीऋा॥हमरेतनकाचामु॥५२॥
कबीरनाहीसुरनरमोहीं दुनाहै
मिरगमरतं॥जोनरुनादिनबे
धीए।सोगरचेकिउनगलंत॥५३॥
कबीरजनंतीपूछोनही॥पूछिन
कीयेगवनु॥लेकोनूलामिले
तोपेषुबतावेकवनु॥५४॥कबी
रसुनिहोपूतकमालढ्ढी॥जुलाहे
केपूत॥तणणणमुणणणसौषिलेका
हेकोअवधूता॥५५॥सुनिहोपिता
कबीरजी॥मइकमालुरणाधीर॥
तेरापिताजुलाहुहे॥मेरापिताकबी
र॥५६॥कबीरकबहूनसोहेसुधार

८१

सनकादिकके साथि ॥ जब कबद्दा
गालीइगी । कालीहांडीहाथि ॥ ५७ ॥
कबीरमाया चुहडी । अरु चुह
ड्याकीजोड़ ॥ बेटा ग्यापूविछो
इती । चल तासंघिन होइ ॥ ५८ ॥
कबीरठाहेमानगजू । मास्येमा
चोषान ॥ सबदकुहाउाकर्मच्यं
नाठाहिकीयो मइह्वान ॥ ५८
कंबीरबिरहंनेजऊगैनी पडे ।
दरसनतुमेरेराम ॥ मूवां पाबै
देहुगे । सो दरसनु किहिकाम
॥ ६० ॥ कबीर बाठीआवत देखि
के । चेद्वन दीनोरोइ ॥ मऋपु

नैनहीजीवकी॥मतापंषीकोइ
षुहोइ॥५१॥कबीरनइणेनीमरु
लोईआ॥पंथुनिहारिनिहारि॥षि
चडीछालापडिरह्या॥रांमुपुकारि
पुकारि॥५२॥कामीकागुरुकामुनै
लोभीकागुरुद्दांमु॥कबीरेकेगुरु
संतहइ।संतनकागुरूरामु॥५३॥
कबीरसकलमचनेतुलसींनइ।
परमतसालगरांम॥सकलजल
गंगा॥जेहिरदेचिराजतरांम॥
॥५४॥कबीरनातीतेगअलेषकी
अणीजुइदोजइकी॥मोहमदन
गड्रुटाहीआ॥संतेमूनगचूका॥५५

82

कंबीरसूमो घेली स्वान न्गादि नो
स्त्रकसमान ॥ पइसत उपजे प्रेम सु
ष । निकसत निकसहि प्रान ॥ ५६
पानी ते अति पातला । घूंहे ते अति
जीन ॥ पवन ते जो उतावला । मी
तु कंबीरे कीन ॥ ५७ ॥ अंतरि षु
नेला गीरहे । गरजे संबदु गंभीर
॥ चउदिसि चिमके दामुनी । तल
बेले दास कंबीर ॥ ५८ ॥ रामसु
लावा चेजी आ । दीआ कंबीरे रोइ ॥
जो सुषु संघति साध की । मतासो
बई कंबि न होइ ॥ ५९ ॥ कंबीर माई
मूठो उसी गुरु की । जो कंनफूक मंत्र
देहि ॥ सतिगुरु ऐसा चाहीए । जो

नजरी मिलि हरि घरे किया ॥६०॥ कंबीर
पापी को षोज कुनहीं । घरमी न खे
जाइ ॥ ग्रहप[illegible] मारषु बूझि के ।
मति को धर्मु कमाइ ॥६१॥ कंबीर पा
चोइंद्री मारि करि । पापी कहीइ से
इ ॥ तिसि पापी कौ न रकु नहीं सदा
वइकुंठे होइ ॥६२॥ कंबीर पर नारी
तीछुनी छुरी ॥ ताको लावे अंगी ॥ द
हसि रके दससि सिर गइ पर नारी कि
संगी ॥६३॥ कंबीर हरि दर बारी संत
हआ इनते सन कछु होइ ॥ चै गमि
तावे रामको । इन्हि मिलि जे कोइ ॥
॥६४॥ कंबीर संसे षाया सकल
जग ॥ संसा किनहू न षधु ॥ जो गुर
बे धा सा घरे । तिहि संसा चुनि चुनि

कंबीररां मन [illegible] कै फल जो घ्र । सुम
रन बीजु ले म्याहि ॥ श्रबंठ ब्रह्म मांहि
सो कापडे । तो न म तिन निरषी जा
हि ॥ ६६ ॥ साध सती अरु सूरमा ग्यानी
अरु गज दंता इ ते निकसि न म्याह
डेपो जे जुग जांइ अनंत ॥ ६७ ॥ साध
सती अरु सूरमा । इनि पट तरि को ना
नाहि ॥ अगम पंथ कौं पग धरे ठि
गे तो गहरि नाहि ॥ ६८ ॥ ना कछु कि
आन करि सध्या न करने जो गुस
री सा । जो कछु कीआ से हरि कीआ
ता ते न ठ्या कबीर ॥ ६९ ॥ कंबीर
सीरपि आव त कत फिरे । सा ढूंढ
ट घटि घरि बारि ॥ जिन कों जल

कीप्यास दूर। सो पीव हि केज बिमा
रि ॥७०॥ सुरत के घा कचे निरति
मध्य किगा [illegible] ॥ निरत के घा सो सुका
प्पा ॥ सोस के का पे चरती [illegible] म
मी ॥ चरती के ध मध्य पे [illegible] देख्या ॥
मेर के देख्ये सपत सा [illegible] ल्या । सु
न के सबद मौ गर्ज गा [illegible] ॥ नगति
गावंती करीक मर्ध्या [illegible] दरू । बोध
[illegible] का । सप [illegible] कंबीर खे
ल्हा मध्य उरीर चौ । सि व समत
सौं गा [illegible] जो स्या ॥७१॥ कंबीर कल
जुग के स्वामी ओं । कउदी के पु चा [illegible] ॥
साहिम्य सौं परचा नहीं । कर्त सेव
करो [illegible] सा ॥७२॥ कंबीर ग्रा गोनि

रमलु आसी पीकै मइलु चिकाति
॥ आगे पीछै अठ रहदु। कुठन पै
रेमु षछारु ॥७३॥ कवी चलेखा
तेथि पलो कुचेदके सथि॥ पइठे
मोस ते गुरु पेल्या॥ तिकदी पकुड
ना हाथि॥ टी पकुदी नो तेल जरि
।घाटी नई अघटि॥ पूरे सोसत हा
न याप्ते मचहुए क्या जाई पुहटि॥७४

संकरसंबमसमुद्रकोमनसमुनीयोबोजंतःपुन
नीरतेम्यौ षु रुतोः जोपदरदरपद [illegible] ॥१॥
जागृतमर्दिमीबजतभमसज्जेमौटि नीसौ
६ सुषोपतकछनजांनही चिजस्यान्पे मु
बहो ६१

॥श्रीगणेशायनमः॥ सारस्व
तीमहाभाष्ये॥ ॐस्व श्रीवि
नांव्याकरणं वाणीवेमलीर

॥१॥ श्री अमरलाल सहाइ॥ गोरष कुं
डली गोरष मछिंद्र दृष्टी॥ अलष निरंजन
ईक तूं रूपै घणें रमत॥ पारस तिहारो
अपरमपर केवल केहल हंत॥ अलष
निरंजन आतमां॥ सरसर हंस समांन
सोसन धारी॥ सिमरी ईगुरमुष द्रिसटि
आंम॥ नाही बेद ब्रहमणां॥ जगपांडित
बहु जांन कउन जांन जांसो कहै बिं
दु भी छूटै प्रांन॥ बिनु बल है अटी बहै
बिनुं मोला घाए माल्हा॥ बिनु पांणी
बाड़ी पीवे अंबर कूं आपि आल॥ तीत
र बाहर तीन भवन अलष निरंजन
ईक तूं निरगुन गुन तीजे कहीं ज्ञावग
ति पर सजलेप॥ जंब रषे घर

जरे सो जां नै स्रग को ढि ॥ घरु बर से अं
ब सु मरे सो जां ने पिंडला को ढि ॥ छं
दु जाति रुए कुए ॥ अंमीबरषं तां अग्रमत
जरं ता अग जरु जरं ता अग्र कला ता तइ जमुरा
जीता जम ध्यानु जीता जमु जीता अग्रापअ
जीता अग्र बघु ता तजी ला वं ता उ नमत
रहता पांचों इंद्री पाला ता ॥ मा छं प
पूता जोग जगू ता जागे गोरष जगमू
ता ॥ ४ ॥ छंदु ॥ का जीभु लाए कपे कु
ताएं बेद पुराएं । डि भाएं रहु उ तो ग
को जां एं विग्यान तां एं । हिवज पर छो रि
फा एं ॥ अग्र मपु रपपु रा एं सरु जस में
ए सुन समां ले घानु सुएं ता ॥ मा
छं सपूता जोग जगू ता जागे गोरष
जगसू ता ॥ ५ ॥ उन्ना ता अग्रा वं ता ॥

ठुल्लट करंता॥ बुरज बहतर मद जरंता॥ प्या
ल्यापीवंता॥ पवन पीवंता॥ बिनु मद माता
घूमंता॥ सर बिनो सुसंता॥ सह जसमं
ता॥ जागत सूता॥ जाए ता॥ माछिंद्र पूता
जोग जगू ता जो गे गोरष जगसूता॥ ३॥
उलटा वीयं गा॥ मीन रजिंगा मेद्र मेवंगा॥
लिवि ल्लगा॥ तसनी रितंगा॥ जग मत्र
लगा॥ मेरु चक्र घट मेहंगा॥ गरजे
गाएगा॥ मिघरा मे घा॥ सो नित ते
घर जाएता॥ माछंद्र पूता जोग जग
ता जागे गोरष जग सूता॥ ४॥ नउ
सहनाडि गाएं उलटि बहाएं पछ
मा पिंगाएं परबंलें मृन सम्भोएं
न मोक्षु धांएं॥ गाबनी मरनी गाब
साएं॥ हरगज दीवाएं॥ पउे पुराएं॥
जोनिक नाएं॥ जोगी सहेजा॥

एंता॥ माछंद्रा पूता मेरा जगरता जागे गो
रष जगरूता॥५॥ रमन केरोर मारुं॥ प्र
गमग्रम मारुं॥ इकतर हरुं इकेस
ना॥ कोकरून केरुं॥ नूषन मरुं॥
कोंजांकेसरुं क्दाकेरुं॥ बेहीत्र
हमारुं॥ निरंगुनभवनों पारितत
एं॥ पुरवंता॥ माछंद्रापूता जोगज
गरता जागे गोरष जगरूता॥६॥ हा
रे धूरंता बासु बसंता रवी चंद मांहे
ररबंता॥ कुंडलनी कलंता सत धीव
लतासेंमेंगभिरसेवंता॥ प्रमु
गामी पाबंता बूटटलंता॥ बालि
काहंता॥ माछंद्रापूता जोगजगरंता
जागे गोरष जगरूता॥७॥ गाहि
ग्रबलबा जेमट जगरता जैबटे

भाजे मद्दुभाजे निरंकारा निवाजे ना
थु निवाजे गभ निवाजे नाऽ॥ जाता॥ माछं
दा पूता जोग जुगता जागे गोरष जगम
ता॥ ७॥ धरता ध्यानं त्रिकुटा॥ जोगंता नं
सहस्र हिमानं गंगानं तीर थलषानं
देह मैं साधा गुरबचन ऐनाऽ नाऐं
मरु जोइ जोगानं तलु जोगा नं इकु
जोगानं अकलंता मा छंदा पूता
जोग जुगता जागे गोरष जगमूता॥
८॥ जिह बा बिनु गाता सुनता रमेता
संतसनाता गावत्री जपता अजपा
जपता तनु चैतंतो हेवंता माछंदा
पूता जोग जुगता जागे गोरष जग
मूता॥ ९॥ पवनां पूरां ऐं। जगम
जोगाऐं बीज भभौऐं। जबषां

गी बीज बमांली जबषांली बिन
ब छ्तलगोलंगी घरं न्युसांली पव
नापांली॥ पए गांली॥ ग्राकपकां
एंर बिबगीबांएगी॥ जांएब्रमांएगी॥
गुएवंता॥ माछंद्रपूताजोगजागरता
जागेगोरषजगसूता॥ ११॥ त्रिहनान
हीकरताजीवरचंता मनछांकिए
मारंता॥ ग्रावंताजातापवनपीवंता
मवरगुफमांहिंजएकंता॥ डीजापि
गुलुतासुषमनसहिता बंकनाऽ
[illegible]तेजग्रंब्रिबहता॥ माछंद्रपूताजो
गजागरताजागेगोरषजगसूता॥
११॥ निरंकार निरंजननाथ्यानिरंज
ननिमोनिरंजननाराइनपहमनी
परहरएग्रबलाजंजनमांगाम
[illegible]हतं॥ जाहिनिजंगंध
जनमेनजहहतं

नेपु धपा बंधन त्रिहुना साधन समतवंता
माछंद्र पूता जोग जग ता जागे गोरष ज
ग सूता ॥१२॥ आतम पीवै तिपाई जग
रव सागी सुंन बसाई सुष पाई ति
बि एक जिकराई बिएक हटाई माया
कलैदे भेजाई कोई नेटु नेमाई
बांएक पुत्राई ॥ मूलकराई । बिए
जंता माछंद्र पूता जोग जग ता जागे
गोरष जग सूता ॥१३॥ गोरष गोपा
लं बूढ बालं जीत्या कालं जम जालं उघ
डी आतालं त्रिभंगी पालं हंव सालं कंसा
ले तालं नाद निरालं स्व दीपक मालं स
बद अनाहद सांभलता ॥ माछंद्र पू
ता जोग जग ता जागे गोरष जग सूता
॥१४॥ मायिक मोत्याएं बिनु समुद्राएं
बिनु सीपाएं निपजाएं हीरा पगाटे

आलें अरूदि आलें भोन लजालें बाप
ए कोई राजा राले पार बांआले भाग
भाले तेन्हे दंता॥ माछंद्रपूता जोग जगू
ता जागे गोरष जग सूता॥१५॥ धुरेते
नीचां आलें नघर बघालें अब चल ठालें
सिंघालें दीपक पीवालें मांघरि मंजा
ए त्रीने नवलें जालें कलालें त्रि
म्राबिषांलें जोगसठालें पीर पठालें पर
ठेता माछंद्रपूता जोग जगूता जागे गोर
ष जग सूता॥१६॥ अब चल अबना
सी बाल अभ्यासी रिधा सिधि दासी
संन्यासी बिनु निरकाबासी कमलाबे
गासी बिषु बासी बन बासी गंगसु
हा उदासी आस ए पासी॥ पापा ने
वासी पुंन वंता माछंद्रपूता जोगज
गूता जागे गोरष जग सूता॥१७॥ रूप

हीअंगंकलसु।।उआदमाइआदेस्तुआ
दिअदेसुअनादिअलखपुरसकोंआ
देसुमांदेउचउअंगीकोंआदेस्तुकने
रीकोंआदेस्तुअनंतकोटगाँदेकसिध
साधिकांनरेसांपीरपुरषपीकंब
रांजतीसतीजोगीआरांआदेस्तुपुर
सहितनानर।नवेनापांगोरषन
रआवरासिधगोरषआवासिध
सतीकिनेरीआउबीरबीरपांआ
उमएकजातिकनेरीआउधूर
मधूधलीआउजोपडीआंकपा
गेउनोगा।जिउनेबडआउजोग
सनरपाआजीपालउआवाकि
धआगलाधडबोली।पिंडल
बारांबिचानिअलगारलेतुम
सेंनापसनेउजला।।पूरन
सेनपांजलेतस

[illegible] बआचा [illegible] दस्याद सा ;१

खिति मि स्नेको [illegible] कु [illegible] न्ये 8,9

कोपि चतुर्दश्यामः कुरुता

ना चोपि भ्रताः शिवरात्रिं

ब्रिल कूरचस्य [illegible] कुनुर

लकुरुचस्यः कुरुतथ्यामदना

[illegible]

सह: ॥१॥ चतुर्दश्यजदापूर

नाः मध्यरात्रि [illegible] स्तथैव चा

शिवव्रतं नवेतत्रः लिंगपूजा

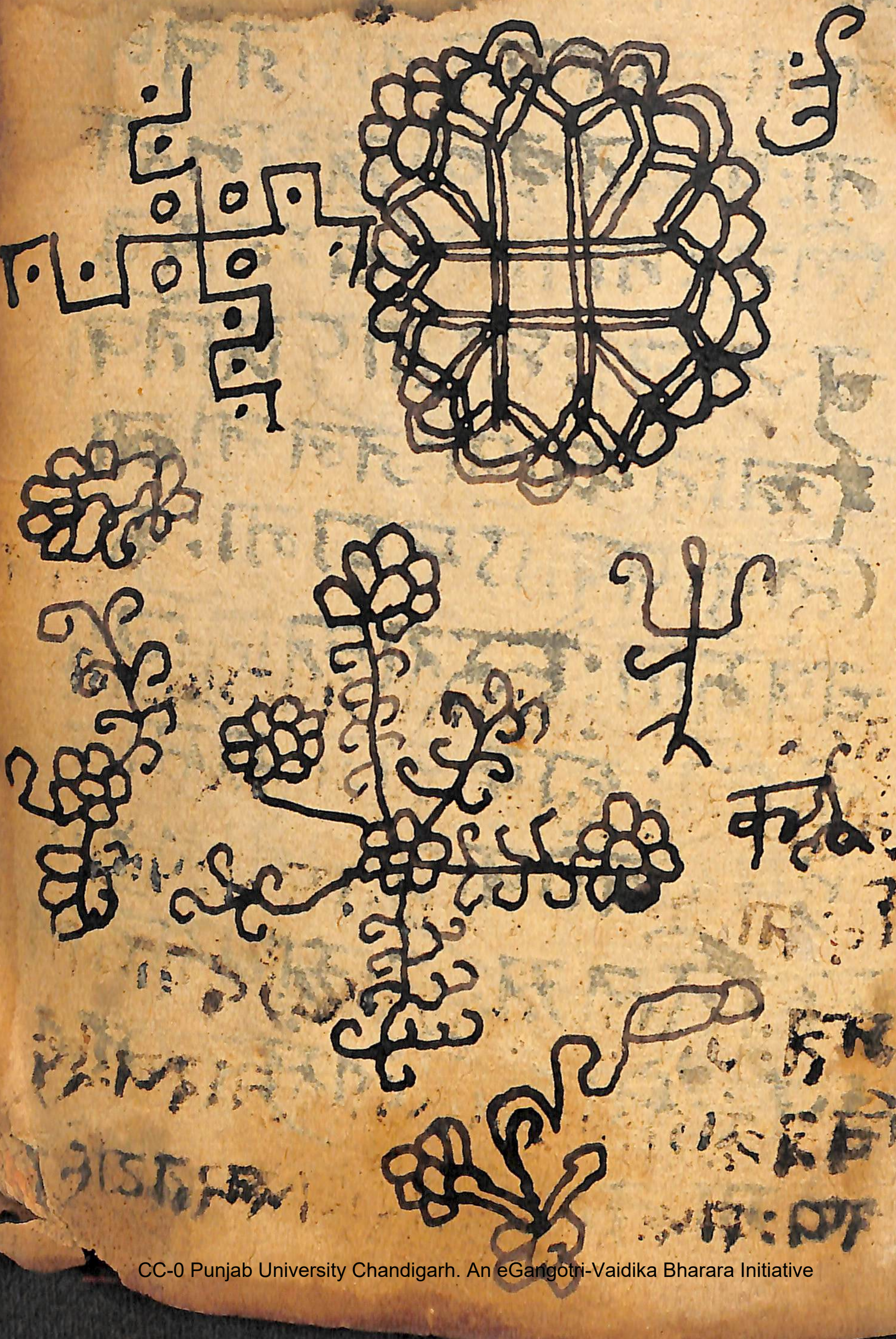
द्यसितदानवेतः ॥२॥

॥ कवित्त ॥ कासि बिधि गुंजमे
कों कुंजकान: २ : जुगल्ता
गी बैठी सी बिल्ली: ऊंगन
कऊआ चुग ति सिआना
लिव लिवकरति घातिज
बिल्लाई: मनि अपने तै
कीऊ चिंता ना: बिल्ली ज
पट करत तुर्ति कऊस:
तताषि नरकुम्भसादि ह्वा
ना: कऊआ छा मि हमल

जबकीना: मसाक्रपके
जारिलुकाना: हाईरासन
कबुहापिनलोगा: हांके
हाजी: रासबिधिमुबसें
काकउदाना ॥ १॥ कबूत्रा
कैले करतकरंगनमें: दोर
कुतीपकरोपिंगराना: बा
रीगरकफिरतबिचित्रंब
र: ज्ञानिजान्योजहांकुछ
त्रीना: बूषाबाजहोतिज
बिरूषेबहुतीतिनकोंभा
तिलाना:

जिमितिमि जगडतिउग्मि
गयो बाम्नु: रजी रसि बि
धि मुषसे कां क उमाना ॥२
९१ जत्नमेक वल: कवल मेक
वधन: मथ क रिम्नसरस बा
लिलु ना णा: देषत री सं
पट नरोनि रमल: निकटकि
मनी नरे: सर समाना: बा
रि: जा मरजनी रजिबीते:
चोरि जप मिलि रकट राना
ता के बिगसति कवल नली
चतगुं जति: राजी रसि बिधि
उषसे कां क उदाना ॥३॥

बालिकवंचलनेतेजोनृषा
मातागमनयनुमाढ़ेजवुधा
ना:पीवतवृचीग्रयेनबा
लि:क:मातावेचिमनादता
चुनाना:मातादुषतिपी
कृतिव्यापी:जननीबा
लिकुपकड़िमुटाना:कु
चपंमति:स्वरात्राति:व्या
कलि:हांकेताजीसमिवि
नुषसेकाकड़ुदाना॥४॥
स्कातिलग्रधर:श्राधरतिल
रुपर:सोग्रीतिलसुंदरमन
माता:



खंपालेति दुरमके बीधे:जि
मेनपेख्याति स्तलगाना:
खातपानपरतहैल्लाली:द
रूपलदेषतकामनजानाः
कहतवृलसुनोमनश्राल
न:होकौत्ताजोइसिबधि
तुषसेकाकउदाना॥५॥कवि
तु:सरसारंगगरूगमीनिपदमबंजन
जीतेसबः चपलश्ररुणःनिरमल
विसाल:कारेतीछनछब:पंके
सतः उतहि:अंजनमद:विकसत:
चित्रअंग:करपारप:गुंजारप:इंदु
रूप:सकरत:मित्ररवि:सरतटति

बट गुण संयुक्त आत्म सुमति
मैत्री तंत सोच नाए दहि ॥१॥
यास्त्र अष्ट हंदो चंद घु: फोता दूरिषी वे: सी र स्थो ही वे
संगार्व सरी: अष्ठी: कुर्ट कपरा घ्रण: करणी:
कुर्कार यअनेदारस: नति: वराती कार: संग
वि सरी जो गुणाठता र: व्रणवण: त इकं नो र्पखे
मपी रा अष्ठा: रांग: सों नेद: मसा कुठत्ये विचि
राप कार: कुर्म्र बठी: दपारा: कुलो: चपेर:
न शेतसी कृकु ठत्ये विचि: कु अटाबु ठी: दे:
रवण: उतो कपरा: पतठण: मिटीधा ले पु:
देवण: गोहथी नर्हद रकार देवण जयदन र्क
कररते: तदाक र्टपा रिनी आर्षपविण:
सुर मुचू नाल: –

[illegible]
॥ ...गरि ...सि ...अमवशी ...निसते ...॥
[illegible]
॥ सुनौरीसंधो सिंधिबुधिका बीचारु:
पंचितवुलेउपजासकलसिरसारु:
पहिलेअरंसघटि परचा करे:जन
सपती निरलो बुधिकपंताजोरषज
ती॥१॥दूजे अरंसछा कोकामक्रोध
अहंकारा मेनसामाया बिषीआबि
कारा:हंसापकडिघातमतिकरी
त्रिसातजोलोलपरिहरो:छाको
बुधिरहानिरबंधा:तजोअलीगण
रहोनिरबंधा:॥२॥महाजिनजगति
करिआसनकरोतनमनपवना
उडकरिधरो:संजमनिचितमन
जगतिअहार:नउातजोजीवणका
अहंकारु॥३॥अवकुदिसछाको

१९५

॥ ... बिधि ध्यावो जगद
... तजो अच्याद्रि जगति रहो जगा स
रा: ४॥ बहु बिधिना टारं सु निवा
रो: काम क्रोध अहं कारे जारो: ॥५
तीरथ बरता महु जै करो। गिरपर ब
ते चडि ग्रान पातिहरो: टूटे पवना
... काया: ... डड का रिबैठो
राया: ॥६॥ ... धरो धि आन
... दे बिनता कथा गिआन: ...
... परहो ... ॥७॥ बिं
तो ना ... ना करो: बहु चेले
का संघ निवारो: काम क्रोध अहं
कारे जारो: ॥८॥ ... जीत को नि
... जो डि त्रिबीणा ...

॥९॥ तजो अमृरपान तथा कूलेगः तिन
तेउपजे नाद्कारंगः परनारीसारीको
नरीः सतीसतगुरपरिहरी॥१०॥
देवकला तेअजमरहिबोनूतक
लाअहारंः मनपवन लेउनमनंर
हिबोते जोगीततसारंः॥११॥ सवसो
स्वासावाइ कोनाषबोरोकलेनवे
धारंः छठेमासेकाया पलटे उनम
नजोगजपारं॥१२॥ काटषोरेकाया
छीछमाहे उपजेरोगंः गोरषकहे सुनो
रेअवधूः दूध नाताजोगं॥१३॥ बिंदु
बिंदुमलकोकहेः मलबिंदुमन कोर
बिंदुमालहेः उसिबिंदुलरवसराबेवं
धुः रुदयदुहोतः नहूबेकंधुः उलटराषु
नंदलिनहोरहपाटिकछाटेमांहेबे

नतोछीषेनमऊगलींबिंदुनहजोलग
मुषछलीं॥ ...कोजाहमरीनोल्लिबो
लीपः दुसारेबोलीपपवनेः अग्निपली
ताअनहदगाजेबिंदुगोलाभेदियागग
ने॥१५॥बामनाहमारीगोरबोलीपः
मतिबोलीपचउगानेः अनहदमब
दलेषेलबेलागोंतबगगनलयेमर
दाने॥१६॥आवतपेचततकोंमोहे
आवतघरल्लिजगावेगोरषुकेहमु
नोमछंदानीदकलायेआवे॥१७॥
गगनमंकलमोमंनदुआरातलाबि
जलीचमकेघोरअंधाराः ताभोनिडा
आवेजामपंचततनोरहीसमाइ॥१८॥
अनमनराहएगनेदनकहएगाः बोलबो
अंडतबानीः आगलाअनिहोइबोः आ

पिछे रबो पानी ॥१९॥ बकते आगे सुरता
होइ बो। धुअ अगा गमन की नः सिधि आगे
मो दिकु होइ बो रखु बांधे गगन तब बीरं:
॥२०॥ मगर धज छेहरा बेत बीरं का
या का कउ ब्रह्म वाले अठसठ तीरथ घ
ट ही भीतरि बाहर लोकाचारं ॥२१॥ पं
च चलंते पवन मार्ग तनु छीं घे तत्तु जाइ
काया ते कुछ हूरि बिता वेम्ह को तिन मा
इ ॥२२॥ पंथ त्रुटंत कंधा नाद बिंद आ
इ बाइ: अठसठ तीरथ घट ही भीतर का
हे न रमो साई ॥२३॥ कांम कांन मन को
कहे कामुन चीन्हे कोइ: जेती मन की कल
पना कामु कहावे सोइ: ॥२४॥ कामु वि
तावे राम को जे को आगे राषि ज्विदृपुं का
रि मुना वसी मुपदे बो लै साषि ॥२५॥
ताप कहावे मन के न ताप चेतले पं चिंल
गावे माप्ये माजे। बिषी आरा रहि न रिपं

नाथ कहा जोगी कहा आइ । र हा । क्या
वादु क्या विवादु जोगी को वादु न क
रणा: ॥ मछि ती रष सक्ष मन नाने
जोगी गुरु मकबर हु णा ॥ २७ ॥ प्यानर
तल की गोषरी पार षष्मा गो बोलि पर
षपुरष पटं तरे मन ते मोल न बोलि ॥ २८
पानी का चित्र पवन का थंभ नाद बल
देषि लया अचंभा ॥ अंदरि बाहरि
गंधक गंधार क्या जत्ना चर बट अ
आ ॥ २९ ॥ किंगरी कृक रली पह्मा षि
बाली ती लिगोपम्मा षि: दिन को लि
ब्या रात को लोगः जोरष कहे बि जो
यो जोग ॥ ३० ॥ बज्री करत्ये अंबरी
राषे: अंबर करत्ये बाई: लोग करंत्ये
जो बिंदु राषे मो कहीये गुरु भाई ॥ ३१ ॥

नगम्रषबिंदुक्रमगजनिनुभुवनमाहेजोरापेकी
मुक्तमनारा: सुपनेबिंदुदेहाजारनाबि
मझ्झेजोगीकोंजरानमरना ॥५२॥ जेमरता
तेषराबिगूताजोस्ताताति निद्राकाकाया
हरणाकालनौरद्वीदेषतादीजगम॥ना
॥५३॥ बैठेभारा ऊभेभारोभारोजाग्रत
सूतातीनलोकनगधांलपसाकाकल
जोपक्षवधूता॥५४॥ बैठेसारोऊभेसा
रोसारोजाग्रतसूतातीनलोकनेरौनि
रंतर: तेजोगीअवधूता॥५५॥ देवलजा
त्रापथरआत्मातीरथजावोतोपानीमां
धूजात्रासफलीजात्राचितबोलेगोरषअं
डितबानी॥५६॥ नरीमोतिवि रं: त्रे लं
ताते मासधा: निश्चमात्रकीपलीपरीष्या
बोल्यानेल्लाभा॥५७॥ कहणीसुहेला
रहणीदुहेला [illegible]

कपूरबषानेकेदेओरषबनंजठा।।१८।।
सरजैबारबांचडेसोरबातुलेनपीजाबा
पाली: जीतकेतलेमूलसानदेबो। यहबा
लेगोसषस्रंभ्रुतबाराी।।१३।। हस्त हस्त
सोजोडे।घ: देतदेतनिलाद्: स्रंकसंको
चलबेरिकेननमबसियवलीउपाठि।।४०।।
सबदेतालासबदेहंचीसबदेस
सबदजेडायासबदेमेतीपरचाल
पातीसबदेसबदुसमाया।।४१।। स्र
हितिप्रमनलेउनमनरहे।गमकीछा
किस्रगमकीकहेसाछांकेरहेनिरा
भ्रुतासुलाकहेमरतांकोदास।।४२
सारथेजातांउरमधरेकामदगाधि
जोजोगीकिरतजेस्रलिंगएककाटे
मायातोकेविसमुपषालेपाया।।४३
सजपाजपसनमनुभरेपांचरंजीह०

निगह करे: ब्रह्म अगनि मो सेमे काया
ता सम ताद वेद पा॥ ४६॥ पवना
थिरं ते मन न थि रु मन न थिरं ते बिंदु बिंदु
थिरं ते कंध थिर यों ताषे गोरषी चंद्र॥ ४७॥
बाल जो सन न जो न रजती: काल मैं का
ले जो न रमती: अापलो जन काल प
अहारी: गोरष कहे ओ काया अहारी:
॥ ४८॥ धन जो सन न कोई करे न अामा चि
त न त्याग एकामिनि पासा नाद बिंदु जो
के घट जि रे ता की सेवा पार बती करे:
॥ ४९॥ स्वामी बानि षंक जां कूं ते ताष धा
व्याचे: नगरी जा उ ता माया: न [illegible] रि
षावे तो बिंदु विन्यापे किं इराव बी गु
रजी जल बिब का काया॥ ५०॥ अवि
न षार ब्रो बीष न मरबो सि बिथि तन्नदि
बोबन अगनि को सांवं: हठ न कर [illegible]
न जे [illegible]: ध्रुब आ[illegible]

९४

[illegible] लप म्र सति [illegible] षोडी भिडा तब कि उ हौति
रोगी वरस दिन मो काया पलटै कोई
विरला जोगी ॥५०॥ घोडा चोली चो
डा षार तो घरि पवना रहै सम्मा ॥ ग
गन मंडल मो पवना जागै पिंड रूप
डै तो सतगुर लाजे ॥५१॥ मारबो तो
मन मारबो लूटबो पवन लंका रंभा
चबो तो पंच तत साधबो ॥ सेवा निरं
जन निराकारं ॥५२॥ मूल दुआरे
उपरि बंदि जीत लेरि मधपान ॥ वामी ऊप
रि दाढ [illegible] पग दे तो बरिषा [illegible] चामी
पुरी के उपरे [illegible] षिउ करि बैर
सन हार सतगुर सहज बताया सि
धि आसन को तेउ ॥५३॥ आसन [illegible]
[illegible] जे निंडा [illegible] गोर
षके [illegible] भव भूमरे रनबतो हार ॥

मधा।। अवधू उनमनि बिनु किंबो पक ग
द्रिबो बाजै बो अनहद तूरं गगनमं
कलमो जे जनम के चंद्र न हो ता सूर
।।५५।। दिवसि चंद्र राति को सूरं गगन
मं कलमो बाजे तूरं सत का सबद के ने
री के हे परम हंस पिंड काया रे हे।।५६।।
डिष्टे मध्ये डिष्टि लु कार बी मति लु
कार बी कानं नामस का द्वार पवन लु का
र बो पार बो पद निरबाणं।।५७।। अ
धैं कवला उरधै कवला मधि प्राण पुर
स का बासा: द्वादसि हंसा उलटि चे
लें जोत बती जोति म का रूपा।।५८।। अ
तरी आ पापा सो नरी आ नरी आ ते ह ल
न ते र सी या बाके ते रह गुण देह ला सो गुर
मा ति गगन ही आ।।५९।। अनके संजम
के फुन हो वाये वाई के संजम षध्यान
सं तां वे सिधि मान ... नागे माया ना

दपथानि वरी थे काया ॥ ६० ॥ लवे आ
मन रहे सुचेत सिरि हिचल थे ठे गात म
हे ति चले ते उनमन गहर सुभाइ वा
णी बोले अपर आपार भाव तपावत
लागे समाधते से सा धम किति न बा
धि ॥ ६१ ॥ सिधि आसन परि बइठि के
हस्ते हस्त मिलाइ दंत दंत से मेली ताल
न मैर नडि हि की जार लब का घटि
का सा मिले आजपा जापु जपाइ चित्र
भ्रुकल गावे षंठ सों मनु मा ठन मन
लाइ दिढ पिंगलास बमन सा श्री मेदं
ह सिर ता मनु ब्रम्ह अग्नि उपजा गुर ते
देते मन रदम बद सो कासु : सदारं
ग पमे ध्यानु हे सुन मे नो तिप्रकाम ॥
६२ ॥ देव [illegible] सो ध्यान जो गी मन ध्या
वे गुर प्रसाद सिधि मन बदो पावे ॥ ६३ ॥

॥श्री प्राणायामकी बिधि लिषीहे॥

पूरक कुंभक रेचक करीए: प्राणा
याम की बिधि इन तें लहीए॥ पवन
षेचतीआ: पूरक होई: बैठे पवना
कुंभक सोई: छोडे पवना रेचक कहा
वे प्राणायाम की येह गति करवावे:
नैनि आसन इह कें तिब नावे: बैठि मंन
ताहोन हीटुलावे: तीन समेसंध्या धन्ना
करई: प्रातिमध्यानसंध्यानित्र रती
समेसमे धरो आकरि चा रितीन समे बि
षिपाती बीचारि: सोहं मह हूंत लाजापज
पीजे: द्वादसवारी माता कीजे: द्वादस
करत्ये हरक करीए: द्वादस करत्ये कुंभ
कम करीए: द्वादस करत्ये रेचक छोडे
सुर्ति सहंसों निरंतर तो डे: द्वादसवारो
सोहं कोरे: ...

दौसे जपसे घेरे आई: तीनपर कार घेरु
से दुकलाई: अलप गहादुकारि मनत्रि
पतावे: रसक मगाधक निकट नहीगा
वे: बारा षटा त्याग मलूषुणा ना: हिड
रसनेहीहोवेलीना चंचल चितु चल
नेनहीदेवे मन धीरज धरस सजेलेवे:
अनहदनाद सुनेतु हासोऊ: गरषिस
उ चितु करे जेको ऊ: अनजुगती मन
वसि गतिराषे गंउ तरसकौ तबही
चीषै: तिनी जुगति कही नमाती
गगोग कोतु गोउक कछु नाही॥१॥

रा... धन से शीतू राता पर वह ही सबै सरी
रैन के जाये अउ सलूने मोह मो मेरा मन
सोल गा॥१॥ दुबो प्रीता चकार क चंद
न ही माने अपनी ओर नि तरी रे वकी
व हा जाने अउ सलूने मोह ना मेरा म
नु सो तोल गा॥२॥ दुबो प्रीति पतंग की दी
प कि पारि ढोरी अपना सरबसु वरि
वारि प्रीत मपर घोरै॥३॥ रे कसब देवे
क र ने पिया जी उगवाय तू कचा गा के पा
रि घा मुह उ सरु अया॥४॥ रे कब दुवै
की र ने चाति कु बतु जो ला घन गर र जो बं
र से न हा प्र उ प्र उ कर बोत्र॥५॥ मीन
न र के पानी य पानी न ही ढोरे प्रीता ति से
से की जानी रे जो रे न ही जाने के जाने गुपला
ला लो के सिक स अंग ने अउ सलूने स म
स्या मी अहे र चा री अपु र म अंत न की ही

१०१

~~अथ कृतक पाव के कल्प साया कृता~~
प सुअष अशोवेते कुगत्यकार
१ सः स्परीव कृता १ सीं स्परीः हफ मुअक
१ फटकरीः सरणा १ सीं हीरसवलेः १ म
गवसरीः कुठ फ पत्रपणीनतगोत्ता
कथणी

बसंतवाले पंजे देखाचनी॥ नाथेनाथ
सिधावति मुनर गोरष जपारे॥ उ
तर दखिन पूर्बपरिम नवषंठ ना
मतिलारे॥॥

लेखे अवाडे से गोत्या [illegible]॥
सोव्याशोयाय पंग गविजारे हफा
छो १ फटकरी:फटारः चौलन
पारीःजीर कबसपीपा चूना सनातूता
कुटकपर कुणकरणाकड उतेघा
घितगावे नदिःताविदा

॥ अै फैणा: कंवैल: नकु: ठंकॉर: तवै:
॥ पंवैन: पोअंन: संमो पाल: ॥
॥ अंग्रगल: अफार: चुठकी: मात्र:
॥ आनाम कहै: लद्यांणा: सोनाए
श्रीअंतरै नामु: तरै नामु: नामु नामु: तरै तरै

श्रीआपतु लबाना जी नोशः

। १ फल

२ पंभ

३ नवंन

४ कैडू

५ पाठ

६ नासडिण

७ लद्भर

८ आदंधांति

९ नाग

१० सेव

५५

श्री

कमल रीसुद्वै नें: कमल री सा....

॥ गिरि पुत्री को कंत तिस पः तिस वाहन वस
॥ की नः संधं सुता पति को मेलः तो सब सुत
॥ सोहि साधीनः गिरधी कंत जो माले तिल
॥ कः ता सपे ता धीय कंतः ह हिने सबा सर
॥ जो जपेः तो सवा गवन पेटं तः ३॥
॥ ता वा सुत की पीठ पतिः सानल सुता को
॥ पतिः उसे सा जरनः सारि पीठ पतेः व्वा
॥ वन सोदि ठः श्रा संदर संढल ता सेरि पु
॥ तारपरि पेल सवारिः सो पा डीर छाक
॥ रेः सा दादी सवारिः ४॥ नृप धं स नृपि प
॥ सब दुसु वः गयो कंत तजि पो हेः तेरि
॥ सत वा दन ता सेर पुः जो रेमला वो तोहिः
॥ सजन ना का रे रे वा वरीः सस कुल पहि
साठः जो जा वे सेजा ए देः जा सा वे सो सा ४ः६

॥ के ज्ञान क्रो जब कहि चले: बीते ताव
॥ मी मः दनजनी प ति रसी जो वत्प: म दूरी
॥ ज्ञान दन जगी मु: ७॥ मनि दि पु बनि दि:
॥ मो ता हल दि पु मो ड्री: मु न मेद दे मे दर
॥ कले: तुम घ र लो इ तो दे ल: ८॥ माउ तर
॥ को रथि मा रपी: ताम पि ता को ना भु:
॥ धन ती कं त बुला रके: मो मा मे उ
॥ लठा भु: ९॥ मु र पति बाह नरव मल
॥ न: पवन सुत नम मो ठ उः यहि ती बो
॥ एक त्र जडे: कहु मबा क व नवि या उ:
॥ १०॥ माभु न दा नी श वनी: ना दु नी लै
॥ न व तु: जी मन दो नी मा रथे: मो
॥ मुहि दी नी कं तु: ११॥ मा व घा बो
॥ मन को हि गने: को दि र ल

॥ अजाम षु नरि मेजयो: कहु मजा का व

॥ नु बेत्वारि: ॥३॥ मजनी प्र दुलिता मेरिपु:

॥ ताहु परि प जा दे है: गा व न ते पु जो म

॥ त्यहै: जाला उपु मते लेहै: ॥४॥ व

॥ मेरे पु त भेर पाता मेरे पु: ता मु हे प

॥ डु ई मोहि: गावन वे प की मत्यहै:

॥ कं त्व न ते पु दे तोलि: ॥५॥ दुले प्रमे न

॥ वे गा गरे पु: मोत्व जे पहा होडि: त्वं

॥ पा तु प्र ने जे लो बे: ता वहि प डी ये मो

॥५॥ हू प व ध्व न ब लि हि र नं का प

॥ न जो जाइ: ह व त हि पृ छो मा ह जी

॥ तु म क क की व्या घी व्या धि: १६

॥ प्रश्री रि त वं ती न इः पे ता दी या उ ते त्र

॥ न: उ भ पत्री का फलि आन दे: तो पा

तु उ अजा नु १७॥

दधमत बीत्व समेर स्तुति कहां कं प
है बीरः ताको तद दरपन करेः सो ब
सम द्रो ती तु १८ तो कारि लि माइ रतो
मइ गुत पप मालिः पे रे उप रेन रि
वेः ताको कव नु विचारः १८ मां रं
ले मां रं ग वलीः मारं ग मोव त दिः
मारं ग ले मारं ग धातोः मारं ग म पति
ः मारं ग को मारं ग गलोः मारं गु
को हेला मडिः पु प को जो मारं ग कोटे
तो पु प को मारं गु जडिः २

पूजा इसी मैं नवकी चाहले मंगलवा
रि के दिहाडे: बकरा मंगलवारि
चाहले दिहाडे ऊनी घाय होवे कू
तोबि नि आवे तनूं मौन का नूउले
के उसी के मौली कोकें जणाग
ले बंधावे: तां के मुष मैं निसरी
की गिलटी चडावे मंगल विषे ष
ड के बिधि कर इकंत हो इषडे
तां कों आपणे हथें उटका उसी
के ऊपरि चलावे मोंतु सूरज
दहू करि कि धूपुवी आगे धुषा
वे: ठिकरी कोरी ऊ नहि दिहाडे
ले आवे आवी विचे प्रभा निडांघ रे
कें ठिकरा आनेमषबीं नले तिसि उट
र तकि सिर सपाडी रा ऊसी
मे लेमा वे: तिसा ... ताके

107

बंधूं बंधूं इ कोतरू स

स्वस्ति श्री लाल जी सह इ करे

तंदु पूर्ण तकडु बंधु रूं दु जिव लिख

वाडी थे बकरा: इ कोतरू सर

नाडि: इ है तरू सन्ना: है ही बंधा

ओ ही जाइ: आवे तो रूटै नां है

तां हां उ कलेजा बु कीं जा फूटे

गा तो हो फूटे फूट है मंत्र गुरु:

की संगति है मारी जगति: देह

काचा पिंड साचा: बीर बंकना

थ की वाचा: हनवंत कहे ऐता

मंत्र जो नि के सो प्राणी भवसा

गर मो रहे: बंधा करे ...

वेद की मे सरे: जंगल वाला

म ... ता कीर रहा ...

जो ...

108

श्रीलालजी सहाइ॥

ऐसी सीनी बतीनी बासुविषीआन
नीनीः अरुसिषी आनलीती
कों हूंसाचें सतगुरकीः हु बध
मिटानाः आविऐकनाजनाताः
राहताः रंगरानानी बतानाबा
तिधुरकीः परडतो प्रेंमपाती
गतिजांननाअनातीः पडिद्या
तनाजानीः तेषुलिजातीगां
ठिगुरकीः साहसुषपाताश्री
तमेंरांमकीं हुलीनाः आपा
गवनकोंमिटानाः तोतराता
नीअजतरकी॥६॥

श्री लालजी सहाइ

ऐसें साहिब तीनों बासु बिषै ग्यान
जोती : ग्यरु सिषै ग्यान लीती
कोंहु सांचे सतगुर कीः हुबध
मिटाताः ग्यांनि ऐक ताजनाताः
साहिता रंग राता ता तो बताता बा
ति दुर कीः पहुता प्रेमपाती
गति जांन ता अजातीः पडिग्या
तहां जातीः ते भूलि जातीगं
ठि गुरु कीः साहिसु षूषा ताग्या
त मेंरा मकोंहु लोलीः ग्यावा
गवन कों मिटाताः तो तरात
नी ग्गु तरकी ॥५॥

109

श्रीलालजी साहाइ ५

दारू बलु बंधे जु दा लिखा

। सुंठि सिस्याही २

। गकरकाहडासि १

। मालकंगणी सि १

। निसरी सिरस्याहा ४

दारू कुटिकै पुडा करणा

पुडी षीर विचि घतणी

रातिकु पां वां णी रोटी कनेपि ४

णी रूहे रूजाद होवे जाहि ते रसे

वगपाणी सां बघे त दपुडी वि

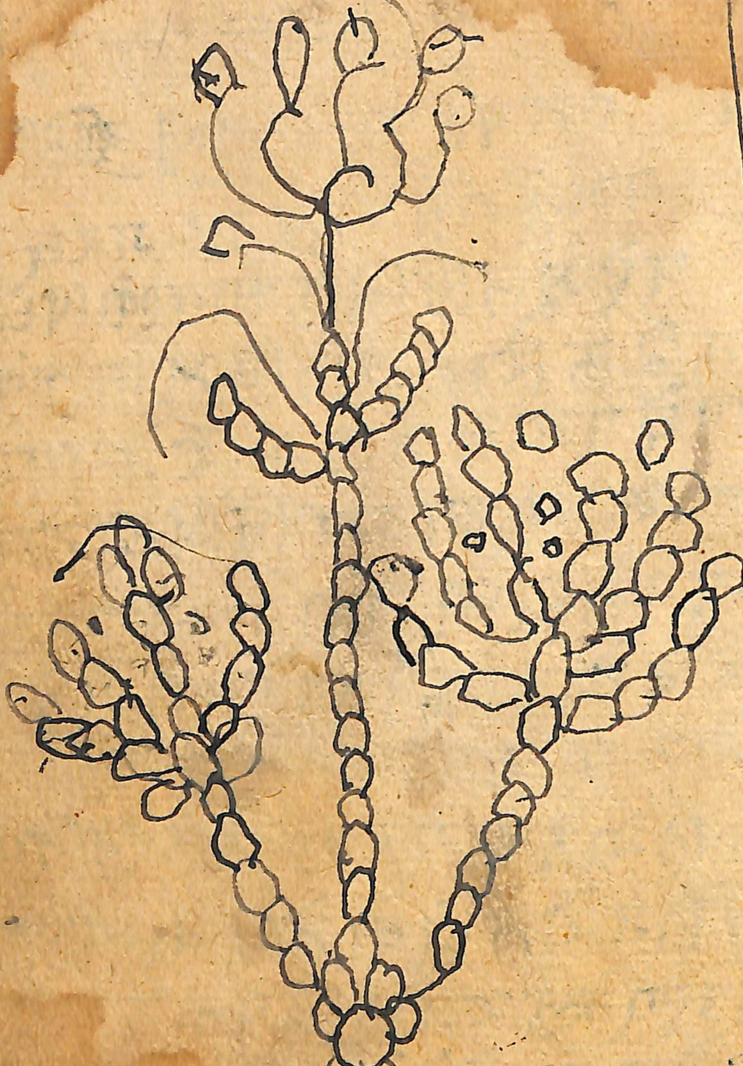
चि घतणी जदा षीर रेतां पीवे

श्रीलालजी सहाइ ॥

अथ तेल इन्द्र कण दी विधि लिख्यते

। हर ताल पान =

। रत कां पन = लालु चुणिये ने
बस तूं हो हैं पहर १६ गरध
पर्दे मूत्र विचि पुसां व लोपिधें
कढि करि घंत्रु विचि सु कारण
पिछे पताल जंत्रु करि तेल कढ
एा स्यी सा आ न स्यी विधि टी ने नु
मुरसेही नालि बा ता कर एा स्यी
सा दे मो हु बि सू रख एा स्यी सा दे
मो हु घा घे घडे रवि चि र खाण
माहि गा हे [illegible] सेर पग पहे होवि निप
जे हो ढरे तद्दां बो तवि चो स्यी सा
कढ एा तेलु रती १ ले पुकर पाने
न दे पजे तों बंधे दा ति कू ला डि
[illegible] पा सी [illegible] नु रावर ले ॥



श्री लालजी सहाय ॥॥॥॥॥॥

। पारा सिरस्याहि गरमगीरी

। टपराम बीद्दा मगजुसि ट

। पीलापो पुटु धीरसु में कु

टि करि कढणी णी सेर २

पकेर तैकू षरलिकर णव

सतूर समला पहर ७

जद घटि की पीवे तद होली विवि

बूलीना लिकम णे

पावणी होली कू बीताकरणी

लेपर कपडे नालि देवणे जद

सुके त षदि षटि नाहि देव

णा गो है दी पहर ७ गोहेमणे

२॥ जद नाहि विसवेसु हारपी

वे तद कढणे

श्री लाल जी सहाइ

पारा सिंस्याहि पके र
जिंगलु साका कसीस तोलु १
हीरू पाउ पका । जाकाइ तोला
मधु दुगा ख्पत पाउ ।
षरलि करणा दोहें रसुष
पावणे जहा टिकी पावे
तहां मस मि नालि बोत
कर रा कदे रंगूर कसा
गोली विचि घत णी लेपु र
जिन तेम सिघा देवणा
जदा सुके तदा षहि षट
नालि देवणा गो हे मणा
पके रा ॥ अजर ही

धामसोली | हेनी तोला ॥

श्री लाला जी सहाइ

द्रु रु तेल ह्रो लि द्रा

स्या षि नैं स द्रो सारी फोली कर ला

ह्री रु अकह सेरु सवा ।।

बं गु सेरु ।। गकराजा

नालि कगण षि ठे द्रॉ वि र

चि घत ण व स तूं हें हें स्या

षि वि चि घ तण कलइस्त्री

नो न नइले ण नालि द्रोव

ण पि कु विकरि स्या षि देमु

उ विचि देवणां ज तां ले पमि

ठीतें मु नइले पकु पड नालि

र देवणें माहि पें सणें दी देव

णी षहि चेल जेदी होवे ता

विचि माहि देवे दि हो डेच ४

रहि देव णा

॥८ अथ पद्मासूदं देघी पीडि द्वालिहा॥

। केवडेकथु ।

। माजूफलु १

। नीला थोथा १

। फटकडी १

। [illegible]गहरीडि १

। मोंवनसपी १

। लोहेचूणि १

[illegible] सभेकु टिकुफडगणकरि

[illegible]कूं मलेपा डिगिरि वेसी

113

८	·१	··१·
१	··५	७
:३	१२	·६

अलषबरअ अठाइ अषर अहमतउआरेहद

नाहकु

अद्सुवद्दा ॥ अलहुमअणकमुहबतफलानीकी

कलअफालीनायकूतकरारुद्दासिवा

॥श्री गाए हुद्दनायमरिवरनकूयातीमालिनदिरिहि

मंतमाकूफीदाजद्दमाअतअलअजल

अतअवअलअजलअलुईन इ असा

अतइ॥

117



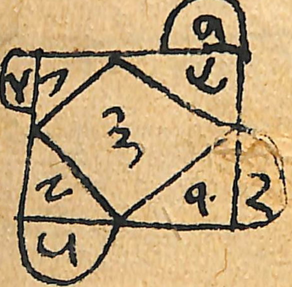
[illegible]

हिऐंपिस्दाजहहले अभी मनोतनवारि संगुनुदने
दीजासी आकें नाम धणविगारि ॥१॥ हीकिऐपि
रमान्निकब ॥ हीकिऐ राष्षाविकार ॥ हीकाऐं द्वाहर
मवसरो ॥ हीकाऐं धूंगाधार ॥२॥ हीकाऐं देख
विगुजो ॥ हीकाऐं घुटिलेघारि ॥ षहिषेटकारिप
रीयारे बांधरतगद्वारि ॥३॥ घिंबांसांवन
सांपिंजरडो चंनएपरमगारि ॥ नतिंपा
हूंघडये जतेनहागापारि ॥४॥ नेरीगो
उपाजेगालिचवांइ विघु ॥ तांषकपडं
वांणो ॥ नेपाऐंजीसिंघु ॥५॥ तांऐंबंधुबं
धांडांताग ॥ सांबुऐं चोषीपारु ॥ किलांगत्र
केकपडा ॥ बरघलांडीनारु ॥६॥ हिंगिति
लाउगेगहरा गातानाही घोलि ॥ जोतिके
घिरको सोदीनारीयागोती ॥७॥ पुरुष

110

रागु बसंतु॥ महला ५ अपना प्रदेहि॥ पाइतिनु अहनि
सु जीवो लेहि नाम प्रदेहि: हरि जपु पावा १॥ जिसि तु प्रभु रा
खिला को प्रहलाद कू कोदी ने अटल राजु अपतीको राखो
दुषनि वारि: उहा नाम प्रदेहि पापा जपु धारि॥ जिसि
ने तु प्रभु राखि लीया प्रहलाद। कू कोदी ने अटल
राजु॥२॥ अपती को रा [illegible] खो दुषनि कारि॥३
हो नाम प्रदेहि कि पडीआ: जो इ कहत प्रदेहि जो पा
धारि

गरुदेओनमसपि: श्रीमहदेउपर
मतीप्रानानम्: श्रीमहदेउकी
प्रीपपासारक्षाचंदनकाहो
वैहः श्रीअपरतनसहई जे महगोलिसहीकरीद
डाघोरचलोपित्रनालु: तजी नरवा: जुदो अंदरि
निकसाधुकपालु: सारे तड हांपे स्या श्रापि
श्रातिदिता वैहि भुरहजावालु: चत्रायाया
रजुदाजीपपूमइपूसतपुजअर्दतअदत
कालु:



पूयहेतो

सच अलाइ विल इनपेन नाकरि अलेके ढोते
अपण घरि बरासि अण :पर घ रके तन गोते
वसरि तले: लघा: बेदण तेदन अण वंजपे
बेदण जे घअप णे घरि पे टलर इ या: पारिघ
रिक वे न घावो बिहारी: तेदरथवतु तरअ
दही कऊ दुली अपे नुलवे पाए तछपे न कुर
वजा नापाऊ वछे दे घरि हिकु पुत्र पिता रापेन
तापअरेर ॥ श्री गुर्वे नमः

श्री स्री गणेसायनमः ॥ अथ श्री भगवत गी
ता लिषिते ॥ नंदकिसोर कृत भाषा ॥ कर्ण सर्ग
रस सर्व कवि कृष्ण रूकको योगि च्यार ॥ भग
वत गीता की करन गत अरथ सो अगम
अपार ॥ मनसा मंजु बरण लो कहि तसु गमज
नो प्रेम ऊ ॥ धृतराष्ट्रोवाच धर्म क्षेत्र कुरु
क्षेत्र सु सोलिन ॥ जर्ध कौन कोउ धर्म की द्युति
दला मेरे सुत अरु पांडव कहि करसे रार ॥
संजया सो विधि कहो जो अवलिल्ल्या क
रहि ॥ संजय उवाच ॥ पांडव सर ना
राजा देषी अति भली ॥ तांते करन को ईदि
मन सो करी ॥ सो ततक्षिन गुरु पै आ
ईया पंडव पुत्र की सरना गुरु जी दे
षि सुंदर सोभित सर नहीं कछु मरन
को ॥ द्रुपद पुत्र सजर चना सो जी आ
ति भली ॥ रहतो ते रो सेव कबु ध को
अति भली ॥ इन पांडवन की सरन
सुरेस सावर ॥ अरजुन भीम सम ना

तेजो घघनुषधर ॥ जुजघानवरा २ ते
परस्मारथा ॥ द्रिष्टकेतअसर्देहकेतन
न कीप्रति अर्ति भली कासीके रा राजा
करीरे अर्ति भली ॥ पुरा ज तअरु कें तमो
जु तैसै नासंगहे ॥ तेकहीये अति उतमस
कलासैन पैजु घाप नपुअरु विक्रांति सरन
पतअषीयो ॥ दोत रासौम उअरु उपदसुत
पदसुतर्तन कार्त्तु कलपरघान ॥ ऐ
ऐ ही जो कहीये सनपति ॥ सकलभरा
रथजानि ॥ सरन हमारी महिजेकहा ये
जोधर ॥ से हे उसकलसु नावो तू सुनवि
प्रवर ॥ जे सरनपर्ति घानसुनवो स
कलहुन ॥ व हजोहे परघनर्त्ति नेकाना
उसुन ॥ १ ॥ इक तुम अरुषभ करनप्रघा
नहें ॥ क्तेपाचार्यसमतंज अप्रगटवि
षानतरहु ॥ अस्व समअरु करन बीकी
कीरकहावहा ॥ सोमदंत रणलीतरन
लचलावहा ग्रवतेजी ध...

श्री गणेस्याय नमः ॥ अथ श्री भगवत गी
ता लिषिते ॥ लछिमन कृत भाषा ॥ कैरण सग
रस सर्भ कवि कृष्ण रकको यो विचार ॥ भग
वत गीता की कठन गत अरथ सो अगम
अपर ॥ मन सम ऊवण लोक हित सुगम ज
नो प्रेम उ ॥ धृतराष्ट्रो वाच धर्म क्षेत्र कुरु
क्षेत्र सु सोभित ॥ जहाँ कैन कोउ धर्म की द्युति
दल मेरे सुत अरु पांडव करि करसे रति ॥
संजया सा विधि कहो जो अवलि तत्वा क
हर हि ॥ संजय उवाच ॥ पांडव सर ना
राजा देषा अति भली ॥ तातें करन कौं रदि
मन सो करी ॥ सो ततक्षिन गुर पै अ
र्थ्या पडं व पुत्र की सरना गुरजी दे
षि सुंदर सोभित सुरन रीक कुमार न
को ॥ द्रुपद पुत्र सम रचना साजी अ
ति भली ॥ रहतो ते रो सिव कुबुध को
अति भली ॥ इन पांडव न की सरना
सुक्षेम ता कर ॥ अरजुन जी सम माना ॥

तेजो घ घ नृष घर्र ॥ जुजु घानवरा २ ते
परमारथा ॥ द्विष्ट के तत्र सर्वेह के तृ ति
न की पांति अर्त मली कासी केरा राजा
करही रे अर्त मली ॥ पुरा जतत्र रुकं तनो
जु तै सैना संग है ॥ ते कही ये अति उत मस
कली सैन पै जु घाम नृपत्र रु विक्रांति सरन
पत अषीया ॥ दोत रासौ जड अरु रुपसुत
पद सुतर्तन काढु वलपर घान ॥ ऐसे
ऐ ही जो कही ये सन पति ॥ सकल मरा
रथ जानि ॥ सरन हमारी मह जे कही ये
जो घर ॥ से हेउ सकल सु नावो तू सुनवि
प्रवर ॥ जे सरन पति घान सुनवो स
कलहु न ॥ व ह जो है परघ नृर्ति ने कान ना
उसुन ॥ १ ॥ रक तु मत्र रु षम करनप्रघा
न है ॥ कृपाचार्य सम तंज अप्र गाट वि
षान तर ह ॥ अश्व स्थामत्र रु करन बलि
की रक हा व हा ॥ सोम दंत र ण जीत रन
ण [illegible] तेजो घ [illegible] रतारगाः

121

तिकों अरपत प्रोन॥ बहु कंचन कर तप्र हस्तो
सकल सुप्रधान॥ ८ दोहरा॥ तब तह मर
अतपवल लषमरक मन पाई॥ पूर्न बल
तर पांडसुत॥ भीमसदरसा भाई॥ १०॥ दोह
रा॥ सावधान सब होइ रहो अपने अपने
स्थान॥ ११॥ उ[illegible] पमकयो सोलषमर सं
गताम को॥ दुरजोधन रजे को अनंद दे
न को॥ महासष जो गरज त सो संषबजा
या॥ पांडसईना भूमीतें रस बदसु घर
या॥ १२॥ तबित संष सबदसुना[illegible]ा॥
भरी बजिया॥ दंद सबदसुन सरना उ का
जा या॥ सबदनयार्धिन घोरा सुपारि नपा
ईआ बहते बाजे बाजे सो सबदसुनाइया॥ १३
तिस परि दोनो उत मरुष पाविराजिया॥
कृस्न अरजन दोउ बलबीर कहावरी॥
रमसन मुषरोई उतम संषबजावरी॥ १४
पंचजेन रूषीकेस सो संषबजईया॥ देव
दंत को अरजन संबदसुनाई[illegible]॥ पउ
रीमालो जो संषब को दरकार लो[illegible]॥ १५

नरकतया होई सो रए मरि संपवज रका १५
कुंती पुत्र युधिष्टर रमो मोअईआ ॥ अनंत
नाम संप करवस कदसूना रया ॥ नुकुल
अरस हदेवा तेजो घकहा वरी ॥ पचौष
पए पुहप कसंपवजा वहीं ॥ कासीके
रा राजा क हीये घनष घरा ॥ संपंउव
र राजा को बलवल ॥ घिष्ट घुमनु वेरा
ट से सूरकद हव हा ॥ सर्तक सारति सो रए
मोवए चलावहीं ॥ ७ पदं पुत्र अराउ
पतु ते राजा अतली ॥ राणमाई जु घक
रए कोतिनि नन सघरा: सौवउ हवलब
उ ते जो घकहवही ॥ व हाविघ रोई केर
ए मरि संपवजावही ॥ १८ सबदमपा घि
न घो राजो संपवज इया ॥ दु राजो घिनि सर
नाको ॥ त्रस उपजा इया ॥ वर्जअ रुआका
सि सव दुतई पूरिआ ॥ जिनै जिति सुमा सूनि
आति नि ई यचूरिआ ॥ १९ ॥ पढव स रना को
कालु रावे देषआ ॥ घजा हवई हनवतु सो
बैर ठ पेषाया ॥ सरत्र ली रुकई घारा ॥ सर
नठ धर्मकीय ॥ इह विधुजन …
पि उवई दला आ ॥२०॥ के … ब सरना

122

कौरवपांडवतोलिया॥ तबतेअवनासी
को॥ [illegible]रजनुबोलिआ॥ होआचेतना
वनासीकृपाकरुणाकरो॥ ईहरगुमो
[illegible]रायोउसरनामहघरो॥ २५॥ जबि ह
मिदेषोससतनकउजोघोषरेजोआर
उघमुकरईमईसनमु[illegible]जुघकरन
केताईररजोघसोदेषानरनतरईजोस
गठेअरे॥ कौवृधीकौरवसकलाजु
धुकरनकेताईरहे संजउवचाः अरसो
अर्जनतरईप्रतिबचनुविषान[illegible]या॥ :
बतेदुहसईनामईतनिरधुआनयार४
वदोमुड्रणतेअतिजली॥ अरुसशनपंर
धानुः॥ २५॥ तबर्तिहअरजनदेषिआ॥ सम
पर्दिअजमनूपिता पिता भ्रासनसरना
संघेर[illegible]॥ कि[illegible]कीजेसंगतमुगुरुनरआ
रुमावला॥ ईनानकरोप्रहरुसुतपोजे
आरुपितसत॥ ईनहाकिउकरोसंदरार
ससुरकंधसतवर्षकरमनपरउपं

अात्रसु: देषबिस इनसमेलया॥ रैदैनहै
रविगासु तिनकोदेषिचक्रतमया॥ सक
लहह मोरे मात॥ अरजनकउसंसा
मया। जैुधर्कि नर्वपरीतिर २ अजंन
कउक रुनमइ: कहनाकछनजाई
कहुचिता मन मैकठनषसिर्षतीसम
ई॥ २ अर्जिनोवच॥ अजिनुबोलमोसम
नपतर्किउकीजे संघामा॥ केरबक
मलेदेषई॥ बांधवमीतसुजानम॥:
हायोघनुषसोगारपरी देहजलेतीजा
इ॥ सोवलुनाहजोलेउघनुषु॥ मेरो
मनजाईमनुनाई २ सोम्राक्रि [illegible] उसलेउ
तम देषीरा॥ महामाया॥ नकाईसास
कंलआवलोकीया॥ नाहिनकुधुका
ल्पाणुजोरदेविचारिया॥ सनबंम
धुकउजाई: सोरणमरमरिया॥ स्री
नाई नमाघो राजसुषबघनमारे
[illegible] तकार

ना दलकेरी धारि।। कितनको मे गर्वलख
सुरसु।। इनेको लेउ ननउ।।३२।। जिनकरिके
तिपसकेत राजर्जन आईया ब्रहतु मनो
रापुविषाया कारसु परया।। तेउ अइब्बे
रतहई।। करणसंग्ताम को।। गृहदाराधन प्रा
नसमर परइ सकलसो।। गुर अर्पताजोपु
पुगत कसे मारीये।।३३ पितर्पमतुल्या
ससुरपौत्रनि हरीया।। सा लेअरुसन
बंधं।। पिलिकरिया।। तोमदसुदनसतना
मिलकरिसनमुषजुधुरचारिक्रा।।३४।।
तोमदसूदनकेसधनरनहाकउमरीया:
कारपूर्पकी राजुसो धर्मनबोरीया ३५
धतराष्ट्रके पुत्रतकरइसे मरीअः इते
सत्रहितकारीः नार्हब्विदारीया।। जद
प मार नजोगु मीतारिनमारीया।।:
तेवर्हब्बहुतेपाप।। सोनाउविसारी
या१६त ब्वते तेउ अइः सोब्बए चला
वतो धगाष्ट्रकपुत्रसाःसजन

कर्यावहीःकहकं[illegible]रसेइनसं
जनाजोगयारीआ॥ हा पद सूद
नकुरूपनसो जिणकारितारीया॥
३७ ईतोधर्मिअधर्मीनाहींकछुजानहीं
लै नर्वव्याप्योर्चेतुधसुधुननती॥ः
कुलबउकीअदोष॥बहुतुतोईअवहीं
अर्धमित्राकिउ धोहुपर मदु षुपव
हीं इटकइसैजननंतब्रूजतपापकउ
कउ॥ देषताविष्ठ ष्टतसोकऔसे
पेषधरउ॥कुलकनासुजोकरना
नाहिनमलीमति॥ दुषताज[illegible]न
गोपलनजनाकवनगति॥ कुल
कोषउकरहिबमिमनबोवहीःओमू
कुपुन्यपरातनसकतेहोवहीं॥
धर्मिजोहुवैरनासुसरतुतुकुलु
जावहीं॥अधर्मिकीरासबहुत
होईअवहीं॥५॥ पापसोहोवई

बहुता पीतां परिरिया॥ परपर दुषुर्या
नयें। नरता सुघारि आः तिह ते संतति उ
तमुक ब्रह्म न होवही: होवई घर ४ गृह
जे संतति तिपजे नर्क वठा ह णी कुलमहि
सहं सत्र घर्मि: नाहि सुष पावही: तपै का
लवसपत रा॥ ते कुष्ट न पावही ना कुष्ट
अन नपिंडु तिनी कर्ण जावही ४ र कल
घाता को दोषु बहु तु होई अवरी जो कु
ष्टु पुन पुरातम सकले जवही: तब
ते करो न जु द्दु सो यवि घजा णा कारि
रादिकी अनचरु: बिवा कु पश्चा नि
कारि ४ र कुल के घर्मि जो सचे सकले
जावही॥ जो कुष्ट की अमनुषा: सक
ल गवावही: वासा होई नर क महिं संसा
न ही कोई॥ उत मवचन न न पने रिदि घ
रि सुनो सो रा आहि होक ठन एह पा
वहि चा॥ मो को उपजी आई संजना

सनमुषकुरुकुनाकरहनाकरकुनजा
रे: बरहहथरिपराजसुष: पिताको
करिनासु: नारिनउतमुधर्मरिहु-
मनजमनवनवसुसु ४५ जधमपे
रेनारिकुकुधनपनकउवानु: कैरव
सनबनासरहतु: सकलेसूरसुजनु
घनधरकेपजजोपोकोमाररीमन
हिपरमकल्पणुनकबहीहारतरी ४६
संजयोवचायहकीनातबअर्जन॥ रिदे
बिचारकरि: तज्योधनषुअरुबान: सो
रथतेउतारिकरि: चिंतावटीअपारस
जनाकोदेषकरिचुपकेरहोलुकाइ
सोमनमरसोगुसाइ ४७ इतिश्री महाभा
षेभीषमपर्वणि भगवतगीतासुपनिष
तःसु ब्रह्मविद्यायां जोगसास्त्रे श्रीकृस्न
अर्जनसंवादे प्रथमोध्याय: संजउवच
अर्जनततसंजाप मरहिकृपा [illegible]
रे: नउनेनीर [illegible] केमन

125

करतूकृ[illegible]ताह ।श्रीभगवानोवाचा
ःकरहतू मूड पजाकल्पनाः राणमहिश्र
परअपरअलपुरंगुकभुनरिषिरुः
अपकीरति संसारः इहपुरषतएना
सरह अर्जुनतुमतिनजोगुःकैमत्वई
दसोद्वारिकाईउगराजोवाचाःकइसे
जीक्षामसोत्वरोअरेगुरसोसंजमुः
बनचल्पावोर्तिनीसोः चंदनपरवनि
घानुःगुरुनमरोमहापुरसः जिक्षा
करिजोजनषडः घनकार्इनिगुरमारी
यारघरमृजोगुताकोनाडःनजानाक
उहोइमलाअघवार्जिएकसार्इजोजी
तोतेहार्इवोकौरवअपरअपरचंता
सोकुधिरतनअः घर्मनसोचोपमनु
जोकुघकरोजोसुनकरैनसेवक
सर्इनवीनुःनाहिनदीशतघ ठइहा
वठोगसोगुअपरः अघवर्णमक ता

जलो सगि लोक बतबारं: संजउवाचा इ-
द्र नपति सोई उ कस्यो: अर्जन रण महि भ्र-
म: जुध कै रो गोर्व दजी: च पकरि रहो
लुक ह: श्री भगवानो वचा तिह अर्जको
कसना क्लि स्यानजी: हसि करि बचन
कहत हु इसे ना के मधि महिंचितंसरत
दसतु: जहान सो गुता हाकर रहि: बोलइ
जिउ बघवंत: अर्वन जावत: प्रान जब सोच
न क[illegible]त पंरहं त: ना हमि ना तुमि ना जगंत
:नर्हि न रजु प्रधानु: न तब ना अब ना क
बहु: सकल हमारे प्रान इसे दहा मंर्ति ती
नर्वपु बलजो बनके चोहु: तर सो मरनु
भी जाना घीर न पाव ई मोह: पंच ततु के
संगते। दुष सुष लागे आई: सी तु उसनथ
रु नर्हि कु घरि दम इत्ते उ समर जा को पी
र न देस चो पंच तत परघान दुष सष
सम ता जानीए: पावई पमन [illegible]
मय्या जानन हेतु धर: मतपाईव [illegible]

पुनहोरी: दोऊ तेन रार होत तनुपश्चाने सो र
अवैनासी ते जानुतु ऊ जो सन्नी अनमामिज
न मम रनते बेगली: ते तन घरे मन माई:
देह सो अवनसी: जावणी सोपेरु जो देह मा
हैं अवनासा मति नारकु घु: जुघ करो रण
मरि: जो रउ कहै जो मारिया: जो रउ कहत घू
या: दोऊ न जाने पे मरसु जो या सो उ माया
नाहू न जनान मन दिसि अवतन कहुतु
न होत: कौन जा: निज अवेनासी जानुतू: जन
मुम नुतिह नाहि के से मारा या: पूर्नु रासि
जग मरि: वस्त्र पुरातन नयादि कर नै तनुप
हरं अंग: त ते देही छाड़ि करनै तन सजे
रंग: नाहि सर्गे कटीया: अगन नसके
जला इ: जलकार कब हीन दू नरी पवन
न सोव जाई क घान कट सोन जलाई गे
न सो कया जई सदा जो सरवे रचि रहि यास्य
कवरी नजइ: न कु दे सेन चितवा
ए: करी ब येक स्यु अतीत अरइ सो दे उपा

न तू सो गुन वारो चतुर जन मते न स्वो पर
नु होई : पुनि ऐ जनम फिरि होई ताते इह विधि
जानीये संसार घोर न कोई : अथा वाक
है जो जनम होई मरन जीक है पृथा वानु
ताते सो गुन कीजीआ : अजेन ईह विधि
जानु : अकनासी ते सकल जग : जो दीसे
विनास : अवनसी पर लीनु होई संसार कोई
न घरु : कोउ मान है अरु सुनई : अंतु नप
ोक ई : देही ललितु न व घ होइ सत देही :
महि जाई : तब ते पुना घर मु प न तु : दर
उन करउ जीचा सपत्री सो न वषानी जो रण
छठे अंक रु : अनक घा जो पाई ऐसे हजे
खग दु षा षा उ : सुष सो षत्री सन मुष :
करे सो जु धु अपार : अथा वाजे तू धरम
तजे करहि न राणि संग्राम : घपि सो कीर
ति जो रस मु पाप करहि व श्राम : अपकी
रति संसार महि : होइ जी अपरअपार : ।

महन्ने ही ते अगली : रद मद देषु की

जे यक्करि जुधु न करहि तु: सूर कहे गो हस
जिन महि अब तु कहावही: लघु दीसी तिन प
पिस: बचन कठन बहुत कहे: उ जो तुम रम
नु: अब तब बल की न घा करहि: किउ सुष पा
वहि चीत: रणम र म रहि तु स्वाजी गति: जा
णि तौ राजु प्रवानु: तब ते अरजन जर्इल
रणन चौ करि संग्रामु: दुष सुष ला भु अ
र ला भु सम जाणहु जो हरण होई: जु धु क
रउ बा घि जाणि कारि पाप न लागता होई:
संषु जोग तु म सो कहा: बुधि जो गुर[illegible]दि
घरु: बुधि जु गति जब होई रहो: मेटे भ्रम
को मरु: रहउ पदेसु जो हृदि घरे: दोषु
न लगे कोई: धार ही जो उपजे ब दम रेगा
सु न होई सांष घि बिबेक मतु: अरजन पे
को जान: आव बेकी केवल हु तु म तक
कहु न करत प्रवान: जो या घो रे ब
वचन को कबीर ते बहुतु विसारु:

वेदवदमारि भगवनु भनु: अवरनमान
तसारु: कामकरमतेसरगगति तहा
मीआवननजानु: जोकृष्णकरेसोपाइया
मागविलासुप्रवानु: भोगुविलसहिमग
नुहोइ: तहिमनुकीओअचेतु: बुधिवि
वेकुसमाधिरसुनाहिउपजैहेतु: गगण
अतीतुपद्मानुदेवधार रहितुसोनिमसुष
दुषसुषसमकरिजानु: जइसेसरवरु
जलजरिया: रुचैसोलीजेनीरु: तरसेवेद
वषानिअ: कृष्णकीयाजोहलधरवीर:
करमकरउरादिनाउधरि: फलकीप्रीत
निवारि: फलवंधाजोपरिहरे कीजेकरमु
अपार: हरिचरणेचितुलईरे: कमिकरो
नितकामु: अवर्तजवत: अनंदपरंपूर्नजो
गुप्रवानु: अवरुकर्मसमपरिहरो: अनि
नकरोनिहैकमु: बुधीसरफलपरिहरतो
कपनजोवपरकामु: ब[illegible]

करमककोरिपापप्रुकरिदूरि :तबहीहरि
सोजोरिप्रनु: जोगुकरिसुषुप्रारि :कालकी
वंधापलिहरोकरिकरोनिहकामु:ननमिन
कौकाठीयापवरूपदनबिनु:मोहकलपाना
कीनदीवधकरिउतरहिजाननकौ कुछुना
रईअकहतसुनतसुषसार :लोकबेबेदक्तोन
दुलहिनआनयाबीचस्यरूबधिसकसुमधि
मनु:पाउअपरअपार :अरजनोवाच:षि
रूबधिकउसेदषीया :करसेकरहिसोघमनु:
॥परुबुधिकइसेबोलही :करसेअवनुजा
नु:श्रीभगवानोवाचा :छदेसकालजोकमना
:जोकुछुमनतेहोइ :आतमिसुआपेरवेबुधि
वंतकुहावेसोइ: दुषजयेसोकुनमानही
:सुषकैरहिनप्रीत :तजेरागअरुक्रोधमउबु
धिवंताकीरीति :सबसोप्रीतिअकासवतु दुषु
सुषुसमताहोइ :रागदोषुदुरिपलहरे :बके
धिवंतजानसोइ :जइसेकुरमसमघटमसे
लेइसमर्प :तइसेपामनुबषयाते :[illegible]

वंतुलेरखदरि:बिषीआतजेमनुवसिकरे:न
रहारूबंत सो:रसु त्यागे रसुमगनुहोरहु
ध्वि व घाघाले बोर:जदि पत्रआजे न जतु न करि
:पुरषु विवेकी होर:मनुकगिनु देरआया:तु
सु मनु लेवें रहे:तिनरआंआकउ वसि करउ
योगु युगु तिचतु लर:जेसरधीआवसि कीया
सो पु बुधवंतु कहार:बिखीआ कोजर्ब सपरी
या:तव तेउ प संग:संग तउ पजे कामुना:का
मु क्रोधु निह संगु क्रोधु करत लोभु बघोमो
ह ते ज्ञानु विगर्नसु:ज्ञानु गघोत बुधि गई
:होर विनसु रगदोष को घादि करि वषआ
करे सो सोगु:आपु आपा ही वस करे सहजे
पवे जो गु:सन कुलो गुलो र पजे:सल दुख है
र वनासुआचल सो तिसुषु पाई या:तेन बु
धि होर प्रभु सु:ना रिन बुधि प्रकासु रिदि ता
हि न निरमलु ताउ:ताउ विनानही सांति:तिरु
कउ चु के दुष दा हुरे रगया कउ वसि करि
बिना जनम दिनतीया:पु उव मह

त्र मकरं हि जउ जल बेग नशै: तबते अर्जुन
दर्सि करहु जो इं ग्रा ब जलवानु:जै रस्री सम
र्वस काया सो कहीये बुधिवानु: सम कोन
की रीत जो संत न कोर्द नु सोई:जो लोकन र्द
नु मानै या संत रहेता हा सोई: मसस मुद्र
गती रषिरु: न दीया करहि विश्रामु: तइसे पा
वेहि सांर्म सुषु सो ना जो चेतवे कमु: सकल का
मु ना करि दकार विचरै आतम ध्यानु: समता सो
र्नैवा राया पावहि पद निर्बानु: प्रेम मता
त जो उपजे अर्जुन मोहु न होई: निरंतार म
न महि धरे जे कांधकोपदु सोइ: इति श्री भगवद्
गीता सु पनिषत सु ब्रह्म विद्या जोग सस्त्रा
श्री कृस्न अर्जुन संवादे संष जोगु नाम दि
तीयो ध्याय: अर्जुन वाचा: तब तुम पा धुरी
उ कीन्ही संष चरम परधानु: अब तुम के
स वरउ कही अर्जुन कराई संघ मु: दूर
[illegible] वचन तुम्ह कहे संसा उपज्या मोहि:

तब ते को कहो। नर्मद सदा पर मस्स पुहो है ॥ श्री जग
बनोवा च्या: ॥ दश्मत मेरे लोक मह सदा सोई पर
घनु: ॥ सं घ जो गुसं न सम नु कर म जो गु नि हका
गु: ॥ बुध वं नु कर मु जो घ्या पद ही नाहव हने हे
का गु: ॥ अथवा हो ३ सं ना सक्र नु त वि जि सि टे आत
मा न: ॥ कि नु न रहे को उ कर म र्ब नु देही जकर मु
प्र घा नु, चो लन चल न अरु म क्नि नु देसी नाक रमी
प्र मानु: ॥ कति सन माया तेजा नु: ॥ कमि त्री या कार रं
व सं की या घर्ति निरंतर स्थानु: ॥ मन साधावे वं षी
या को नाहि न जो गुम वा नु: ॥ बिषी आते मनु वंच
कर अरज नु करो स माधि: ॥ कर म ३ श्री कर्म वं सि
करो मे टो स कर लउ पधि: ॥ नि श्रो हो ३ नु क मि कर कि
तिकर्ते मुनि का गु: ॥ तब ते जा म्या सफल तो ३ बि नु ना या
आत मानु: ॥ जो जो कमि गो विंद र्बनु सो सो बं घानु तो ३ :
तब तह र्स को म जानु कर संसार हे न को ३: ॥ ज न
कर मु ब्र हे क हे व चनु पुरातनु जानि: ॥ जो वं घ सो
पा ३ वे का म घे न जि उ जानि: ॥ जो घनु से व हरि
देव ते दे वर्ति नहीं कल देखिलानु पर सपरि दुही
पर मार थु रसु लेहि: ॥ बंक पा लु तिन री दी या ना
का नो गा अपार: ॥ तिन को दी ना न ने तीनि न को

तिहूपरितारु: अर्पितनोजन्नजोकरेतसह
नलगेपापु: बिनुअर्पितभोजनकरेतंकोहोर
सतापु: अतसकलतेहोरअनतेअनुमेघतेहोरः मेघ
तोजनविजनविधिजनकरमुतेसोई: कपिसोब
मेरघिपीयेब्रह्मारविपोगोपाल: तबतेजन
कपिमलेनित्यकरोसुभावस्परु: उजोकपिप्रव
तिपरिजोनकरेतनुतार: ईझीलेपउपापमति
अजिनसोजरमाई: जिंअमलरसुमगनुमनुअंप
तिहोरतेहसरि: घटरीमाहिसंतोषसुषतारक
षकरणतारि: नाकक्वंषाकपिकीनाफलके
रभाउ: सर्वअ[redacted]मरसुजानियाअवरुनकरे
बपाउ: तबतेकपिसलकरोविधिवतुइहा
विधजानु: फलवंफकोपलिहरोपुरुषप
नातुप्रवानुः कपिकर्तप्रनुमायेजन
काद केजोलोकु: लोकउघरनुहेतुकरुतु
मरोकरनेजोगु: पुरषप्रधानुजोकरे क्रम
लोककरेघरिभाउ: मनक्रमबचनप्रवानु
रिदअवरुनकरेउपाउअंतरकोलाकामरि

122

जो मरै कुहाला सो दनो दंनु किर्संद राखो अव घर्रिः मा
सरै तु नै घा रारै तु मै गावलन लु गत रै पार: मे रो
म हा ना रादि घरै नै घा करत अपार: ज्ञा नु
पदा रथु नाल है मै उजलु त रै ना पार्रिः सो व
लु नै रमलु मा उसत मा वली घा च तेर्रिः तब ते
अव नु जावना क वारना कउन आर्रिः रड़ी
रसमनु मगानु होर उपजै रागु अरु दोषु: आ
पुना घर्मि पलानु मला परखत मु कामे कहिः
अपुने घर्मि मरनु भला पर ते बत दुखु पाइः
अजनो वाचाः इहकवनगति क्रु स्पक हु जानर
ते उपजै पापु: रघा तोई

131

॥ श्रीमच्छल्लाल सहाइ ॥

कान्हाल वल्किरछान लो। बहुपत्र
सी तलु छाउ ॥ सुफलु फल्पा बास
घणी। अविन ताको नाउ ॥ घामु
सहेसिरिआ पुणो। छाया कर न बि
हंग ॥ कान्हाल षपुरषा तसे। साधु
जना केसंगि ॥१॥ का गत काल्पे
अषरे। तुम्हलि बलि ष बाधे ना
र ॥ अरबषर बधनु का गते। ति
देखि भूलो गवार ॥ ले षन हारेम
रिगया। मरहि केम्याचन हार ॥ का
न्ता ते ऊमचसे। जे घट ही करत चि
चार ॥२॥ केघटु हुंऊ नस्वादस

जाके नाणा होइ भागु के हसपतव
मन खोइ तू । नाहिं ति पकडु कत
नु म्यडरागु ॥ [illegible] सो निह चिंत थी । के
के चिंता करि जागु ॥ अविरत निविर
ती नाउ हुइ । जो तउ रु चेसो रा चू ॥
अविर्ति रचे ता होइ कलपना ॥ निव
रती अकल परिगउ ॥ रे मन तेरा क
छू नही । तू का हू को नाहि ॥ वद्दे मूल
फल द्ध रस ना । मत ता नि न को दे खि
लाइ ॥ विषी आ फलु हइ कडम्च
का । ति क मे रसु कछु नाहि ॥ अं
ति फोडे नमि तु घरि । काल वे नि
से मारि ॥ ताहे न चावे रां नासु ते

132

रारागुदासुमिटिजाङ्गाकानेःचाखे।
रामरसु।गलतुचनचे।तासिमाहि॥ग्रा
गङनी।तबजबअंतरनीचोवे।तरपु
णु।तबिजबितमाकिनहोवे॥सोतर
पाणपितरीमलुचोवे।संध्यातबज
बसंधपछाने।तहासंध्यामेराम
नुमाने॥जापुतबहिजबिअंतरि
जरे।मायाममताकोपरहरे॥ध्या
नुतबहिजबज्ञोहुमिटावे।नितरि
हेहुबहरिसोङीगावे॥लालाषि
लपरमसुषुपावे।जोजनुअउसेक
र्मकमावे॥४॥कथनीकथेक्याहोरे

माड़ी॥ अ[illegible] मन कों साति नै आ
ही॥ कथनी कथि कथि लोकु सुना
वै॥ करे चतुराई बहुता गावै॥ रहे अ
परसु जलु पीवै ख्याति॥ अजहु न मेटी
मन की हालि॥ जप तप संचमु बहुता
करे॥ चंचलु मनु वसि नाहि॥ कोटि
मन सूचे बिना ते ऊ मुकति न ही
पाइ॥५॥ कब मनु मुकता॥ कब मनु
बाधा॥ अब मुहि खोजि मरमु [illegible]
धा॥ कब मनु नृपति॥ कबहि भिखा
री॥ कब मनु निरमलु॥ कबहि भिका
री॥ कब मनु राकसु॥ कब मनु [illegible]
कब मनु आतमा॥ [illegible] घत॥

133

कच्च मनु गंगा॥ कच्च मनु कासी॥ छिन इक महि। सकल तीर्थ मे आतसी॥ मनु अइसा। जइसे जल की न्याई॥ जासों मिले तइसा होइ जाई॥ मनु अइसा। जइसे फटक पषान॥ मनु उलटे। अवगत नयो कान्ह॥ ८॥ हरजन मतवारे राम के। मधु के माते नाहि॥ मधु के माते जे फिरे। ते ऊ मतवारे नाहि॥ जे को कहे मइ मधु पी॰ तो बहुती मस्ती होइ॥ कान्हा नाम हमारा मधु सुने। तो मधु मतवारी होइ॥ ॥७॥ जलु अकासे जलु पताले। जल मध्ये जल लीला॥ जलु षा छे जलु

पंचे नाड़ी ॥ अइसा समा कोइ वि
रला पाड़ी ॥ जल ही ऊपरि षेल
ना । जल ले जल ही जाइ निवासु ॥ औ
घट घाट जलु पसरी आ । से जज
ल ही को प्रकासु ॥ कान्हा पद्म जलु
जल ही मिल्या । जब गगरु गमनु या
यिसासु ॥ ८ ॥ जब मनै परि आ उछिस्वा
सु । आसा छूटी जइ निरासु ॥ [illegible]
सु परम पद पाया । तब मनु आसहजि
ह आया ॥ सतिगुरु सहजि ही मिलि
ल्या । जनम मरन का संसा गया ॥ जन
म मरन संसा गया । जाइ पहुचे निर
बान । कान्हदास पद पाइओ । हो इर

तो गल ता न॥५॥ कान्हा कहे साध के
रे ग्यानाज इसंचि परच्यो ग्रा पु पच्छा न॥
संतासंचि पछान्यो आपु। साधू तन्त्र म
न्त्र मेरो जापु॥ साधू तट तीरथ इस्ना
नु। कान्हा हरि मिल्यो जो साध पछानु
॥१०॥ मारू राण गह च्यरन इ। सूरे मन इ
दास॥ रण विवेक मो पड्ढ के। तजी ज
वन की आसा॥ मारि द्रुमा मारण पसे।
जो तिल्ली यो संगराम॥ कान्हा कहन दे
ऊरन मिल्यो। च्या जो त च ल निस्पान॥
॥११॥ सो जपु जपो जो च्य हरि न जपुना॥
सो तपु तपो जो च्यहरि न तपुना॥ सो ग
उ करो जो च्यहु डि न करना॥ इसि

बिधिमतो जो मृतु डिन मरना ॥ अइसी
मरनी मरि रहो ॥ म्रितु डिन मरना हो
इ ॥ कान्हा मरनी मरि रहे ॥ संसारी मे
षोइ ॥ १२ ॥ मन सा तो गंगा नदी ॥ तन
मनूआ करत इसनान ॥ उदिक तो घट
का नया ॥ नकुज पत पसन नाम ॥ मू
रमुटाग्रु का इंगति नहीं ॥ मूले न उ
तरे पाप ॥ पापत दा हउतरे नि जे नि
रमलु होवे आप ॥ कान्हा इके साध
मिल्पे ॥ कोटजा इ अपराध ॥ १३ ॥ मनू
आ मनूआ सन को कहो ॥ चारि अवस्ता
मन की लहो ॥ जागित सुपन सषोप
नि तुरीआ ॥ चारि अवस्ता मनू लेजु
डीआ ॥ जागित सो डीज हा लिब

135

लागो सुपना सोई जहा मधि रागे
॥ सषोपति सोज हा अजपा जापु जपा
वे ॥ तुरीआ सोई जह इस्तति आवे ॥
मनु अतीतु परमपदु पावे ॥ तब मन
इ नहीं दिआलु कहावे ॥ १४ ॥ कह
न यो जगता जु यो कोई ॥ जमंत जे मि
नु जगति न होई ॥ राइरंक समना हि
देषे ॥ त उल गी जा ट ढ मिथ्या के लेषे ॥
साषी गीत ता न पद गावे ॥ अर्थु क
रे बहु बिधि चिहुरावे ॥ ऊच नीच
मनु रनही जाने ॥ तो चतुराई आं
द वषाने ॥ इड़ा पिंगला सुषमना नान
री ॥ मिनु बूजन ही लागे तारी ॥ पर

आपन मत आतमन ही बोले ॥ तउतो त्रिगु
ए रूप मइ डोलइ ॥ तुरी अवस्ता जो
नही पाई ॥ त्रिगुण रूप मइ नट को आ
ई ॥ जब ते सो हउ सो हउ सबद उचा
सी ॥ कालु सो नगता पावे अबनासी
॥ १५ ॥ अनेक ने षकरि नगतु कहावे ॥
गकुर अ रपि आपि ले षावे ॥ चिहन
चक्र गलि माल्हा पावे ॥ जो उतालो
ड मुषके ध्यावे ॥ जो उता पातु तु
सी का तोडे ॥ जह सबदु न आ
वे तहा ले जोडे ॥ कहत कंबीर
यह मूल इ अगपानी ॥ [illegible] बहि षावे
ता तु नही जानी ॥ १६ ॥ जो उनाना मु

136

निरंजनु जानै॥ तिसि का रूपु जनमो
विषानै॥ जल ते धरती अरु अंकासु॥
बरसै अंजु फूलै बनु बासु॥ जीआ ज
न्त सभ जल ते होई॥ जल बिनु धर्म
कर्म सभ न षोई॥ कहत कबीर रवसु
स परकासु॥ जल बिनु रंचै हि वसु
मासा॥ १७॥ जिन्हा सति गुरु ने ... न
ही॥ हिरदै सतिन प्रकासु॥ ते न रक
हूं न पावही ... कि घट ना हि वि
स्वासु॥ जे मूके सबदु न जल टी ...
तहा सबदु नही को नासु॥ जे अंध
ले जानु न दरसी आ॥ तो निरमलु

२

मानु अंकासु॥जे बदरे सबदु सुर
तीआ। कछु सबदु नही तहा नासु॥
निरगंधे गंधु न पाईआ। कछु बाव
न गई निबासु॥ गंधु हा बाव नेला ही
आ। वहु जानै टाक पलासु॥ जे क
रते अवगुनी कीए। कोंनु देवै गु
नु तासु॥ का ... रचे मरिष अवगु
नी। गुन लहे विवेकी दासु॥ १८॥
गुरका सबदु ले अरटा कीना। जतु
सतु कपसा धारं॥ त्रिगुण देह ले गे
ज्ञो कीना। पड़ का ... ततु बिचारं॥
... सामु नसा मनै सा दोऊ समरथ

137

॥घा॥ सूवनकुलाम
आसारं ॥परमततु मेरेसूतु नली आ
तो॥ बासाच्चेत नराङी॥ ग्रि महाविस्तुम
हादेउग्रवयूहन्हिती नो मिलिगां
पाइ॥तोस्पान हीतु टेजोसान हलु
गी निनजास्पाजाङी॥ असाज
नेकसु नोरेसाचो॥ कान्हारप्हाग
लेपाई॥१७॥ जतुरेषासासतु चउ
तारि ।संतोषु पहेवजा।देही कासिंग
रु।धीरजु पटका।षिमा हथपाग॥सो
हसतगरके हथवाका।गानध्यान
परिरी ऊकताङी॥ यहपरती तसंत

1 नयाअकासु [illegible] म [illegible] जोती॥ त्रिगुण
अतीतु [illegible] हिरी चेपती॥

130

नेयाई॥ [illegible] पती [illegible] काण्डई॥
[illegible]रि गचलेकु मारि ग नहीजाई॥ का
हाके हे गुरके प्रिसपादि। अऊसे वस्त्र
मुहि आदिजु गाद्दि॥ २०॥ कबीर जती
का निंद्यकु नवेरी गी। सती का निंद्य
कु दलि ऊ॥ गुरकी निंद्या कंधु टूटे।
सरव निंद्यकु पातकी॥ जे जती के नि
द्यक कौ रोगु नही षाइ। ता कोई जती
आजतु न कमाइ॥ सती के निंद्यकु वै
दलिदु नही व्यापे। ता सत की पउडी
कोइ न पापे॥ गुरकी निंद्या टूटे नही
कंधु॥ तो गुर सेवक का के संबंधु॥ २१॥
कबीर साध की निंद्या करे मति कोई

138

सरपरिजानुनरकगति होई॥ साधि
कानिंदकु महा हत्यारा॥ साधिक
नेधिकु परमेसुरकाभाख्या॥ साध
केनिंदककी आरजा घटै। साधि
कानिंदिकु घटद्वोघटे॥ कंचन
समगिरि देवै दानु। निसदिनुक
पीप्रभिगिंमानु॥ कासीक
वत्रुतोले वेजाइ॥ साधकानि
दकुनरकिसिधाइ॥ जगतिज
गवानुवकुहइ। विरलाबूझैके
इ॥ कबीरे मितरिकातीकपर
की। तातेदीसैदोइ॥ २१॥ कबी
रनाकछुजतनुनातपुकीओ

नाकछु रहै विचारः॥ नाकछु म्येदुक्र
वनै सुन्यो। नाकछु विधि वाकिवा
रु। नाकछु मन्त्र परदुष दुष्यो। नाऊ
ठां वसि होइ॥ सहजे गुरपरचा न
या। संसारलीनको ज्ञा॥२२॥ कान्हा
नउद्धारि मूद्धि करि। दसवेलरुपक
रुचाडि। सहजे सूनि परमात मासे।
म ऊपको उ निहारि॥ कान्हा कासी
त पुकरो। गुफाकरो ब्रह्मंठ पता
तेला वेसू न घरित्रिगुण करो बां
ठषंड॥ २३॥ सहजे आसात्रिसुप
ना न ही वापी। सहजे आजरुज
रीआ॥ सहजे आतिसमाधिलं

[illegible] अं
गाई। चितु षाधु ते जरीआ॥ [illegible]
त गुर किरपा कीनी। बुद्धि समानी [illegible]
रीआ॥२३॥ इकु बव ना आरनी चेआवे
॥ उचे फल कौ हाथ उगावे। कै उफलु ए
इषि द्रुति निवासी। हरि नहार करेस च
हासी। के फलु आ पि दया करि आवे
॥ के चरि जाने तो फलु पावे॥ केसु द
रस्याम की पूरन दया घरे। मंगस
कल पिंगल चरे॥ पिंग चरे गरि मेरा
॥२४॥ सूछ्ब म्फ्र स्तूल हमि जाइ समा
उ। जहा दीसे तहा हम रो नाउ॥ उ
सतति द्धा स जम्न नत हमारी। हम
ही सूत हम ही सुत धारी॥ अधर

ढुलस खों हम आड़ि। हमतारि हम
...॥जब हम अपु नापावाने
हमही मूरति हमही देउ॥ हम ही ती
रथ हमही पानी। हमरी गति कि रह
नहीं जानी॥ जो ऊगहरा॥ सो ऊगह
रानी। काहा हम ही मेटी हम ही मा
नी॥२६॥ नउसढुनदी सकल उल
टानी। मारि गढ़ो उअपमारि गंघानी॥
दुलकि ढुलकि बहु सूनसमानी॥
सूनसमुं जब हु मिली आपानी॥ सो
पानी इकु आचमनु कीनो॥ काहदा
स अइसो पढ़ची हो॥२७॥ इक वीर
जानत रहहु जोगी। सूनगुफा मइ संहरि
जोगी॥ कर्म माया ते रहे अरोगी। चिनुब
औसाद्धादि जो नराची जोगी

करि

परीतिपानीपीआ॥ चिन धारती॥ चिन हूँ बु
आ॥ अखंड मंडल की चि ब्याषा ई॥ सुतिप
रती तकि खिंया पाई॥ चिजु ली चिंम कार
करि लीया॥ चिनु म्या द्वार॥ चिन हूं छाया॥
कान्ह दास एह ही जोगु पाया॥ कान्हे के आगे
ले समाया॥ १०॥ प्रेम के मास्ते बापुडे॥ अ
नन्न इला गे घाउ॥ लिवलागी सुचि मची
सुरी॥ रण मे जपु गदाउ॥ वेद पुराणि॥
ई श्रा ले ले उन को नाउ॥ सुत हि प्रकास
प्रकासी उ॥ अनहद सबदु उसे गनु॥
पवित्र करी सन्न मे क्हुनी॥ उध स्वास क
लें प्रकासु॥ कान्ह तनु दासी नया॥
सोई गकु रु सोई दासु॥ ११॥ अंच
क्या जाने चंद्र गुन॥ नव रा क्या धुन

को
रागकबक्याहोंविनैमलो।तौठकुरा
पुहाग॥वदसवागंगनवाईप्रहस
नहोविनेकाग॥नानिकहरिकेमजे
मचितासचलूण गलैलेखाइ॥३०॥
सजकोमांगतबहुतीबहुतीकोजन
मागोयोरी॥षोटषपटपरपंचराचिकरि
गहमोंलछमीजोरी॥वाधेघाटेसवाल
वाई।कीतीफेरिचहोरी॥पेटनषरत
अंगिनिलाईसजधरतीनालिचंयो
री॥छोदेषोचिषाजातीकायासुहू
सोरी॥काहायहचिचिजानिके
गस्युकऐमतिजोरी॥३१॥बकताश्रो
तादुजनै।जानेतीनोकोल॥जारसुक
लामूलमद्य।साईहोइपसरीदार॥३२॥

141

अं धवकाजा नेचंद्ध गुना च वराकाधुन
राम॥कब काहें विनकोवलोल उहि
कासुहागु॥वडसवागंगनवाईपु॥हं
सनहोविनिकाग॥नानिकहरिकेन
नचिनु।सजलूणग्रलूणेस्वाद॥३२॥
सांतिसरोवरमंजनुकीना॥चतकोचि
तचेतनकादीना॥जतकीधोती॥हंस
त काटीका॥जुगतिजनेऊजनकेजीअ
का॥हिरदेहरिसुमरनकीमाला॥दआ
धामकीनीधर्मसाला॥पांचआपाव
नकीपरतपागति॥पापपुंन्यकाले
पुनलागहि॥नाउनजननोजन
संतोष॥साधूजनतेऊनरदोष॥
॥३४॥गुरमनेतेपावेराजु।गुरमि

नचेकाकवनेकाज॥गुरतेजिचेषे
कोवेनाई॥लोकअलोकदूहेपति
नाही॥गुरमंनाॾ्रूएत्रंबीकअल्ला
हीसकलोसिधसवाई॥गोरषना
घमछिंद्रनाथा॥तिकुंजोगुरतेछु
सतिपाई॥गुरत्र्पुनेकीकरीइसे
उमा॥निबतेफुनिहोवैदेउ॥देवाते
फुनित्रंब्रितिजाता॥गुरकेसबदमहा
रसुमाता॥महारसमातातलुततहिसमा
धा॥गुरपिरसादिजनुकाकाम॥३॥५॥
पदुसाबीसदासुनो॥पतीमिटेनमनके।
धोगु॥संधिसाचोकेनातरे॥तिन्हके
घटेंग्रजोग॥संचतिबपुजेक्याकरे॥
हिरदामहाकगेर॥नवनेजेपाणीचै॥

ताहिनदीजेकोर ॥सीजेफुनिनीजेन
हीछ्तेपानीमाहि ॥कान्हासंघातिबपु
ड्ढेकमाकरे।जेघरिनिंतरिराचिन्नाहि
॥३६॥जबहमिअपुनाआपुपछान्या
।तकउनुभीरंजनुकउनुहेरामा॥घरि
अवतासुकीपद्विधिनाना॥विधिवित
बिधिविघ्नउजनुच्चवरांना॥नया
समाधिअगाधिआतमा।डगरिचित
नपसराना॥कान्हआपआपिसमझे
विनु।सतहीसतिनहीमान्या॥३७॥
चलेनचीटीउदेनबिहंगम।तहा
कोईसोवेनजागे॥पच्छअपच्छदो
अचलिछुटकी।तहाकोऊजूझे
नत्तागे॥[illegible]नुअवलंजननहीजा

ओं

इच्छा॥जहा तहा मनु लागे॥जतन अ
वजतन रहति कछु उपजी॥कान्हा
ताके आगे॥३८॥मनु गुले समान सं
त होइ बइठे॥मछली करे ध्यान॥
नई होइ घाति॥आम की नेम जेन
होत गावना॥अंतरि चितु निरमल
नही कीनो॥बहरि समाधि लगाई॥
छाडि परपरपंचु नजे गोविंद को॥ति
नो परम गति पाई॥कान्हा कहे जा
रि गोविंद जसु॥वेद पुराणे गा॥
जहा त्रिण वी तहा जलु दिषलावे
जहा जलु तहा कछु नाही॥जहा निर
मइ तहा न इदि षरावे॥जहा नइ तहा
न दरा ई॥जहा ति कु तहा मनु दिष

रावोम्यनुबी तागिरमाही॥ कान्हाक
हेउकुजपच रजुदेष्या॥ सर्वसंगतिहि
माही॥५०॥ बेघे क्रिपा कटाछु कोसे
पाछेघ रेनपाउ॥ लेषाटा बड़राग
का॥ निठुराति जूझति जांड॥ हारिन
जाने बापुडे सदाजीति घरिआइ॥ बे
लेसदाअ षंडदिन॥ सुनि सुनि बच
नविवेक॥ कान्हातेऊ सूरमे॥ कोटा
मधेएक॥५१॥ पंडितु पडेन भेद
पुराण॥ तिन्हकी साष्टिन सुनो सिआ
ना॥ जेपडे गुजे कारजु सिध्यि होइ॥
तमूरिषुराषुकरेन कोइ॥ मूरिष
कोराजा करे॥ पंडितको करे मुण्या
जु॥ उदरगार्थकरिआपुणे॥ बड़ा

वेआदिजुगादि॥बेदन्नेदुनलागाही।
जेसिमिलीआमुषुहोइ॥कान्हाति
किचरननकोंवंदुना।जेहरकेसन
मुषहोइ॥५२॥आतमहेतीइकुनला।
नपडीइसइलाष॥इकपडिंकरि पनि
नेचतुराईआं।नमानेउनकीसाष॥
उनकीसाषिनमानीइ।नचलीइउन
कीचाल।बादीपंडितुनामिले।इकुसं
तुमिलेचंडालु॥कान्हाजीसिमिलीइ
सुषुपाईइसेजीवतनमुनेहालु॥५३॥
चैतोरेमनजनमुगवायोंमिबीआ
काफलुअंब्रितुकरिषायो॥हरिस
मरनसोंहेतुनहीकीना॥वंछवादि
परीचनुहिरिलीना॥तुमजानामजूरे

तिसुषुपाया॥अंन्यकरममनुसदालगा
या॥विपतिपस्येकछुकहनुनआवै।
कौपकमंआगेचलिआवै॥इसिअव
सरकोजोगिकमाई।बिनुजोगेछूटए
नहीनई॥जपदानजपतपकरै।जोधि
पडेव्रेईलोइ॥कान्हदासबिनुजोगीइ
नेमछुनमेटैकोइ॥५४॥हउतादीनुअ
धीनुतुमारो।तूमेबसमोकोबसिमुह
मारो॥जतिकतिउचरोंतेरोनाउतउ
मेनुअवहुनहीकोइगाउ॥हउगरी
मुतेहारीओट।तउमेनुअवरनही
बीरकोट॥कान्हदासकीतूहीसहाइ
।तउमेनुअवरुनउपजेकाइ॥५५
आदिबिचारोंपढिता॥बूजोआदि

बिचारु ॥ काया गाड़ जीतो सति गुर
के जस पादीं हा हो ता छुत का जनू किह
होती ता कारि ॥ वड्स सूरत बकड़ सेहो
तो किस संछि कर त बिचारि ॥ न भूलु
पंडित न भूलु पजे ज्या । नरम भुलाइ
लोई ॥ आदि परमा रषु का का कथिले
वे । विदुला बूझे कोई ॥ ५६ ॥ लरजनु बो
ले मूरि ष सपेषि । सुषु जावें दुष आवे
हाथि ॥ मूरिषु जाने भूही ने लाई । मह
पुरष सो करै म्यु राई ॥ हरु बाधि सह
दुषु देवे । साधु सो ईं घनी रिधि लेवे ॥
वडरी सोनि रवड़ रमती । सा गतिजन
वे माहि ॥ कान्हदास तिसि साध कों ह
रि राषे रिदि माहि ॥ ५७ ॥ कहा भया जो

प ।।न गुड़ी मेरो बाट दिखाई ।। अलौ रचि रचि
अनेक ह्व चाटी ।।

बहुतु सुष पाया ।। राज भिच्छत म्हसला
वगया ।। सकल जगान्नु जेरा षे ना ता हुक
विनवें इक चंा पे पा ता ।। सिधु हो इकरि
रि धिमन्नु लावे । जो कछु कसो सो चलि
आवे ।। चारि वेद मुष उचरै नीति । मग
न नया इंजन की जीति ।। बहु सास्त्र कीस
नमिधि जाने । केरव वे कु सकल मन्त्र
माने ।। जप तप संजम राण बहु करे । अइ
सा सूरा को इ । कोनादरसन ही पाई ए
जे रीदि दूसरि होइ ।।५८।। सिजा हमारे पं
जव सिकरने । ज त सति सोवन बाटी
।। गयान्नु हमारे वा ण बटी अले । छूरे
मजर एक पाटी पनि छडु हमारी लेपे
तु लाई । तहा सहजे नजा षोई ।।

कान्हदास असी सिजा न्हि छाई। जल आ
गुन सो वे कोई॥५७॥ जो ई स्तु ता सो
ई षरा वि गुता। जा गोमन का ज्ञरमा॥
ॐ कुक रि आस नु प वनु सांधि यो॥ नी
ला गो ओ कर मा दी ॐ संध नि रालार
हियो॥ सहजे आज रूजरना॥ कान्हदास
जो आपु बिचारे। मिटि गयो आवागा
वना॥५८॥ इंद्री जीति असे जतु जीतो प
ज इसे आगा नि सिन्हि तिघि त का मा॥
आगा निज लोचि तु ठलके नाही इ
उजतु रु के तो जा ना॥ कोई जो गी को
ईसन्यासी। जइ इसि बिधि जतनु क
माना॥ यह परतीति विरला कोई॥
जो के ततु दर सी कान्हा॥५९॥ इंद्री

जौ तपै जती न होइ गो सती [illegible] ती
गुरु [illegible] सेवा की तपै चेलो न होइ
गो। गुरू न होई कहाव॥ मुषमूं छि
कारि मुनी न होइ गो। सनासन ती
रथ न्यासी॥ तौ डे अ गस गती रथ ना
वे। हूठे लष चउरासी पा दि बजोति
आ गम होइ बूझे। ततु न आतम जा
न्या॥ इ गा ल्को व हवा सुकं बीरा। ज
बल गी आ पुन जान्या॥ पर॥ अनु
छोडि करि तपी कहावे। सुकस
वाद स नो कछु षावे। षावधि
दो दे अ ष [illegible] टा। षावे गरी कहा
कोट॥ उ चाल अरु म्य ग्या। ए ब

ह्रां कंत मूल के ते गलाइ॥ जे तघ
रि बधे गधे चरइ। घरि चारि गुरु सीच
टी करइ॥ से स्त्रं न का करे अहार।
तिसि सों को न रपि आस॥ अइ सम्
ऊ बस इकलि माहि। गेहा देइ अन्
न षाइ॥ साधू न पैजो गुरु का ना
मु। ते चह दि कुंभे पावे गमु॥ ५३॥ गुर
चिनु जतु न गुर चिनु सतु न गुर चिनु
दया न गुर चिनु सील॥ गुर चिनु छा
उ पावे फील॥ गुरु विसा गुर महदेव
गुर देवा ते देउ॥ जिन की प्रीति गुरदेव
सों कानी ताकी सेउ॥ ५४॥ मन अल
मस्त लाल के प्याले। सदा षुमारु न इन
मतवाले॥ उतरे ष पुन जाइ षुमा

रीपलकापलकमंडूलीगीतसीसि
थुसुधामङ्‌दुबकोधोई।।वसुश्रती
नुसांईमुक्तिपाईं।।वसुश्रलनुमरम
कासंचु।।कानकहासतहों।।विलग्रनंद
।।५५।।जोजु जाऊसूनका।।मूनगदाव
दहोद्र।।कितनेजोचेबिपिपचु।।बहुदि
ननिकस्याकोद्र।।जोजोगग्रासोआव
द्या।।नछ्राणाकतुजाद्र।।कान्हाबपुम
लेप्रेमके।।ग्रनदेष्षेपतिग्राद्र।।पद।।
ग्रबातकीगतिक्याकोऊजाने।।गति
जाननकोसकलद्रग्राने।।सेसनाग
पताकछुजाने।।सहंसनामुनितुरहि
बषाने।।संकससंबग्रसुग्रकेहाने।।षट
दरसननननरमनुलोने।।ईसरकोग

तिईसरुजाने। [illegible] नहूंजो तेपरवाने॥ हु
कोकुअइसी॥ अनकहनीकही अतकाहे॥
॥५८॥ अकल्प कालाजाकोमनु नयो॥
ग्रिष्मने बलु इंद्रनको गयो॥ निजुरसु
तेज नि बलनईमाया॥ सति सति आ
तमपरचापाया॥ आतमपछैनया॥ च
सासु। निजुरसग्यानकीआपरकासु॥
निजुरसुग्यानु निरमलकरिजानु। हुइसं
नीमहुन इहस्यानु॥ न रहइस्यानु चिस
म कछुपाया। चिसमपाया कछुहनु
न आया॥ कहाकहोलहि याबरीचा
ला। जीवतका नाजयोने हाल॥५८॥
आउरेकुसलीआ ज्ञानम्पि ज्ञानी।
आजुततईआ। आतमरतिमानी।

मनु लीनु मलीनु सता गहरानी ॥ जि
जल माहि बूद्धि हड़रानी ॥ जल टी बूंद
फिरि गगन समानी । न पड़द का न्हा न
ही खोजत मेंस्यानी ॥ का न्हा कहे सुने पु
नि काकु । का न्हा आतम देहुता । का न्हा का
हे उलीमिल्यो का न्हा कंान कीसेज ।
॥५॥ सूरा सो जो मन सों लरे । बिमा की
टेक री लै आगे धरे ॥ काम क्रोध के बा
ण निवारे । हर की कथा ले अंतरि धारे
॥ सूरा तेऊ जानी ए । इसि बिधि करे सं
ग्रामु ॥ का न्हा मन का मारण करनु ह
इ । टीके को परधानु ॥६॥ आवे ना
गाजा ह्उ घाउ । क्यारंा ना क्यारं कु
बिचारा ॥ रां णा न्नी मरे रंकु न्नी मरे ।

पुनि अन मानु कहा को करे ॥ मराणुजी
वणु चराचरे । दोनो सिरै घरि होइ ॥
का का यह बिधि जानि के । गरभु क
रै मति कोइ ॥ ६१ ॥ लोह मुडे मु षमुडे
न वांको । घाइलु चूलै रह्यो चितुता
को ॥ लागी च्चरही तेउ रमाहीं । पन्धो
चरती तेउ ताहि ॥ रूम रूम मो ला
गी घाउ । तो चीकहे आउर गाउ ॥
लागी च्चर ही ते षलषलसीस ।
का का च जो अइसे जगदीस ॥ ६२ ॥
ग्यानी च से ग्यान सरमाहि । जिनि जलु
पीतेउ ति ने बलु नाहि ॥ ग्यान सरोवर
जतसत पाल्य । चलै हंस हंस की चा
ल ॥ धीरै चरि चरो रे पाऊ । ग्यानी स

हेग्यानकोताते।सहैताउततुपरगाटिहो
ई।अइसाततुमधितावैकोई।।काहैपावै
गुरुपरसादि।म्याचैपंडिता।बूझैसाध
हे३।।अइसाचित्तअरुजीवैसोई।जाको
[illegible]ग्यानकोहोई।।जउलौचित्तअरु
जरिनआवै।तउकइसेचित्तसोसा
धुपावै।।काकाकहैसुनोरेभाई।कि
सुमिल्यापारिचित्तनजाई।।[illegible]
नुतेसाधूसंतमहंता।।त्रिगुणरहततुपं
चौकेहंता।।तीनोमेटिचउ[illegible]सो
सानहीवहबाधामकतिषला[illegible]।।
जागतसोवततिस्थिनानाही।।[illegible]
पुणजिउनिरखैआपमाही।।[illegible]पा
मेटिआपकोपाया।।निजघरिमा

हितबिजाइसमाया॥ महामोहकापिं
डमुलाना॥जहांकायाजाइतहां
समाना॥ उर्धगगनमोंअवीरसूपी
आमेटिउपाधि॥ लालदासतहांजु
डिरहे॥जहांसुषनिधिसहजसमाधि
॥६५॥ जिनिदिव्याप्रभुजानी।प्रतिक्रिसंतनको
उपकारु।आनातेंजतिसीतलाकोरेप्रबोधु।बिचारु
अंतराल।जबहुंपरेज्ञानरतनछुटिजाहि: त्रमर्ग
पजे।कुषुपाइपाबिबीजमोंलपटाहि:जा।जाकूजि
नकेसंतेरु।तिनिकबहूंबिघननहोइ।सबकेबंधनका
टहीकामनरहेनकोइ।साधकाल्पतरसदासुषीदु
रलंभुजांकोसंघु:लालदासप्रभुपाइपसाधकोरेज
दिसंगु॥६६॥ एकादसीकामधेनुहैगमआई तिस
कीमहिमावरनीनजाई॥ राषेइच्छा राषेमहेसु
राषेगोरषुकहेआदेसु॥ राषिजूरुराषिजहिलादु॥
जोऊजोकूराषेमोसिवेसाधु॥ राषेंदेवतेंतेंइंड
मेरुउदिकेराषेमुनीसरसनतसनकादिका॥

150

ग्रंथर वरनकी कथा कहूं रामबाति काको सोकुं सो अजराबे जिसे रषावे आपि ॥१॥ एकमसा जो लिवे सोकु जग हा रु तिसजन जो एक जेनरा बिका रु ॥१॥ दुती आसा जो दुती आ नासि राषें ॥ पिर देस चता जो जनु ता षे ॥२॥ त्रितीआ सा जो त्रइव सि करे ॥ जुग जुग जीवे त्र जनु ते ऊरु अंर ॥३॥ चोथि चोकी त्रेगु ब ल्हावे बहुरि गर्भ अं जन बिनसो आवे ॥४॥ पंचमी पंच वकरे केतले सो जनु तीन लोक परधान ॥५॥ षष्टी सा जो मकि स न सो षकि मा ति के घर जोसपा जनु रे साहि समनी सा जो सन के कां रो ष ॥ त्रबितु बचन मन मुचि आष ॥७॥ अष्टमी सा जो सबु करि जाने अवुं बधा तिदे सोमनी आ मे ॥८॥ मनु मा लोनेमा उतारे ॥ ज्ञान का ताउ तिषे रामसहे ॥९॥ दस मी न अ वसनु न पावदस अं का ति त पावि वावे ॥१०॥ ग्यारस इक नेइ को दसी पारे ॥ मनु निसा

बुधि सहु जि जनत्वाई॥११॥ हे कोप मातवु विचारे॥
सहु नाम हिरदे मो धारे॥ तनकी त्रिष्णा सकल मिटावे॥
बहु उग्रह बज [illegible] निन गावे॥ पांच बांधि चेल
करे: धीरज कुटी मन पर धरे मारि [illegible]
ति उपजावे सहु जपि आत्मा मुष सो त्नावे
हे कोप मा घरकों जोरे काम क्रोध लोभ
कों मोरे॥ अपना घरु को कीजत्वा पाल्ने चु
मारी हाथि जोति सरूप [illegible] जत्ता परम्पा
गुर पिर स्पादि॥१२॥ स्काह सी [illegible]
काया मंदरि ह जि स्चाई: [illegible]
रे का छे: आतम [illegible] वे: मन [illegible] स बदु
ई कहि स्याजे [illegible]: दम वे [illegible] याउ॥
[illegible]: का [illegible] लेज ब [illegible] नी त [illegible] का द
मी [illegible] सी [illegible] नी॥ ६७॥ [illegible] स्पा सा हि [illegible]
मिल्या जिस [illegible] न रा वा [illegible]: पा नी ज [illegible]
[illegible] त त्ना सर वे गे हा: फ [illegible]
[illegible]

हिकहामो नहि कोइ ॥ ६८ ॥ जतरे हमारे
पंच असनानं: जत हमारे पानी: किवा
र हमारे नदी न लिए जे: तहा संत करे:
इसनानी ॥ गुर मुष का को पह जल पा
या: घटि परतीत ते जानी ॥ ६९ ॥ संतो
ष हमारे तिलक न लिए जे: ओर सा हमा
रे ग्रानं विचारु हमारे चंदन घसी आले
आतमा सालिगरामं: जतु रे हमारे धो
ती पहिरी ग्यान षडग संग्रामं: गुर ब
चने चरणी बिलु पी आ बिमा हमारे ध्या
नं: पे सी मन नी का काहरि मिल पा: सा
तो संत परधानं ॥ ७० ॥ गुर का सबद
ले आरती कीना: जत सत रूप सा धारं
आ सा मन न सादे इन्द्र मर घघारं: मन

कुलाल नयो सारं: निरगुण देही न
डा: कीना: कालाँ न तु विचारं: परम तत
व हम तत लाली जाने: वाटा चेतन रारी
गुरपरसाद साधकी संगति: तिनि निम
लिगा ठी पाई: तीरा नन टे: जौरे न अवधू
जागि निनजा सा जाई: पसाज नै सु
नौ रे सं तो काकार घागलि पाई ॥ ७१ ॥
का पाथर ती: सतुरे गोबरु: सतरे चौका
होई: पर उपकारी पाँच न हारी: दपाध
सार सोई: मन सा के जारी: जतसतरी
धी: दुपता दुरमत खोई विचा उपेरा मनु
ग्यानै रंजेवनु: संतो षु छितु पयोई ॥
हरिकी रति छिगतः तेरा नाम हे चुं लीत्रा
संतन जन्तु भिले खोई ॥ मसे चो के का फेंदे
उ बंध: विरु लोमटे कोई ॥ ७२ ॥

हिरका धुरे बासा सतुचउ ताउ: संतो बुप
छे वडा देहीका सिंगा ऊ: धीरज पटका
बिजारे पागि: सोहं सूत गुरू के वाक्य:
ग्यान ध्यान पाहुरी द्रिक ताई: यरूपर
तीन संतन ते पाई: जयो प्रकास जिस
लमई जोती त्रिगुण गलतन पहिरी धो
ती: सबुधि [illegible] जितने पकी छजा पाई: मार
गिच लोअत्र पिमारि गिनही जाई: का
नाक हेमु हि गुरपर स्पादि: एही वस्त्र
मुहि भ्रादि जुगादि ॥ ३॥ सिजा हमा
रां जिव सिकराणं: सति संजम सोव
नबाटी: जतु रे हमारे वाण वटी क्रात्ने: छू
ट बतस्क पाटी: चेतन राखबाट बुणी
त्रेले: साचि र चित्र न नरू धाई: निहे
हमारे लेफ तुलाई: तका सहगो निजा बो
: का फि पा अप सी सि जो विछाई: तहा